

उन भगवान् अहंत् सम्यक् सम्बुद्ध को नमस्कार है

समर्पण

रूपे सीले समाधिम्मि पञ्जाय च असादिसो ।
विमुक्तिया असम समो धम्म चक्कप्पवत्तने ॥३८॥
दस नाग बलं काये तुय्हंपाकधिकं बलं ।
इद्धिबलेन असमो धम्म चक्कप्पवत्तने ॥३९॥
एवं सब्बगुणोपेतं सब्बज्जं समुपागतं ।
महामुनीं कारुणिकं लोकनाथं नमस्सथ ॥४०॥
अभिवादनं थोमनं च वन्दनं च पसस्सनं ।
नमस्सनं च पूजं च सब्बं अरहसी तुवं ॥४१॥
ये केचि लोके वन्दनेया वन्दनं अरहन्ति ये ।
सब्बसेठो महावीर सादिसो तोन विज्जति ॥४२॥

(बुद्ध वंसोरतन चङ्क्रमण कण्ड पालि)

अर्थ—हे भगवान् ! आप रूप, शील, समाधि, प्रज्ञा और विमुक्ति में असदृश्य हैं, समता रहित हैं, धर्म चक्र प्रवर्तन में अतुलनीय हैं ॥३८॥

आपके शरीर में दस हाथियों का स्वाभाविक बल है। आप इद्धि बल और धर्म चक्र प्रवर्तन में अनुपम हैं ॥३९॥

ऐसे सब गुणों से युक्त, सर्वाङ्ग सम्पन्न, महामुनि, कारुणिक, लोकनाथ को नमस्कार करो ॥४०॥

अभिवादन, स्तुति, वन्दना, प्रशंसा, नमस्कार और पूजा आप सबके योग्य है ॥४१॥

जो कोई लोक में वन्दनीय है, जो वन्दना करने के योग्य है, हे महावीर ! उन सबमें आप श्रेष्ठ हैं। आपके सदृश दूसरा कोई इद्धिमान नहीं है ॥४२॥

सीलं समाधि पञ्जच विमुक्ति च अनुत्तरा ।

अनुबुद्धा इमेधम्मा गोतमेन यसस्सिना ॥

इति बुद्धो अभिज्जाय धम्म वखासि भिक्खुनं ।
दुक्खस्सन्तकरो सत्था चक्खुमा परिनिब्बुतोति ॥

(कथावस्थु, पालि-सुत्ताद्वरण कथा)

अर्थ—शील, समाधि, प्रज्ञा एवं विमुक्ति । ये अनुत्तर चार धर्म
यशस्वी भगवान् गौतम बुद्ध ने बताये हैं । इस प्रकार बुद्ध ज्ञान को
जानते हुए धम्म की व्याख्या करने वाले भिक्षु दुःख का अन्त करते
हुए चक्षुमान परि निवृत्त हो जाते हैं ।

अतीत बुद्धानं जिनानं देसितं ।

निकीलितं बुद्ध परम्परागतं ॥

पुब्बे निवासानुगताय बुद्धिया ।

पकासयी लोकहितं सदेव के ।

(बुद्ध वंशो, पालि-रतन चङ्क्रमण काण्ड)

अर्थ—अतीतकाल के सभी बुद्धों द्वारा उपदेश किए हुए बुद्ध
परम्परा को, जिसे अन्य बुद्धों ने कहा और प्रकट किया था ; पूर्व
निवसान स्मृति ज्ञान से देवता और मनुष्यों के हित के लिए इसे प्रका-
शित किया ।

न तं जितं साधु जितं यं जितं अवजोयति ।

तं खो जितं साधु जितं यं जितं न विजोयति ॥

(कुद्दाल जातक पालि सं. ७०)

अर्थ—वह जीत, जीत नहीं, जिस जीत की फिर हार हो । वही
जीत अच्छी जीत है, जिस जीत की फिर हार न हो ।

इस प्रकार अनन्त शक्ति सम्पन्न, महाकारुणिक, विश्व के एकमात्र
महामानव, बुद्धिवाद के प्रथम प्रवर्तक, निरपेक्ष दर्शन के द्रष्टा, तीनों
लोकों के प्रद्योत स्वरूप, समस्त प्राणि मात्र के हितैषी, प्रथम जगद-
गुरु, महा त्यागी, समस्त क्लेश, पाश, मोह को नष्ट करने वाले,
सम्यक् सम्बुद्ध भगवान् तथागत के चरणों में यह पुस्तकरूपी पुष्प
को समर्पण करता हूँ ।

—भिक्षु निर्गुणानन्द थेरो

भूमिका

इस छोटी-सी पुस्तक की भूमिका से रूप में कुछ लिखना जरूरी है। अतः मैं यथाशक्ति, यथाज्ञान कोशिश कर रहा हूँ। कुछ नास्तिक, बुद्धिवादी, जिन्हें कम्युनिस्ट या फासिस्ट अथवा नाजिस्ट कह सकते हैं। ये लोग पुराने चार्वाक (नास्तिकवाद) के प्रलाप द्वारा भौतिकवादी दृष्टिकोण से प्रभावित होकर दिल्ली और बम्बई में धर्म विरोधी बातें फैलाकर बौद्ध धर्म के आधारभूत स्तम्भ पुराने पालि-त्रिपिटक और भिक्षु संघ पर निरन्तर किये जाने वाले आक्रमणों से दुःखी होकर, सहन शक्ति की हद्द पार हो जाने के बाद उसका जवाब में उनके तमाम आरोपों के उत्तर देना, मैं एक धर्मवादी भिक्षु के नाते अपना कर्तव्य समझता हूँ। इसलिए "नास्तिक मुख-मुद्रण" नामक इस पुस्तक को लिखने के लिए बाध्य हुआ हूँ।

इसमें वर्णित सभी सवालों को मुझसे समय-समय पर पूछा गया था और अब भी पूछा जा रहा है और आगे भी पूछा जायगा। अगर इन सवालों का समुचित उत्तर नहीं दिया गया, तो आगे जाकर इन भौतिकवादी नास्तिकों से सद्धर्म के लिए घातक स्थिति उत्पन्न हो जाना अवश्यम्भावी है। अतः प्रश्नोत्तर के रूप में इस पुस्तक को लिपिबद्ध करने का प्रयत्न किया गया है।

यदि नास्तिकों के आक्रमणों से बचने का उपाय नहीं सोचा गया तो निकट भविष्य में ही बौद्ध धर्म के नये पौधे जो बाबासाहेब अम्बेडकर ने बड़ी श्रद्धा के साथ रोपे थे, उनका पुनः शून्य में लौट होना अवश्यम्भावी है। भगवान बुद्ध का पथ "मध्यम मार्ग" है। अर्थात् अस्तिक और नास्तिक दोनों का खण्डन है। यह धर्म अस्ति-नास्ति विलक्षण है। अतः अस्तिवाद और नास्तिवाद का जड़-मूल से निरसन है (खण्डन है)।

भगवान बुद्ध का प्रथम उपदेश "धम्म-चक्र प्रवर्तन सूत्र" के
(ग)

प्रारम्भ में ही इसी अस्तिक और नास्तिकों का खण्डन करके ही आरम्भ हुआ था। जैसे—

द्वे मे भिक्खवे ! अन्ता पव्वजितेन न सेवितब्बा (१) यो चायं कामेस्स काम सुखाल्लिकानु योगो गम्मो, पोथुज्जनिको, अनरियो, अनत्थ संहितो। (२) यो चायं अत्त किलमथानु योगो दुक्खो, अनरियो, अनत्थ संहितो। एते ते भिक्खवे ! उभो अन्ते अनुपगम्म मज्झिमा पटिपदा तथागतेन अभिसम्बुद्धा चक्खुकरणी, त्राणकरणी, उपसमाय, अभिञ्ञाय, सम्बोधाय, निब्बानाय संवत्तति।

(महावग्ग विनय पीटक-पालि)

अर्थ—भिक्षुओं ! इन दो अन्तों (चरम बातों) का प्रव्रजितों को सेवन नहीं करना चाहिए। (१) जो यह हीन, ग्राम्य, पृथक् जनों के योग्य, अनाय्य सेवित अनर्थों से युक्त, काम वासनाओं से कामसुख लिप्त होना है। (२) जो यह दुःखमय अनाय्य सेवित अनर्थों से युक्त आत्म पीड़न (कायक्लेश) में लगना है। भिक्षुओं ! इन दोनों अन्तों (चरम बातों) में न जाकर तथागत के मध्यम मार्ग को जाना है। जोकि आँख देने वाला, ज्ञान कराने वाला, शान्ति के लिए, अभिज्ञा के लिए, सम्बोधि (परम ज्ञान) के लिए, निर्वाण के लिए है।

मैंने “वैदिक मत का मुख-मर्दन” नामक पुस्तक प्रकाशित करके अस्तिकों की पोल खोलकर उसका खण्डन भली-भाँति कर दिया है। अब नास्तिकों की मूर्खताओं की पोल खोलने की बारी है। इसलिए भी ‘नास्तिक मुख-मुद्रण’ नाम से भौतिक वादियों के खण्डन के लिए इसे प्रकाशित कर रहा हूँ। भगवान बुद्ध ने शाश्वतवाद (अस्तिकवाद), उच्छेदवाद (नास्तिकवाद) का खण्डन किया था और अस्तिक-नास्तिक विलक्षण शून्यवाद या मध्यम मार्ग का प्रवर्तन किया था। यह पुस्तक बौद्ध विरोधियों को जवाब देने के लिए उस दिशा में बढ़ाया हुआ एक छोटा-सा कदम है। मैं नहीं जानता कि इस कार्य में मैं कितना सफल हुआ हूँ। यह निर्णय मान्य पाठकों को करना है।

बौद्ध धर्म जनता का धर्म है। किसी मिथ्या ईश्वर या उसके

दलालों का फैलाया हुआ जाल नहीं। अतः जनता स्वयं इसकी रक्षा करेंगी। उदाहरण—कोरिया और वियतनाम में साम्यवादी नास्तिकों का शासन है; फिर भी बौद्ध धर्म का वहाँ कुछ भी बिगाड़ा नहीं जा सका है, ऐसा सुनने में आया है।

फिर भारत के तुच्छ नास्तिकों से डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। तुच्छ नास्तिक इसलिए कह रहा हूँ कि यहाँ इस समय नास्तिकों का शासन नहीं है और अध्यात्मवादी भारत में नास्तिकों को सफलता नहीं मिल सकती, कारण यह देश धर्म प्राण है। धर्म को महत्व देने वाला देश है। चाहे कोई भी धर्म हो। उदाहरण—१९५७-५९ में दो वर्ष के भीतर केरल प्रदेश से साम्यवादी शासन समाप्त हो गया था, जबकि वहाँ उसकी बहुमत वाली निर्वाचित सरकार थी, फिर भी धर्म-विरोध के कारण ईसाई और हिन्दुओं के कोप का भाजन बनना पड़ा था; तत्काल नम्बूद्रिपाद सरकार को हटना पड़ा था।

जिस दिन हमारी बौद्ध जनता बौद्ध धर्म को पूरी तरह समझ लेगी, उस दिन इन नास्तिकों को वही लोग जवाब देंगे। जैसा थाईलैण्ड, बर्मा, जापान आदि बौद्ध देशों में हुआ था और हो रहा है। लेकिन इस समय भारत के मैदानी इलाकों में इन नये नाम मात्र के बौद्धों के पास इतना ज्ञान नहीं है कि—इन भौतिक बुद्धिवादी नास्तिकों को जवाब दे सकें। इसलिए बुद्धिवादी नास्तिकों के चंगुल से सीधे-सादे बौद्धधर्मियों को बचाने के लिए ही इस पुस्तक को लिखना पड़ा है।

नास्तिकों से हमारा मतलब उपर्युक्त तमाम धर्म विरोधी तत्वों से है। इनमें कुछ पूँजीपति संमथित अधिनायकतन्त्र वादी हैं और कुछ मजदूर संमथित अधिनायकतन्त्र वादी हैं। किन्तु हमारा किसी राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है। हमारा उद्देश्य केवल स्थविर-वादी बुद्ध धर्म में घुसे हुए और घुस रहे बुद्धिवादी नास्तिकों से मुकाबला है। हमारा कार्य विशुद्ध धार्मिक है।

पालि त्रिपिटक तथा उसके अट्ठकथा (व्याख्यानों) के अति-

रिक्त कोई भी शास्त्र या साहित्य हमारे लिए अन्तिम प्रमाण नहीं हो सकता है। इन नास्तिकों से हम पूछते हैं कि—कोई भी सच्चा मुसलमान अपनी कुरान की निन्दा कर सकता है? कभी नहीं और कोई भी सच्चा हिन्दू अपने वेदों का खण्डन कर सकता है? कभी नहीं। यही हाल ईसाईयों के बाइबल, यहूदियों के 'तौरात' पारसियों की 'अवेस्था' का है। अर्थात् कोई भी यहूदी, ईसाई, पारसी अपने-अपने पवित्र धर्म ग्रन्थों की आलोचना नहीं कर सकता।

इसी प्रकार कोई भी जैन अपने धर्म ग्रन्थ 'आगम' तथा सिख "गुरुग्रन्थ साहेब" की भी आलोचना नहीं कर सकता। फिर बौद्ध-धर्मी कहलाने वाले होकर वे अपने आधारभूत स्तम्भ "पालि त्रिपिटक" का विरोध या खण्डन कैसे कर सकते हैं? उनके इस बचकानेपन पर तरस आता है। अबौद्ध होकर ही वे ऐसा कर सक रहे हैं।

मैं इस पुस्तक को लिखने से बचना चाहता था, किन्तु उपासकों और भिक्षुओं के निरन्तर दबाव के कारण मुझे इस कार्य में लगना पड़ा है। अब परिस्थिति ऐसी हो गयी है कि इसे लिखना ही पड़ेगा; अन्यथा भारत में बौद्ध धर्म का विकृत रूप या अर्द्ध-बौद्धवाद का साम्राज्य फैलने में देर नहीं लगेगी। यह स्थिति धर्म के लिए बहुत ही हानिकारक है। आगे जाकर यह हास्यास्पद परिस्थिति उत्पन्न कर सकती है। इसलिए समय रहते इन कोरे बुद्धिवादी नास्तिकों का मुँह बंद कराना अत्यावश्यक ही नहीं, यह समय की माँग भी है; अन्यथा भारत में बौद्ध धर्म का शुद्ध रूप अत्यन्त खतरे में पड़ जायगा उसकी रक्षा के लिए इसे लिखना पड़ रहा है।

यह सत्य कड़वा अवश्य है, किन्तु अण्डी का तेल (Castor Oil) गले से उतर पाने में कठिनाई होने पर भी जुलाब से पेट साफ होने की इच्छा वाले व्यक्ति को पीना ही पड़ेगा; अन्यथा स्वास्थ्य ठीक नहीं हो सकता। इसी प्रकार यह कड़वा होने पर भी पवित्र एक धार्मिक उद्देश्य के लिए है। हमारा उद्देश्य पवित्र धर्माचरण द्वारा बौद्ध धर्म का पुनः प्रकाशन करना है।

बौद्ध धर्म का इतिहास ईश्वरवादी धर्मों से भिन्न है। बुद्ध दर्शन और उसकी व्यवहारिक शिक्षाओं को वे लोग आसानी से नहीं समझ सकते हैं। जो वासना, तृष्णा एवं लोभ में खोये हुए हैं और अन्धकार से घिरी वासना एवं विश्वविद्यालयों की दिखावटी डिग्रियों के घमण्ड से चूर हैं। अगर कोई अपनी खेती की रक्षा के लिए कांटेदार बाड़ लगाता है, तो वह किसी के पांव में लगने की भावना से नहीं, बल्कि स्वयं अपनी फसल की रक्षा के लिए ही किया जाता है। उसी तरह नास्तिकों और कोरे बुद्धिवादियों के मूर्ख प्रलापों से शुद्ध बौद्ध धर्म की रक्षा के लिए यह "नास्तिक मुख-मुद्रण" का प्रकाशन किया गया है।

हम डॉ. बी. आर. अम्बेडकर का बहुत सम्मान करते हैं; क्योंकि उन्होंने भारत के मैदानी इलाकों में मृतक बौद्ध धर्म का पुनर्जीवन किया है। वह महान् विद्वान् एवं अमर धर्म सेनानायक रहे हैं। वह धर्म विरोधी बातें कैसे कर सकते हैं? समझ में आना कठिन है; क्योंकि वह सामान्य व्यक्ति तो नहीं थे कि रास्ते से भटक जायें? उनके असामयिक निधन से उनके अनुयायियों में एक-भी उनके समान चरित्र एवं समाज के प्रति त्याग एवं निष्ठापूर्ण व्यक्ति न होने से राजनीतिक क्षेत्र में अनेक टुकड़ों में बँट गये हैं। सभी ने अपने को उनका सच्चा अनुयायी होने की घोषणा की है। हम पहिले बता चुके हैं कि इनके गन्दे खेल से हमारा कोई सम्बन्ध या दिलचस्पी नहीं है। शायद ये लोग धर्म में भी फूट डालने के प्रयत्न में हैं। हम ऐसा करने नहीं देंगे। धर्म में भ्रम उत्पन्न करके बौद्धों को गुमराह करना कदापि उचित नहीं है।

जहाँ तक पालि त्रिपिटक में संशोधन का सवाल है। यह अधिकार भारत क्या विश्व के किसी भी नेता या महापण्डित को प्राप्त नहीं है, चाहे वह सम्राट ही क्यों न हो। यह अधिकार कम-से-कम विश्व के स्थविरवादी २५०० विद्वान् भिक्षु एकत्रित होकर (महा-संगीति) के बाद ही निर्णय करेंगे कि त्रिपिटक में क्या रखना है, क्या नहीं रखना है। ऐसी ही एक बृहद छठवीं संगीति सरकार की

भोर से १९५४ से १९५६ तक बर्मा में हुई थी, जिसमें विश्व के स्थ-
विरवादी २५०० विद्वान भिक्षुओं ने भाग लिया था।

अगर यह नास्तिक बौद्ध धर्म को मुख्य धारा से हटकर अपना
अलग पंथ ही चलाना चाहते हैं, तो उनकी मर्जी है। ऐसा करने के
लिए वे स्वतन्त्र हैं, उसमें किसी को आपत्ति क्यों होगी। हमारा
निवेदन केवल इतना ही है कि वह महान बुद्ध धर्म अर्थात् पालि
त्रिपिटक का मजाक नहीं उड़ाये और भिक्षुओं को गाली देना बन्द
कर दें।

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर ने महती श्रद्धा के साथ इस धर्म को
ग्रहण किया था। उनके अनुयायियों का यह मुख्य कर्तव्य है कि वे
भी उसी प्रकार श्रद्धा के साथ इस पवित्र धर्म को ग्रहण करें। सभी
भिक्षु चोर या भ्रष्ट नहीं हैं, जैसा कि नास्तिकों का आरोप है और
एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि नास्तिकवाद या तर्कवाद मनुष्यों
की आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता। इसलिए
कहा गया है कि—“बालाश्रयो मत तर्क” अर्थात् तर्क बच्चों का
स्वभाव है।

आध्यात्मिक आवश्यकता मनुष्यत्व का अविच्छिन्न और जन्म
सिद्ध अधिकार है। कोई भी बुद्धिवादी नास्तिक कुतर्कों के बल से
इस अधिकार को दबा नहीं सकता। बुद्ध धर्म को अस्तित्वादी और
नास्तित्वादी दोनों मुखों से बचाना अत्यावश्यक है। इस दिशा में
यह पहिला कदम है। डॉ. बी. आर. अम्बेडकर धर्म विरोधी बात
नहीं कर सकते। उन पर नास्तिकवाद का आरोप नितान्त भ्रान्त
धारणा मात्र है। एक सच्चा बौद्ध कभी नास्तिक नहीं हो सकता।
इस पुस्तक में इसी विषय पर आगे जगह-जगह पर विस्तृत विचार
होगा।

ये नास्तिकों का दावा है कि नये भिक्षु खराब हैं, यह एक बात
है। साथ ही पूरे संघ को खराब बताना दूसरी बात है। मेरी दृढ़
धारणा है कि पूरा संघ खराब नहीं हो सकता। भगवान बुद्ध के
समय में भी अनेक ठग, लुच्चे, लम्पट, भ्रष्ट और पतित भिक्षु बने

थे। संघ का नियम (विनय) बनाने का यही कारण था कि संघ में जाना प्रकार के लोग शामिल हो रहे थे। उसकी पवित्रता कायम रखने के लिए ही विनय पिटक में "पातिमोकख" का विधान हुआ था, जो आज तक भिक्षुओं के २२७ उपशील के नाम से विख्यात है।

अच्छे भिक्षु की अपेक्षा अच्छे उपासक और उपासिका लोग ही कर सकते हैं। अयोग्य उपासक अयोग्य भिक्षुओं का निर्माण करेगा; अर्थात् योग्य भिक्षु के लिए योग्य समाज की अत्यन्त आवश्यकता है। इस दृष्टि से देखने में नये नाममात्र के बौद्ध कहलाने वाला समाज कहाँ तक योग्य है? इस पर विचार करें। अगर ये योग्य नहीं हैं, तो उसे क्या अधिकार है बुद्ध धर्म पर आक्रमण करने का।

भगवान बुद्ध के समय में दो बड़े उपासक मशहूर रहे थे, जो पूरे धर्म के जानकार थे। ये लोग आज के उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले के किराकत कस्बे में रहते थे। एक का नाम था "उग्र ग्रहपति" दूसरे का नाम था "चित्र गुहपति"। इनके पास ढोंगी भिक्षु लोग जाने में डरते थे; क्योंकि ये लोग बौद्ध धर्म और दर्शन के सम्पूर्ण जानकार थे और मूर्ख भिक्षुओं को फटकारते थे।

कुछ नास्तिक अर्द्ध-बौद्धों का कहना है कि उन्हें बुद्ध की जरूरत नहीं है; केवल अम्बेडकर की जरूरत है। उसके उत्तर में हमें यह कहने का अधिकार है कि हम बुद्ध के पुत्र हैं, अम्बेडकर के पुत्र नहीं। हमने जो चीवर धारण किया है, वह किसी अम्बेडकर का नहीं है। वह २५०० वर्ष पूर्व भगवान तथागत बुद्ध द्वारा स्थापित परम्परा से प्राप्त हुआ है और डॉ. बी. आर. अम्बेडकर बौद्ध धर्म में अधिकार के भाव से बर्ताव करता दिखाई दे रहा है, न कि समर्पण के भाव से जो एक उपासक के लिए अत्यावश्यक है। अतः बाबासाहेब के नाम पर धर्म विरोधी बकवास संसार के बौद्धधर्मी कभी बर्दाश्त नहीं करेंगे।

बुद्ध धर्म एक व्यवहारिक धर्म है। व्यवहार की शुरुआत सिद्धांतों से होती है। सिद्धान्त-जन्य व्यवहार पारम्पर्यवाही है। जिस देश में बुद्ध धर्म को नास्तिक धर्म माना गया था और हजारों वर्ष

पूर्व ही उसे धूल में मिला दिया था जैसे—भारत । ऐसे देश में झट-पट बौद्ध धर्म की व्यवहारिकता की अपेक्षा नहीं की जा सकती । उसके लिए दीर्घकाल तक स्वानुभव-निष्ठ प्रचार की आवश्यकता है । इस कार्य के लिए धर्मनिष्ठ बौद्ध जनता को आगे आने की जरूरत है । लेकिन इस कार्य में देरी होना निश्चित है ।

तथागत भगवान बुद्ध का वैज्ञानिक धर्मवाद विशुद्ध आध्यात्मिक अनुभवों और सिद्धान्तों पर आधारित है । उसमें भौतिक बुद्धिवादी या साम्यवादी विचारधारा की मिलावट नहीं की जा सकती । जैसे—“पारे” पर किसी प्रकार का रंग नहीं चढ़ता । उसी प्रकार बुद्ध शासन पर भी कोई रंग नहीं चढ़ सकता । यह परिशुद्ध अध्यात्मवाद प्रत्यात्मवेत्त्य है । अर्थात् अपनी आन्तरिक दृष्टि से जानने योग्य है; क्योंकि यह सांदृष्टिक है अर्थात् इस मार्ग के यात्री को दूसरे से सुनने या पढ़ने के बिना ही स्वयं पर विश्वास करके ये अमृत पद (निर्वाण) प्राप्त कर सकता है । यहाँ समस्त माया, मोह, तृष्णा, भय एवं सुख की इच्छाएँ जड़-मूल से शान्त हो जाती हैं । उसे विश्वास की जरूरत नहीं स्वयं देख सकते हैं । अतः सर्वोच्च धार्मिक बनने के लिए बुद्धिवाद या नास्तिकवाद को त्यागकर परम कारुणिक भगवान् सम्यक्सम्बुद्ध तथा उनके अलौकिक धर्म और आर्य धर्म संध (भिक्षु संध) पर पूर्ण विश्वास और श्रद्धा के साथ समर्पित हो जाना चाहिए ।

भगवान् तथागत बुद्ध ईश्वर और मनुष्य के बीच अच्छे सम्बन्ध कैसे हो सकते हैं ; इस बात पर कोई महत्व नहीं देते थे, बल्कि मनुष्य और मनुष्यों के बीच अच्छे सम्बन्ध कैसे स्थापित हों ; इस बात को महत्व देते थे । इसी प्रकार इस संसार की आदि कैसे हुई और अन्त कैसे होगा । इस बारे से भी चिन्तित नहीं थे, बल्कि भूत, भविष्य की चिन्ता को छोड़कर, वर्तमान को कैसे सुधारा जाय, इस बात पर जोर देते थे ।

सिंहली इतिहास महावंश में लिखा है कि सम्राट अशोक के राज्यकाल में भिक्षुओं को शुद्ध करने की प्रक्रिया शुरू हुई थी । अर्थात् अन्य सम्प्रदाय के तीर्थिक स्वयं केश मुण्डित कर काषाय

वस्त्र धारण करके बौद्ध धर्म में प्रविष्ट होने लगे और अपने को तथागत के श्रावक कहते हुए विचरने लगे। उनमें कोई सूर्य वन्दना में संलग्न था, तो कोई अग्नि की परिचर्या करते थे। ऐसा करते हुए भी वे अपने इन कृत्यों को बौद्ध धर्मानुकूल बताते थे। ऐसे समय में यह निर्णय करना कठिन हो गया था कि कौन-सी चर्या बुद्ध प्रतिपातित है और कौन-सी अन्य सम्प्रदाय की है। इसी काल में तृतीय संगीति बुलाकर ६०,००० अधर्मी भिक्षु वेषधारियों को सब से निकाल दिया था, जो बुद्ध शासन से बिल्कुल अनभिज्ञ थे।

सम्राट अशोक भिक्षुओं की बहुत सेवा और आदर करते थे। यह देखकर ब्राह्मणों के दलाल भी लालच में मुफ्त खाने के लिए सिर मुँडवाकर काषाय वस्त्र धारण करके संघ में घुसे थे। इस भ्रष्ट संघ को शुद्ध करने के लिए अशोक ने पहिले उन तमाम अङ्गो लगाने वाले भिक्षुओं को सैनिक भेजकर मौत के घाट उतारा। बाद में अर्हत् मोग्गली पुत्तत्तिस्स के नेतृत्व में पाटलीपुत्र के अशोकाराम में तृतीय संगीति की, जिसमें ६०,००० अधर्मी भिक्षुओं को सफेद वस्त्र पहनाकर संघ से निकालने के बाद बचे हुए १,००० विद्वान्, ज्ञानी, शील सम्पन्न, त्रिपिटकधारी, महान भिक्षुओं के साथ संगीति की। वर्तमान पालि त्रिपिटक का अन्तिम रूप इसी सभा में निर्णय किया हुआ था।

इसी प्रकार अगर परिस्थिति यही रही, तो निकट भविष्य में भारत के मैदानी इलाकों में भी यह नास्तिक एवं अधर्मी भिक्षुओं और अर्द्ध-बौद्धों द्वारा घटित होना निश्चित है। अतः समय रहते इसे रोकना होगा। यह प्रत्येक सच्चे बौद्धधर्मी का परम कर्तव्य है; क्योंकि इस समय ऐसे अनेक विकृत भिक्षु वस्त्रधारी हैं कि जिसमें कोई चोर है, कोई शराबी है, कोई व्यभिचारी है, कोई ठग है, कोई लुच्चा है। कोई बाल बढ़ाये हुए है, कोई भिक्षु है नहीं; भिक्षु कहकर चीवर बाँधकर घूम रहे हैं। कोई पुलिस की लाठी खा रहे हैं, कोई जेल में बन्द है। कोई सिनेमा-डान्स कराकर घूम रहे हैं। कोई पिस्तोल और चाकू धारण किये हुए है। कोई गाड़ी का ड्राइवर है।

कोई बिना टिकट गाडी में यात्रा कर रहे हैं, कोई चीवर के अतिरिक्त सफेद कपड़े भी रखे हुए है। ताकि समय-समय पर रूप बदल सकें, कोई चुनाव में उम्मीदवार है। कोई जमीन बेचने के लिए हरिजनों को बौद्ध-दीक्षा का प्रमाण-पत्र बेचकर धन कमा रहे हैं। कोई अंगहीन है। कोई कोढ़ी है। कोई अर्द्ध-विक्षिप्त है। कोई मूर्ख विपश्यनाचार्य बनकर टिकट लगाकर धन कमा रहे हैं। कोई विदेश जाने का बहाना बनाकर धन उग रहा है। बहुत से भिक्षु वेषधारी धन कमाकर परिवार का पोषण कर रहे हैं। कोई विवाह आदि संस्कारों में ५०० रुपये से १,००० रुपये तक रेट लगाये हुए हैं? कोई मुर्गी, मटन, मछली के बिना भोजन नहीं करते हैं। कोई श्रमण है, किन्तु दूसरों को श्रामणेर बना रहे हैं।

विडम्बना यह है कि यह सब अधर्मी, दुष्ट, पतित और पापी भिक्षु उस निर्दोष महान धर्म सेनानायक डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के अनुयायी बताकर उनके नाम को कलंकित कर रहे हैं। इसे कोई सच्चा धार्मिक कैसे सहन कर सकता है? समाज अज्ञानवश इनके चीवर को देखकर इनका पालन-पोषण कर रहा है।

अतः दुष्ट भिक्षुओं के प्रवाह को रोकने का कोई उपाय नहीं सोचा गया, तो निकट भविष्य में ही अशोककालीन परिस्थिति भारत में होना निश्चित है। इसके लिए प्रमुख भूमिका "अखिल भारतीय भिक्षु संघ" को निभानी होगी; क्योंकि वही इस समय भारत में एकमात्र भिक्षु संघ है। अगर इस सम्बन्ध में अखिल भारतीय भिक्षु संघ उदासीन रहा तो धर्म का विकृत होना कोई रोक नहीं सकता। आज के बौद्ध भिक्षुओं में अधिक भाग उन गिरे हुए हिन्दू साधुओं से भी गये-बीते हैं; कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होनी चाहिए। इसके लिए ४ उपायों का सुझाव है—

(१) श्रमण बनाने वाला भिक्षु को विद्वान, शीलवान, और धैर्यवान होना होगा।

(२) आजीवन श्रमण बनने वाले का परीक्षण करके दशशील कड़ाई से पालन कराने होंगे।

(३) उपसम्पदा प्राप्त करने से पहिले विनय की पूरी जानकारी प्राप्त करनी होगी ।

(४) उपसम्पन्न भिक्षुओं को “प्रतिमोक्ष” का अभ्यास अनिवार्य कर देना होगा ।

अगर इन सुझावों को अमल में लाया जाय, तो दुष्ट भिक्षुओं का प्रवाह रोक सकने में निश्चित रूप से मदद मिल सकती है । अन्त में मेरे प्रथम दीक्षा गुरु पूज्य डॉ. धर्मरक्षित महास्थविर एम.ए., पी. एच. डी., डी-लिट, त्रिपिटकाचार्य, प्रधान आचार्य महाबोधि कालेज, सारनाथ, वाराणसी । सम्पादक—धर्मदूत, मासिक पत्रिका के दिसम्बर १९६८ के एक लेख में उद्धरित करके यह भूमिका समाप्त की जाती है ।

“हाल ही में एक माह के अन्दर बम्बई में दो बौद्ध सम्मेलन हुए थे । पहिले सम्मेलन का निमन्त्रण मुझे मिला था । सुना था कि वह सम्मेलन कुछ आशा में सफल रहा । उसमें बहुत से भिक्षु सम्मिलित हुए थे । किन्तु दूसरा सम्मेलन तो केवल सम्मेलन ही रहा । उसमें नये-पुराने का भेद देखा गया । उसे बौद्ध सम्मेलन कहना उचित नहीं होगा । आप पूछ सकते हो कि क्यों ? बात यह है कि वह सम्मेलन ऐसे बौद्ध नामधारी लोगों का था, जिनका स्वर्ग-नरक और पुनर्जन्म में विश्वास नहीं है । फिर ऐसे लोग तो उपासक, उपासिका भी कहलाने के अधिकारी नहीं, जो “त्रिशरण” को ग्रहण नहीं करते हों, जिन्हें त्रिशरण स्वीकार ही नहीं है ।

मैंने उस सम्मेलन के संचालकों द्वारा प्रकाशित एक पुस्तक भी देखी है, जिसका अनुमोदन कतिपय भिक्षुओं के नाम छापकर करने का प्रयत्न किया गया है और घोषणा की गयी कि उनकी सर्व-सम्मति से ही पुस्तक का प्रकाशन हुआ है, किन्तु उन भिक्षुओं से पूछा तक नहीं गया है और न प्रकाशन के पूर्व उन्होंने उसे देखा ही था । गनीमत है कि “अपना नाम” उस २७ की संख्या के अन्तर्गत नहीं है, इतनी तो कृपा की है उन लोगों ने मुझ पर !

आजकल ऐसे ही कुछ बौद्ध कहलाने वाले लोग पैदा हो गए हैं,

जो लिखते तो हैं 'बौद्ध धर्म' और कहते हैं कि स्वर्ग, नरक, देवता, ध्यान, समाधि, समापत्ति । यह सब केवल मनुष्य की मानस सन्तति हैं । कायानुपश्चना आदि के वर्णित फल मिथ्या हैं । ऐसे बौद्ध कहने वाले अबौद्धों से सदा सतर्क रहने की आवश्यकता है ।

जानते हो ऐसे लोगों को भगवान् बुद्ध ने मज्झिम निकाय के अण्णकसुत्त (२-१-१०) में मिथ्या दृष्टि नास्तिक कहा है, जो सुकृत-दुष्कृत, कर्मों का फल, विपाक, लोक, परलोक (पुनर्जन्म) माता-पिता और ओपपातिक सत्त्व (देवता आदि) नहीं मानते तथा यह भी नहीं मानते कि लोक में सत्य को प्राप्त कर उन्हें बतलाया जा सकता है । वास्तव में वे ही नास्तिक मत वाले हैं । भगवान् ने उन्हें ही केश, कम्पल जैसा घृणित बतलाया है । वे ही उच्छेदवादी भी हैं ।

सबसे बढ़कर आश्चर्य तो मुझे इस पर हो रहा है कि जिन लोगों ने "सब दुःख निस्सरण निष्ठान सच्छिक्करणत्थाय इमं कासावं गहेत्वा पब्बाजेयमं भन्ते ! अनुकम्पं उपादाय" अर्थात् सारे दुःखों से निस्तार और निर्वाण के साक्षात्कार के लिए भन्ते ! अनुकम्पा करके इस काषाय को लेकर मुझे प्रव्रजित करें । तीन बार प्रार्थना करके प्रव्रज्या ली है, उनमें से भी कुछ ने समाधि के फलों से इनकार कर दिया है "हमारे पास इसका कोई प्रमाण नहीं है कि चारों स्मृति प्रस्थानों की भावना करने वाले को यह लाभ होता ही हो अधिक सम्भावना इसी बात की है कि नहीं होती" फिर तो ऐसों की प्रव्रज्या से क्या लाभ ; कहीं इस अबुद्धिवादी विचारधारा की देन ही तो उक्त पिछला सम्मेलन नहीं था ।

संसार के सभी देश और जाति एवं धर्मों में अच्छे और बुरे लोग होते हैं । यह प्रकृति का स्वभाव ही है । हम जिन नास्तिकों का खण्डन कर रहे हैं वह किसी व्यक्ति-विशेष या जाति-विशेष अथवा धर्म के लोगों का विरोध नहीं है । जो बौद्ध धर्म का शत्रु है और इस धर्म को मिटाना चाहता है, उनके प्रति भी हमारा मित्रता का भाव होता है ; क्योंकि हमारे शास्ता भगवान् सम्यक् सम्बुद्ध परम कारणिक हमारे लिए जो आदेश दे गये हैं, वह इस प्रकार है—

अत्तुपमाय सब्बेसं सत्तानं सुख कामतं ।
 पस्सित्वा कमतोमेत्तं सब्ब सत्ते सुभावये ॥
 सुखभिवेद्यं निददुक्खो अहंनिच्चं अहंक्खि ।
 हिता च मे सुखी होन्तु मज्झत्ता च थवेरिनो ॥

अर्थात्—अपने समान सब प्राणियों का सुख चाहने वाला देखकर
 क्रमशः सब प्राणियों पर मैत्री भावना करें। मैं सदा अपने समान
 सुखी और दुःख रहित होऊँ। मेरे हितैषी मध्यस्थ और वैरीजन भी
 सुखी हों। —भिक्षु निर्गुणानन्द थेरो

विषय-सूची

भूमिका	ग
१. बुद्ध का अर्थ होता है बुद्धि	१
२. बुद्ध को भगवान कहने से हिन्दू हो लायगा	४
३. हिन्दू और बौद्ध में क्या भेद है ?	७
४. पुराने बौद्ध गुमराह करते हैं	११
५. महाभिनिष्क्रमण के क्या कारण थे	१४
६. भिक्षुओं की आवश्यकता नहीं है	१८
७. वन्दना, पूजा, सूत्रपाठ सब व्यर्थ हैं	२५
८. शरणं गच्छामी नहीं अनुसरण करता हूँ, कहना चाहिए	२६
९. त्रिपिटक में ब्राह्मणों ने मिलावट की है, इसलिए सत्य नहीं है	३३
१०. केवल विज्ञान ही धर्म है, बाकी सब झूठ है	३८
११. केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को ही मानना चाहिए, अनुमान को नहीं	४४
१२. परलोक और पुनर्जन्म नहीं है	४८
१३. हमने सभी पुराने हिन्दू देवी-देवताओं को तिलाञ्जली दी है	५८
१४. बुद्ध मूर्ति तथा हिन्दू मूर्ति में क्या अन्तर है	६१
१५. महा परिनिर्वाण किसे प्राप्त होता है	६४
१६. खड़े बुद्ध को ही मानता हूँ, बैठे बुद्ध को नहीं	६८
१७. आप अम्बेडकर विरोधी हैं	७३
१८. कुछ भ्रान्तियों का निराकरण	८२
१९. अम्बेडकरवाद के विभिन्न रूप	८७
२०. बाबासाहेब के तीन गुरु थे	९९
२१. महिला-मण्डल और पंचशील का झण्डा	१०१
२२. धम्म चक्र प्रवर्तन	१०३

नोट—इस पुस्तक में कहीं 'धम्म' और कहीं 'धर्म' लिखा गया है। कृपया उसे यथास्थान पर समायोजित करके पढ़ें।

—लेखक

नास्तिक मुख-मुद्रण

प्रश्न (1) बुद्ध का अर्थ होता है बुद्धि !

उत्तर—नास्तिकों द्वारा बुद्ध का अर्थ बुद्धि कहकर निकल जाना अज्ञान और अगतिकता का परिचायक है ; क्योंकि हजारों मनुष्यों में कहीं दो-चार आदमी ही बुद्धिमान होते हैं, बाकी अधिकतर बुद्धिहीन एवं मन्दबुद्धि वाले ही होते हैं । यह मत संसार के सभी धर्मों के सम्बन्ध में सही है, उसी प्रकार बुद्ध धर्म में भी ।

अगर बुद्धि को ही बुद्ध माना जाय तो बुद्धिहीनों के लिए इस धर्म में कोई स्थान नहीं होगा; ऐसा कहना पड़ेगा । समाज में ९५% बुद्धिहीन ही हैं; फिर इन बुद्धिहीन या मन्द बुद्धि वालों के लिए बुद्ध धर्म में कोई जगह नहीं, ऐसा कहना मक्कार, मस्करी एवं मूर्खता है । यह बात इस ग्रन्थ में अन्यत्र भी अच्छी तरह समझाई जायगी । बुद्ध शब्द का अर्थ केवल बुद्धिमात्र नहीं है, बल्कि नास्तिकों को जानना चाहिए कि बुद्ध शब्द की परिभाषा पालि त्रिपिटक में इस प्रकार दी गई है जैसे—

(१) बुद्धोति केन द्वेन बुद्धो ? बुज्झता सच्चा नीति बुद्धो ।

अर्थ—किस कारण से बुद्ध कहा जाता है ? चार आर्य सत्यां (दुःख, समुदय, निरोध और निर्वाण) को समझता है, ठीक-ठीक जानता है, इसलिए बुद्ध है ।

(२) बोधेतापजायाति बुद्धो ।

अर्थ—प्रजा को समझाता है, बोध देता है, ज्ञान देता है, इसलिए बुद्ध है ।

(३) सब्बज्जुताय बुद्धो ।

अर्थ—सर्वज्ञ भाव को प्राप्त किया है, इसलिए बुद्ध है ।

(४) सब्बदस्सा विताय बुद्धो ।

अर्थ—सभी दिशाओं को जानता है और दर्शाता है, इसलिए बुद्ध है ।

(५) अभिज्ञेय्यताय बुद्धो ।

अर्थ—विशिष्ट ज्ञान को (ऋद्विविध, दिव्य श्रोत, परचित्त ज्ञान, पूर्व जन्म ज्ञान, दिव्य चक्षु, आस्त्रव पाप क्षय ज्ञान आदि) भली प्रकार जानता है, इस लिए बुद्ध है ।

(६) विकसिताय बुद्धो ।

अर्थ—विकास (प्रकाश) या पूर्णता को प्राप्त किया है, इसलिए बुद्ध है ।

(७) खीणासव सङ्घातेन बुद्धो ।

अर्थ—सभी आस्रवों (चित्तमलों) की राशि को नष्ट किये हुए होने से बुद्ध कहलाता है ।

(८) निरूपकिलेस 'सङ्घातेन' बुद्धो ।

अर्थ—उपक्लेश (१. विषम लोभ, २. द्रोह, ३. क्रोध, ४. पाखण्ड, ५. अमर्ष, ६. निष्ठुरता, ७. ईर्ष्या, ८. मत्सर, ९. ठगना, १०. शठता, ११. जड़ता, १२. हिंसा, १३. मान, १४. अतिमान, १५. मद, १६. प्रमादों) को भली प्रकार नष्ट किये होने से बुद्ध है ।

(९) एकन्त वीत रागोति बुद्धो ।

अर्थ—अकले ही एकान्त में रहकर सभी सांसारिक सुखों की इच्छाओं को नाश किये हुए होने से बुद्ध है ।

(१०) एकन्तवीत दोसोति बुद्धो ।

अर्थ—एकान्त में सभी मानवीय आन्तरिक और बाह्य दोषों को दूर किये होने से बुद्ध है ।

(११) एकन्तवीत मोहोति बुद्धो ।

अर्थ—एकान्त में सभी प्रकार के मोह (असत्य में सत्य की प्रतीति) को नष्ट किये हुए होने से बुद्ध है ।

(१२) एकन्त निकिकलेसोति बुद्धो ।

अर्थ—एकान्त में सभी चित्तमलों को नष्ट किये होने से बुद्ध है ।

(१३) एकाय मग्गंगतोति बुद्धोति ।

अर्थ—सबसे पहले परिशुद्ध मध्यम मार्ग को प्राप्त करके उसी रास्ते में संसार से मुक्त होने से बुद्ध है ।

(१४) एकोअनुत्तरं सम्मा सम्बोधि अभिसम्बद्धोति बुद्धो ।

अर्थ—सबसे पहले इस संसार में कोई भी प्राप्त न कर सकने वाले सम्यक सम्बोधि (सम्पूर्ण ज्ञान) को प्राप्त किये होने से बुद्ध है।

(१५) अबुद्धिविहतत्ता बुद्धि पटिलाभाति बुद्धो।

अर्थ—बुद्धिहीन तथा बुद्धि से मारे गये लोगों को बुद्धि लाभ देने के कारण बुद्ध कहे जाते हैं।

(१६) बुद्धेति नेतं नामं मातराकतं न पितरा कतं न भ्रातरा कतं न भगिनियाकतं न मित्ता मच्चोहिकतं न ज्ञातिसालोहितेहि कतं न समण ब्राह्मणेहिकतं न देवताहि कतं विमोक्खन्तिक मेतं बुद्धानं भगवन्तानं बोधिया मूले सह सब्बज्जुत जणस्स पटिलाभा सच्छिका पञ्चत्ति यदिदं बुद्धो। (चूल निद्देश पालि १७-२७)

अर्थ—बुद्ध नाम किसी माता, पिता, भाई, बहन, मित्र, आदमी, जाति वाले साला, सम्बन्धी, श्रमण, ब्राह्मण, देवता, का नाम नहीं हो सकता; यह पवित्र नाम विश्व में पहिली बार भगवान् तथागत परमकारुणिक को बोधि (पीपल) वृक्ष के नीचे सम्यक समाधि से सर्वज्ञता का ज्ञान और दर्शन (तत्त्व ज्ञान) का प्रतिलाभ साक्षात्कार (प्रत्यक्ष दर्शन) करके संसार के सभी लोगों के लिए प्रकाशित (उपदेश) किया है; इसलिए बुद्ध कहा जाता है।

अतः बुद्ध को बुद्धि कह कर लोगों को बहकाने वाले अज्ञानी, धूर्त, मूर्ख, पाखण्डी, अर्ध-बौद्धों से सावधान रहने की अत्यन्त आवश्यकता है। ऐसे मूर्खों के कारण ही धर्म परिवर्तन के ३५ वर्ष बाद भी २% भी धार्मिक नहीं बन सके, यह बड़ी दुर्भाग्य की बातें हैं। अर्थात् बुद्धिवाद की कोरी रट लगवाकर सीधे-सादे धर्मपरायण व्यक्तियों को इन्हीं पाखण्डियों ने गुमराह किया है; और करते जा रहे हैं।

बुद्धिवाद धर्म नहीं हो सकता। धर्म आचार है, अनुभव है, शील, समाधि और प्रज्ञा को कार्यरूप में प्रकट करना है। अर्थात् दुराचार, दमन और सदाचार, विकास का नाम धर्म है, वह कोरे बुद्धिवाद की रट से सम्भव नहीं है। वह तभी सम्भव हो सकेगा, जबकि सूखे बुद्धिवाद का सम्पूर्ण रूप से त्याग करके (जो मनुष्यों को धर्म पथ से भ्रष्ट कराकर उच्छृंगल बनाने वाले हैं) श्रद्धा, दान, शील, वीर्य,

शान्ति, ध्यान, प्रज्ञा आदि उत्तम धार्मिक अंग का अभ्यास करें।
अर्थात् जहाँ बुद्धिवाद समाप्त होता है; वहीं से धर्मवाद शुरू होता है, इसी का स्पष्टीकरण इस पुस्तक में आगे भी किया जायगा।

प्रश्न (2) बुद्ध को भगवान कहने से हिन्दू हो जायगा !

उत्तर—केवल हिन्दू ही क्यों हो जायगा ? अन्य क्यों नहीं, भगवान शब्द, ईसाई, जैन, मुस्लिम, यहूदी, पारसी, मानी, सिख आदि सभी लोग उपयोग करते हैं, तो फिर वे सब लोग हिन्दू क्यों नहीं हुआ ? जैन भी अपने २४ भगवान मानते हैं, वह हिन्दू क्यों नहीं हुए ? चीन में बुद्ध को (Chaines God) कहा जाता है वह हिन्दू क्यों नहीं हुए ? भगवान शब्द का अर्थ है—

भग रागो भग मोहो भग दोसो अनासवो ।

भगस्स पाप का धम्मा भगवातेन बुच्चति ॥

(विशुद्धि मार्ग)

अर्थ—जिनके राग (सुख की इच्छा) नष्ट हो गये हों, जिनके सभी दोष दूर हो गये हों, जिनके सभी प्रकार के मोह नष्ट हो गये हों, सभी चित्तमल नष्ट हो गये हों तथा सभी पापों से मुक्त हैं, ऐसे सम्यक सम्बुद्ध को भगवान कहा जाता है।

भगवति वचनंसठेठं भगवतिवचनं मुत्तमं ।

गुरुगारव युत्तो सो भगवातेन बुच्चति ॥

(विशुद्धि मार्ग १-१६०)

अर्थ—भगवान का वचन उत्तम है, श्रेष्ठ है, गौरवणीय के योग्य है और गौरव से युक्त है। इसलिए भगवान कहे जाते हैं और वन्दना में 'इतिपिसोभगवा' शब्द आया है। अतः भगवान कहने से हिन्दू हो जायगा, ऐसा भ्रम अज्ञानजन्य भ्रान्तिमात्र है। संस्कृत साहित्य में कहीं मैंने भगवान शब्द की परिभाषा इस प्रकार पढ़ी है—

आयुष्यश्च समग्रश्च धर्मश्च नियतिश्चियः ।

ज्ञान वैराग्ययो नित्यंषण्णांभग इतीरिताः ॥

अर्थ—ऐश्वर्य, ज्ञान, वैराग्य, पूर्ण आयु समग्र (पूर्णज्ञान) धर्म, नीति, यह सात लक्षण युक्त व्यक्ति के लिए भग शब्द प्रयोग किया जाता है और गुरु के अर्थ में भी भगवान शब्द का प्रयोग होता है।

सर्वोच्च अध्यात्मिक नेता के अर्थ में भी भगवान् बोला जाता है। पालि साहित्य में भी सैकड़ों बार सम्यक् सम्बुद्ध को भगवत् शब्द के प्रयोग द्वारा सम्बोधित किया गया है। जैसे—स्वाखा तो भगवता धम्मो (धम्म वन्दना) भगवन्तं अभिवादेत्वा (महामंगल सुत्त) आदि।

बुद्ध को भगवान् सृष्टिकर्ता के अर्थ में नहीं माना गया है, जैसा हिन्दू दृष्टिकोण है। यहाँ भगवान् शब्द का अर्थ इस प्रकार है—‘भग’ का अर्थ है भग्न, भस्म या समूल नष्ट और ‘वान्’ का अर्थ है तृष्णा, आसक्ति या बन्धन। इस प्रकार काम तृष्णा, भव तृष्णा, और विभव तृष्णा को भस्म करता है, वह भगवान् उपाधि का पात्र है। अतः भगवान् कहने से हिन्दू हो जायगा, यह आरोप सत्य नहीं हो सकता। किसी सिरफिरे नास्तिक के पागलपन के कारण हम हमारी परम्परा से प्राप्त संस्कार त्याग नहीं सकते।

हमारे धर्म में भगवान् शब्द से ईश्वर का बोध नहीं होता और न ईश्वर के दलालों का। भगवान् ज्ञान की चरम सीमा पर पहुँचे हुए व्यक्ति को कहते हैं। सम्यक् सम्बुद्ध भगवान् तथागत मानव मन की समस्त कमजोरियों और विकारों को ठीक-ठीक पहचानते थे, उन तमाम पापों से छुटकारा पाने का मार्ग भी उन्होंने मनुष्यों के लिए पहिली बार बताया है। इसलिए भी वह भगवान् कहे जाते हैं। अतः अर्ध-बौद्ध नास्तिकों का भ्रम समूल नष्ट हो जाना चाहिए कि भगवान् कहने से हिन्दू हो जायगा !

सच्चे धर्मवादियों का परम कर्तव्य है कि इन तमाम नास्तिकों को मुँह-तोड़ उत्तर दें तथा पवित्र बौद्ध धर्म की रक्षा करें। बिना धर्माचरण के शील-शुद्धि नहीं हो सकती। बिना शील-शुद्धि के समाधि प्राप्त नहीं हो सकती। समाधि का अर्थ है ‘चित्त की एकाग्रता’ और चित्त की एकाग्रता के बिना प्रज्ञा का उदय नहीं हो सकता। यह मुख्य तीन अंग जो बौद्ध धर्म के आधार हैं (शील, समाधि, प्रज्ञा) जिस व्यक्ति को यह तीनों प्राप्त होते हैं, उसके मन के सारे अज्ञान सूर्य के सामने अन्धकार के समान गायब हो जाते हैं। ऐसे धार्मिक व्यक्ति कभी ऐसा नहीं कहेंगे कि ‘भगवान् कहने से हिन्दू हो जायगा’ आदि।

बुद्ध मनुष्य और देवताओं से श्रेष्ठ हैं, उनका (बुद्ध का) मनुष्य लोक में आना एक अद्भुत घटना माना जाता है। बुद्ध एक अपूर्व और अलौकिक महामानव का नाम है, जो जीवन-मरण परम्परा से मुक्त है। भगवान् तथागत सर्वज्ञ और अखण्ड ध्यानी भी होते हैं। बुद्ध का इस संसार में आने का उद्देश्य ही समस्त मिथ्या दृष्टियों को परास्त करना है। भगवान् की तुलना संसार में आज तक किसी से भी नहीं की जा सकती।

इस प्रकार भगवान् तथागत बुद्ध का प्रभाव संसार व्यापी और युग-युगों तक चिर-स्थायी है तथा नित्य-नवीन है। उन पर शंका करना या तो अज्ञानवश अथवा शत्रुता के भाव से ही हो सकता है। हम इन दोनों मूखों को मुंह-तोड़ उत्तर देने के लिए धार्मिक होने के नाते बाध्य हैं। अतः सच्चे बौद्धों का यह परम कर्तव्य है कि वे ऐसी बेतुकी बातों का तिल सदृश खण्डन करें और भगवान् परम कारुणिक बुद्ध के धर्म का सच्चे भाव और अर्थ को समझावें। भगवान् सम्यक सम्बुद्ध के पास ३ प्रकार की आंखें होती थीं जैसे—

मस चकखुं दिब्बचकखुं पञ्जाचकखुं अनुत्तर।

एतानितोनि चकखुनि अकखासि पुरिसुत्तमो ॥

मस चकखुस्स उप्पादो, मग्गो दिब्बस्स चकखुनो।

यदाज्जाणं उदपादि : पञ्जाचकखुं अनुत्तरं ॥

(कथावत्थु पालि)

अर्थ—भगवान् में पुरुषोत्तम थे, उनके पास तीन प्रकार की आंखें थीं। जैसे—मांसचक्षु, दिव्य चक्षु और प्रज्ञा चक्षु। इस प्रकार वे तीन आंखों से समझाते थे। सबसे पहली चक्षु मांसचक्षु है, जो सबके लिए प्राप्त है और सारे संसार के प्राणी इस मांसचक्षु से संसार को देखते हैं। दूसरी दिव्यचक्षु है, इससे भगवान् आर्य अष्टांग मार्ग को देखते हैं और संसार के प्राणियों के दुःख निवृत्ति के लिए उसे उपदेश देते हैं तथा तीसरी प्रज्ञाचक्षु कहलाती है, जिससे सम्बुद्ध समस्त बोधिज्ञान प्राप्त करते हैं। यह प्रज्ञाचक्षु संसार में सबसे पहिले बुद्ध को ही प्राप्त हुई थी। इससे बढ़कर श्रेष्ठ ज्ञान फिर कभी इस दुनिया में नहीं हुआ और न ही कभी आगे हो सकता है।

निष्कर्ष यह है कि बुद्ध को भगवान कहने से हिन्दू हो जायगा आदि मूर्खतापूर्ण धारणा धर्म विरोधी हैं। इस भ्रम को हटाना ही पड़ेगा, अन्यथा भारत में बौद्ध धर्म की उन्नति किसी प्रकार भी संभव नहीं है। इस संसार में एकमात्र सच्चा भगवान् केवल बुद्ध ही हो सकता है, अन्य कोई भी भगवान कहकर सम्बोधित करने के लिए योग्य नहीं है।

और भी बुद्ध को भगवान क्यों कहा जाता है ? 'योसोभगवा सयम्भु अनाचरियको पुब्बे अननुस्सुतेसु सामं सच्चानि अभिसम्बुज्झी तत्थ च सब्बज्युतंपत्तो बलेसु च वसीभावं।' (चूल निदेस पालि १७-६७)

अर्थ—जो भगवान स्वयंभू है (अपने-आपमें उत्पन्न, उन्हें कोई नहीं उत्पन्न करता) और उनका कोई आचार्य या गुरु नहीं होता एवं पूर्वकाल में न सुने हुए या किसी के द्वारा उपदेश न किये हुए अपने-आप चार आर्य सत्य और अष्टांग मार्ग का उपदेश करते हैं। सब शत्रुओं पर विजय पाकर सर्वज्ञता को प्राप्त किया था तथा सभी प्रकार के बल एवं वशीभाव। बल पाँच हैं—श्रद्धाबल, समाधिबल, वीर्यबल, स्मृतिबल एवं प्रज्ञाबल। वशीभाव भी पाँच हैं—आवर्ज नवशी, समापन्नवशी, अधिष्ठानवशी, उत्थानवशी और प्रत्यवेक्षणावशी। इन सभी को प्राप्त हैं इसलिए उन्हें भगवान कहते हैं।

और भी बुद्ध को भगवान क्यों कहा जाता है—'मार चतुष्टय देवपुत्र क्लेश स्कन्ध मृत्यु लक्षणं भग्नवानिति कृत्वा नौरुक्तेन व्यायेन भगवान।' (अर्थे विनिश्चयसूत्र पृ. ७७)

अर्थ—देवता, मार, स्कन्ध, आदि को नष्ट करके (जीतकर) न्याय से निर्वाण को प्राप्त करते हैं। इसलिए भगवान कहा जाता है।

प्रश्न (3) हिन्दू और बौद्धों में क्या भेद है ?

उत्तर—बुद्धिवाद से प्रभावित बौद्ध धर्म से अनभिज्ञ लोग जिन्हें नये बौद्ध कहते हैं, जिनमें कुछ लोग २ शरण, बुद्ध व धर्म को मानते हैं, जैसे "त्रैलोक्य बुद्ध महासंघ" आदि। कुछ लोग ४ शरण लेते हैं। अर्थात् बुद्ध, धर्म, संघ, और भीम शरण गच्छामी कहते हैं। जैसे भारतीय बौद्ध महासभा—मीराताई गुट आदि और कुछ लोग

३ शरण लेने वाले भी होते हैं बुद्ध, धर्म और संघ । अक्सर यह सभा ऐसे प्रश्न किया करते हैं कि हिन्दू और बौद्धों में क्या भेद है ? हम इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयत्न करते हैं—यही लोग पाप, पुण्य, कर्म, कर्मफल, स्वर्ग-नरक, परलोक और पुनर्जन्म एवं देवताओं में विश्वास नहीं करने वाले होते हैं ।

हम पूछते हैं अगर यह सब नहीं है, तो उन्हें धर्म की क्या आवश्यकता है ? साम्यवादी धर्म से प्रभावित सूखे नास्तिकवादी जिसे हम मिथ्या दृष्टि कहते हैं । बुद्ध धर्म के अनुसार मिथ्या दृष्टि नरक पहुँचाने में सहायक है, उसे बौद्ध धर्म के अन्दर घुसेड़ने का प्रयत्न धर्म-ज्ञान के अभाव का लक्षण है । इसे देखकर सच्चे बौद्ध को दिल में ठेस एवं दुःख की भावना उत्पन्न होती है । इसी कारण मैं ऐसे बचकानेपन के सवालों का उत्तर देने का प्रयत्न करता हूँ ।

यदि बौद्ध धर्म का हिन्दू धर्म से भेद नहीं है, तो शंकराचार्य से लेकर आज तक के वैदिक हिन्दू आचार्यों द्वारा एक स्वर से बौद्ध धर्म का विरोध एवं इसे नष्ट क्यों किया ? संक्षेप में हिन्दू और बौद्ध का भेद इस प्रकार है ।

(१) हिन्दू—ईश्वर और उसके अवतार में विश्वास करते हैं ।

बौद्ध—इन दोनों को झूठ समझते हैं और उसका विरोध करते हैं ।

(२) हिन्दू—चार वेद को ईश्वर की वाणी मानते हैं ।

बौद्ध—इन वेदों को बेकार की चार पुस्तक एवं मनुष्यों की कल्पना मानते हैं ।

(३) हिन्दू—आत्मा के अस्तित्व और उसे अजर-अमर एवं ईश्वर का अंश मानते हैं ।

बौद्ध—इन तीनों बातों का खण्डन करते हैं, अर्थात् बौद्ध न आत्मा को मानते हैं और न ईश्वर या उसके अंश अथवा अजर-अमर को ।

(४) हिन्दू—यज्ञ (याग) में पशु हिंसा में विश्वास करते थे ।

बौद्ध—यज्ञ और पशु वध को अज्ञान, मूर्खता और पाप मानते हैं ।

(५) हिन्दू—अनेक प्रकार की जात-पात के घमण्ड (छोटे-बड़े) में विश्वास करते हैं ।
 बौद्ध—किसी भी प्रकार की जाति-भेद को नहीं मानते ।

(६) हिन्दू—हिन्दुओं का धर्म जंगली कबीलों की अन्ध रूढ़ियों पर आधारित है ।
 बौद्ध—बौद्धों का धर्म बुद्धि, विचार, स्वतन्त्रता, तर्क और समता का पोषक है ।

(७) हिन्दू—हिन्दु धर्म के आदि पुरुष नारायण ऐतिहासिक व्यक्ति न होकर एक काल्पनिक पात्र है । वास्तव में नारायण नामक कोई ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं हुआ है । यह गप्प है ।
 बौद्ध—बौद्ध धर्म के प्रथम उपदेष्टा भगवान् तथागत महाका-
 णिक गौतम बुद्ध एक ऐतिहासिक महापुरुष थे, उनका जन्म, बोधि,
 उपदेश और निर्वाण पूरी ऐतिहासिक घटना है; गप्प नहीं ।

(८) हिन्दू—मूर्तिपूजा किसी विशिष्ट वर्ग के जीवन का साधन मानते हैं ।
 बौद्ध—बौद्ध मूर्ति की आराधना में विश्वास नहीं करता, तथा
 बौद्धों के ये जीवन यापन का साधन भी नहीं है; जैसे ब्राह्मणों का
 जीवन-यापन मूर्तिपूजा से है ।

(९) हिन्दू—पाँच तत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) को मानते हैं ।
 बौद्ध—चार तत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु) को मानते हैं ।

(१०) हिन्दू—कोई आठ कोई छः कोई चार प्रमाणों को मानते हैं ।
 बौद्ध—सिर्फ दो प्रमाण (प्रत्यक्ष और अनुमान) को मानते हैं ।

(११) हिन्दू—गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा आदि तीर्थस्नान को अति महत्व देते हैं ।
 बौद्ध—ऐसे तीर्थस्नानों को क्षुद्र जलाशय, निरर्थक एवं भारी
 अज्ञान मानते हैं ।

(१२) हिन्दू—१६ संस्कार हैं ।

बौद्ध—केवल १० संस्कार हैं ।

(१३) हिन्दू—पशु पूजा में विश्वास करते हैं; जैसे—हाथी, बन्दर, घोड़ा, गाय, बैल, शेर, सिंह, सुअर, साँप, कुत्ता, चिड़िया आदि।

बौद्ध—इन तमाम पशु पूजा को मूर्खतापूर्ण जंगलीपन मानते हैं।

(१४) हिन्दू—गाय के मूत्र और मल को पवित्र समझते हैं और शुद्धि के लिए उसका सेवन करते हैं।

बौद्ध—इसका निषेध करते हैं तथा उससे घृणा करते हैं।

(१५) हिन्दू—हिन्दुओं के दीपावली आदि त्यौहारों पर जुआ खेलना भी धर्म का अंग है।

बौद्ध—इस प्रथा का धिक्कार करते हैं।

(१६) हिन्दू—गृहस्थों के वैदिक नियमानुसार चार वर्णों को शिखा (चोटी) रखना और तीन वर्णों को (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) जनेऊ धारण करना अनिवार्य है।

बौद्ध—इस प्रथा को मूर्खता और जानबूझकर सिर पर लिया उपद्रव समझते हैं।

(१७) हिन्दू—मोक्ष सर्वव्यापक और निरकार ईश्वर की दया पर होगा, जैसे—ईश्वरानुग्रहादेव पुंसामद्वैत वासना'।

(शंकराचार्य कृत 'विवेक' चूड़ामणी)

बौद्ध—बौद्धों का निर्वाण (मोक्ष) किसी की दया पर नहीं, स्वयं अपने प्रयत्न पर अश्रित है।

(१८) हिन्दू—धर्म का प्रथम कानून बनाने वाले स्मृतिकार मनु को सूर्यपुत्र मानते हैं तथा मनुस्मृति नामक सर्वश्रेष्ठ धर्म शास्त्र उन्हीं का लिखा हुआ बताते हैं।

बौद्ध—मनु को एक काल्पनिक पात्र मानते हैं; क्योंकि सूर्य एक जलता हुआ अग्नि का गोला है, उससे मनुष्य उत्पन्न नहीं हो सकता तथा मनुस्मृति शुंगकाल में आज से २१५० वर्ष पूर्व लिखवायी गई शरारतपूर्ण, निरर्थक ब्राह्मणों को खाने के लिए बनाये गये, वंचनात्मक, असत्य ग्रन्थ मानते हैं। विश्व के आज तक के अपराधियों में मनु को सर्वश्रेष्ठ अपराधी मानते हैं।

(१९) हिन्दू—सती प्रथा को धर्म का अंग मानते हुए मृत व्यक्ति

की पत्नी को उसके साथ ही चिता में जलाते हैं, उसके लिए व्यास स्मृति में विधान भी है। जैसे—

मृतानामग्निहोत्रेण दाहयेद विधिपूर्वकं दाहयेदविलम्बेन भार्या चात्रव्रचेतसा (व्यास स्मृति, २.५५)

बौद्ध—इस क्रूर और दुष्ट प्रथा को जंगली और बर्बर सभ्यता का प्रतीक मानते हैं तथा सभ्य समाज के लिए हास्यास्पद मानते हैं।

(२०) **हिन्दू**—मदिरापान भी कहीं-कहीं धार्मिक आचरण मानते हैं। इसके विस्तार के लिए मेरा लिखा हुआ “वैदिक मत का मुखमर्दन” देखे।

बौद्ध—शराब पीने की प्रथा का सख्त विरोध करते हैं।

(२१) **हिन्दू**—सूर्य और चन्द्र ग्रहणों के बाद स्नान करके शुद्ध होते हैं; क्योंकि ग्रहण में सूर्य और चन्द्र अशुद्ध हो गया था। साथ ही उसे देखने वाले और सुनने वाले जमीन के हिन्दू भी अशुद्ध हो जाते हैं; इसलिए शुद्धि के लिए वह स्नान करते हैं।

बौद्ध—इस प्रथा को **मुख और मक्कार** मानते हैं; क्योंकि बौद्ध ग्रहण से अशुद्ध होने का भ्रम नहीं रखता।

इस प्रकार खोजने पर और भी बहुत से भेद हिन्दू और बौद्धों में दिखाई देंगे। विस्तार भय से तत्काल रुकता हूँ।

प्रश्न (४) पुराने बौद्ध गुमराह करते हैं ?

उत्तर—बहुत से नास्तिकों ने मुझसे कई बार कहा कि—पुराने बौद्ध गुमराह करते हैं। इसका उत्तर यहाँ पर इस प्रकार दे रहा हूँ कि—वास्तव में नये बौद्ध गुमराह हो चुके हैं; उन्हें ठीक रास्ते में जाने का प्रयत्न अवश्य पुराने बौद्ध लोग करते हैं। जो लोग परम्परावादी बौद्धों को मूर्ति पूजक या अवतारवादी होने का आरोप लगाते हैं वह गलती पर हैं। एक बार यही आरोप एडवोकेट सुन्दरलाल सागर, मैनपुरी, उत्तर प्रदेश ने अपने सप्ताहिक “सिंहनाद” में छापा था; यह १९८२ के किसी अंक में मैंने पढ़ा था। वास्तव में सत्य यह है—प्राचीन बौद्धों ने अवतारवाद या मूर्ति पूजा को कोई

महत्त्व नहीं दिया है और न दे रहे हैं। हाँ भगवान बुद्ध के ५०० वर्ष बाद जन्मे महायानी और उनसे फटे मन्त्रयानी, तन्त्रयानी, वज्रयानी आदि नाम मात्र के बौद्ध अवश्य मूर्ति पूजा और अवतारवाद में विश्वास करते हैं। इसके लिए स्थाविरवादी प्राचीन बौद्ध उत्तरदायी नहीं हैं। जैसे—

सिंहली, बर्मी, थाई, कम्बोडियन, लाओस देशी तथा बंगाल बौद्ध मूर्तिपूजा या अवतारवाद में विश्वास करने वाले नहीं होते हैं। हाँ तिब्बती, भूटानी, लद्दाखी, सिक्किमी, हिमाचल प्रदेश, मंगोलियन, कोरियायी, वियतनामी, ताईवानी, चीनी और जापानी बौद्ध भी इस मूर्ति एवं अवतारवाद में विश्वास करने वाले होते हैं।

बौद्ध धर्म में मुख्य दो धारायें हैं। एक दक्षिण पन्थी और दूसरी उत्तर पन्थी हैं। एक अशोक संस्करण दूसरा कनिष्क संस्करण अशोक संस्करण को थेरवादी या हीनयानी और कनिष्क संस्करण को महायानी और उसके भेद अनेक तन्त्रयानी भी हैं। थेरवाद का त्रिपिटक (बुद्धोपदेश) पालि भाषा में आज से २३०० वर्ष सम्राट अशोक द्वारा अन्तिम रूप दिया हुआ है। दूसरा महायान २००० वर्ष पूर्व सम्राट कनिष्क द्वारा निश्चित किया हुआ संस्कृत भाषा में है। महायान से फटे तन्त्रयान के अपने लामापन्थी होते हैं। लामाओं की प्रधान देवी काली या तारा देवी है। बहुत ऊपर से बौद्ध दिखाई देने वाले वज्रयानी भीतर से बौद्ध धर्म कोई सम्बन्ध नहीं रखते हैं, ऐसे कितने ही पन्थ लामावादियों हैं। इसके लिए प्राचीन पालि भाषा को मानने वाले स्थाविरवादी बौद्ध उत्तरदायी नहीं हैं।

वास्तव में नये बौद्ध पुराने बौद्ध ऐसा कुछ भी नहीं है; क्योंकि मान लो कोई हिन्दू अगर मुस्लिम धर्म स्वीकार करता है, तो उसका कभी नया मुस्लिम कहा जा सकता है? या कोई हिन्दू ईसाई धर्म स्वीकार करता है, तो नया ईसाई कहकर सम्बोधित किया जा सकता है? नहीं सम्बोधित कर सकता है, तो बौद्धों को हो नये बौद्ध कहने का क्या मतलब हो सकता है? सभी नदियाँ समुद्र तक

अपने नाम या रूप का अस्तित्व रखती हैं। नदियों के समुद्र में मिलने के बाद समुद्र ही माना जायगा, नदी नहीं। ठीक इसी प्रकार नाना जातियाँ या वर्गों के लोगों का बौद्ध धर्म रूपी महासागर में लीन होने के बाद नये-पुराने आदि का भेद-भ्रम नहीं रह जाता।

अतः आज से २५३५ वर्ष पूर्व का बौद्ध धर्म नया नहीं हो सकता इसलिए नये बौद्ध पुराने बौद्ध आदि कल्पनाये भ्रान्तिमूलक हैं। इसका निराकरण होना चाहिए। अज्ञान के कारण इस प्रकार की भ्रान्तियाँ उत्पन्न होती हैं। यह ठीक नहीं है।

निष्कर्ष यह है कि भगवान तथागत द्वारा उपदिष्ट बौद्ध धर्म एक ही है। हाँ उसके अवान्तर भेद अनेक हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि ये नया हो गया है। अवान्तर भेद या यानभेद पीछे अनेक प्रकार की परिस्थितिमूलक उत्पन्न किये हुए हैं। अतः मूल बौद्ध धर्म (स्थविर) वाद से कोई सम्बन्ध नहीं रखता। इसलिए हमारे लिए यह सब प्रमाण नहीं है। हमारा प्रमाण केवल पालि त्रिपिटक और उसकी अट्ठकथा (व्याख्या) ही है।

अतः पालि त्रिपिटक और भिक्षुओं के खिलाफ राग अलापना बेकार है। हमें उसे समझने की कोशिश करनी चाहिए। एक सच्चे धार्मिक व्यक्ति के सामने इन बुद्धिवादियों का सूखा नास्तिकवाद या कोरा कुतर्क कुछ अर्थ नहीं रखता। धर्म बुद्धिवाद का विषय नहीं है। वह भाव, भक्ति, श्रद्धा, प्रधान है। यह बात मैं इस पुस्तक में अन्यत्र भी स्पष्ट कर रहा हूँ।

बुद्धिवाद के कोरे कुतर्कों द्वारा धर्म की गहन अनुभूति की उपलब्धि नहीं होगी। स्पष्ट है कि नास्तिकवाद का अलाप कोरी मूर्खता की निशानी है; जितनी जल्दी हमारे भाई लोग इस सत्य को जान लेंगे, उतनी ही जल्दी बुद्ध शासन भारत में सर्वत्र फैलाने में मदद ही नहीं, सुगमता भी हो सकती है। तब ही भारत को बुद्धमय बनाने का बाबासाहेब का नारा सत्य होगा।

बुद्धवाद का सही रूप थेरवादी बौद्ध धर्म है। इसी धर्म ने भगवान बुद्ध का सच्चा उपदेश पालि त्रिपिटक में सुरक्षित रखा है। उसके लिए संसार के सारे बौद्ध उनके इस कार्य के लिए ऋणी हैं;

जिन्होंने सम्राट अशोक के समय से ३०० ईसा पूर्व से आज तक इस महाग्रन्थ समूह को सम्हालकर रखा है। वह महान देश है श्रीलंका वहाँ से बर्मा, थाईलैण्ड, कम्बोडिया और लाओस में भी सुगमता से धर्म विजयी हुआ और आज तक उसी प्रकार अधुण है।

पुराने बौद्ध गुमराह करते हैं? यह कथन मस्करी, मूर्खता बकवास है। हमारा पूर्ण विश्वास है कि कोई भी सच्चा धार्मिक स्थितिवादी बौद्ध धर्म और पालि त्रिपिटक का विरोध नहीं कर सकता क्योंकि पालि त्रिपिटक संसार के सभी बौद्धों की आधार भूमि है। निष्कर्ष यह है कि नास्तिकवाद से पीड़ित सूखे वितण्डावादी त्याग कर सच्ची श्रद्धा एवं त्याग भावना द्वारा भारत को पुनः बुद्धमत बनाने की बाबासाहेब की कल्पना सफल करने की दिशा में प्रयत्न प्रत्येक बौद्ध को करना चाहिए। अर्थात् नये-पुराने का भ्रम बिलकुल त्यागकर संगठित रूप से बौद्ध प्रभाव को भारत में सर्वत्र फैलाने लिए तैयार होना चाहिए और छोटे-मोटे मान-अपमान की भावना जो इस मार्ग में बाधा है, बिलकुल त्याग देना चाहिए, यही हमारा नम्र विनंती है और यही बाबासाहेब की इच्छा थी।

प्रश्न (५) महाभि निष्क्रमण का कारण क्या था ?

उत्तर—कुछ नास्तिक महाभि निष्क्रमण (सिद्धार्थ का गृहत्याग) को राजनीतिक रंग देने का विफल प्रयत्न करते हैं और कहते कि उन्हें राजनीतिज्ञों द्वारा देश से निकाला गया था जैसे रोहिणी नदी के जल विवाद को लेकर दो गुटों में संघर्ष हुआ था। सिद्धा उनके इस युद्ध का विरोध करते थे, इसलिए उन पर देशद्रोह का आरोप लगाकर सन्यासी बनने के लिए बाध्य किया गया था; तब वह घर छोड़कर सन्यासी बने थे। यह पूर्ण बकवास और मूर्ख प्रलप है; क्योंकि त्रिपिटक पालि में इसका कोई उल्लेख नहीं है। हाँ पी के कवियों ने जैसे अश्वघोष आदि ने इसकी कल्पना की है।

अश्वघोष भगवान बुद्ध के ५०० वर्ष बाद पैदा हुआ था। इसलिए वह हमारा प्रमाण नहीं है क्योंकि वह महायानी था और पाली स्थान पर संस्कृत में कविता लिखी है। सम्भव है कि पालि भा

और थेरवाद का विरोध करने के लिए कवि ने इस प्रकार की कल्पना की हो !

पालि त्रिपिटक में रोहिणी नदी के पानी के लिए शाक्य और कोलियों में संघर्ष होने का विवरण सिद्धार्थ गौतम ने अपनी मौसी प्रजापति गौतमी के मुख से सुना था । वह ७ वर्ष की आयु में इतना जिक्र जरूर पालि में आया है । इसके अतिरिक्त कोई प्रमाण नहीं है । अतः सिद्धार्थ को राजद्रोह के कारण देश निकाला गया था आदि नास्तिकों के प्रलाप नितान्त भ्रान्ति कल्पना मात्र है ।

महाभि निष्क्रमण के बारे में महाकवि अश्व घोष का मत स्वीकार्य नहीं हो सकता : क्योंकि वे पालि त्रिपिटक के विरोधी महायानी संस्कृतज्ञ थे । वे थेरवाद से घृणा करने के पूर्वग्रह से पीड़ित थे । इसलिए भगवान बुद्ध के ६०० वर्ष बाद पैदा होने वाले अश्व-घोष ने पालि बौद्ध धर्म का विरोध करने के लिए उपर्युक्त दन्तकथा की कल्पना की है ।

इस संस्कृत कवि की कल्पना हमारे लिए मान्य नहीं है । और पालि धम्मवादियों के लिए उपर्युक्त दन्तकथा से कोई सम्बन्ध नहीं है ; क्योंकि यह मत झूठा है । यह स्थविरवाद को नीचा दिखाने के लिए महायानी अश्वघोष का एक षडयन्त्र मात्र है । जिससे अम्बेडकर ने ली है । अतः थेरवादी इस मत का विरोध करता है ।

नास्तिक पूछते हैं “क्या सिद्धार्थ गौतम ने २६ वर्ष तक रोग, जरा और मरण को नहीं देखा था ?”

इसका उत्तर है कि जरूर देखा था । जैसा हम तुम देखते हैं । क्या २६ वर्ष तक जरा, रोग, और मृत्यु को न देख सकता सम्भव है ? कभी नहीं । देखा था जैसा साधारण लोग देखते हैं ; किन्तु २६ वर्ष में गौर से देखा । ध्यान से देखा । देखने के दो अर्थ हैं एक मामूली लौकिक दृष्टि से देखना, दूसरा विशेष (दार्शनिक) दृष्टि से देखना । उदाहरण जैसे हम रास्ते जाते समय मरे हुए जानवर का शव या पाखाना आदि रास्ते में देखे, तो अनदेखा करके गुजर जाते हैं ; यह देखते हुए भी न देखना कहा जाता है । और कभी हम विशेष विचारों में मग्न रहते हैं, तब सामने से कोई गुजर जाता है

तो देखते हुए भी न देखने जैसा भाव पैदा होता है। इसे सही अर्थ में देखा हुआ नहीं कहा जा सकता है। देखा हुआ वह होता है जो उसके सामने ठहरकर उसे ध्यान से देखे तथा उसका विश्लेषण करें; तब देखा हुआ कहा जा सकता है। सिद्धार्थ गौतम ने २६ वर्ष के पूर्व तक साधारण सांसारिक व्यक्ति की दृष्टि से जरा, रोग और मरण को देखा था; किन्तु २६ वर्ष की आयु में इसे विश्लेषण करके ध्यान से देखा, अर्थात् दार्शनिक दृष्टि से देखा। उसे ही सही-सही अर्थ में देखना कहा जा सकता है। इस दुःख सागर को देखने के बाद उससे छूटने का उपाय सोचने लगे, उसी का परिणाम ही महाभि निष्क्रमण है।

इस प्रकार सिद्धार्थ गौतम के गृहत्याग का कारण तीन निमित्त रोग-जरा-मृत्यु को देखना ही था। इसके अलावा उन्हें देशद्रोह बनाकर राज्य से निर्वासित करने की कहानी को मनगढ़न्त, बकवास मानने में कोई बाधा नहीं होनी चाहिए। जो लोग बुद्ध भगवान् के देशद्रोही की संज्ञा देने में शर्म अनुभव नहीं करते हैं; ऐसे खोजी लोग पहाड़ खोदकर चूहा निकालने में माहिर हैं; किन्तु ऐसे लोगों ने इस तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं दिया कि संसार के सर्वश्रेष्ठ आराध्य देव जिनकी २०० करोड़ जनसंख्या संसार भर में अब भी व्याप्त है, उन सब की श्रद्धा और भाक्ति-भावना पर क्रूर मजाक और आक्रमण किया गया है। इन लोगों ने इस बात का जरा भी खयाल नहीं रखा कि अरबों मनुष्यों के हृदयाधार को लांछित करने का हिम्मत की है, वह भी बचकानेपन के तर्कों द्वारा। यह बहुत बड़ा परम्परा के विपरीत अधर्म कार्य है जल्दी-से-जल्दी इस अज्ञानपूर्ण प्रलापों को समाप्त हो जाना चाहिए। हम इन सभी कुतर्कियों से पूछते हैं कि—

(१) महाभि निष्क्रमण के बारे में इन नास्तिकों ने जो खोज की है वह स्तुत्य है, किन्तु सवाल यह उठता है कि—क्या यह सूझ या खोज आज से २५०० वर्ष पूर्व से आज तक संसार के किसी भी महास्थविर या अपर (दूसरा) बुद्ध कहलाने वाले नागार्जुन और बुद्ध घोष को भी नहीं सूझी थी? या बड़े महाउपासक, पाण्डित

बड़े-बड़े सम्राटों को भी समझ में नहीं आयी थी? जो यह नये खोजियों ने ढूँढ़ निकाले, धन्य हैं यह खोज करने वाले।

(२) क्या यह खोज करने वालों ने प्राचीन बौद्ध परम्परा को इस सम्बन्ध में मूर्ख सिद्ध नहीं किया है?

(३) ये लोग विश्व के ४० देशों में बसे २०० करोड़ से अधिक बौद्ध जनता जो संसार की सर्वाधिक जनसंख्या है, उसके दिल को ठेस पहुँचाने वाली बातें फेलाकर बौद्धधर्मियों का दिल नहीं तोड़ा है?

(४) क्या उन्हें विश्व भर के बौद्धधर्मियों के विश्वास एवं मान्यताओं को नकारने का अधिकार है?

(५) अगर है, तो उन्हें यह अधिकार किसने दिया है?

(६) इन खोज करने वालों ने बौद्धधर्मियों के विश्वास पर आक्रमण नहीं किया?

(७) यह मान्यता केवल भारत के चन्द नये बौद्धों को छोड़कर बाकी संसार के किसी भी सच्चे बौद्धधर्मों के गले नहीं उतर सकती।

(८) इसलिए कोई भी इसे मानने को तैयार नहीं है, उलटे इस मन्तव्य की खिल्ली अवश्य उड़ायेंगे।

(९) इन नये खोजियों ने बौद्धों के अबोध मन पर पड़ने वाली धार्मिक मान्यता और प्रभाव को पहचाना है?

(१०) इससे विश्व के सबसे बड़े आराध्य देव को सामान्य व्यक्ति बनाने में अवश्य बल मिलेगा। किन्तु सच्चे बौद्ध इसे सहन नहीं करेंगे।

(११) विश्व की समस्त घटनायें पहिले दन्तकथा, बाद में वही सामाजिक रूढ़ी, तत्पश्चात् इतिहास का रूप धारण करती है, इस पर सोचा है? कितना भी सत्य हो, किन्तु परम्परा और लोकमत के आचार के विरुद्ध है, तो उसे मानने के लिए सामान्य जनता कभी तैयार नहीं होगी। क्या इन खोजियों ने इस पर ध्यान दिया है?

(१२) अतः भगवान् तथागत बुद्ध का महाभिनिष्क्रमण देश द्रोह के लिए सजा के रूप में हुआ था? कहना हास्यास्पद और मनगढ़न्त

कहानी है, सत्य नहीं है; झूठ है; इसलिए इस विचार को हटा देना चाहिए।

प्रश्न (६) भिक्षुओं की आवश्यकता नहीं है।

उत्तर—कतिपय नास्तिकों का कहना है कि भिक्षुओं की आवश्यकता नहीं है। जैसे त्रैलोक्य बौद्ध संघ, भारतीय बौद्ध महासभा और भी छिपे तौर पर कुछ अन्य संस्थाएँ भी हो सकती हैं। इस सम्बन्ध में दिल्ली के एक मासिक पत्र “संघ प्रकाश” के जुलाई १९८० के अंक में प्रकाशित लेख यहाँ प्रस्तुत है—

“बौद्ध धर्मोपदेष्टाओं का संघ” बनाने का परिचय नया संघ बनाने का मतलब होगा—भिक्षु संघ की समाप्ति। सर्वप्रथम हमें यह जानना जरूरी होगा कि क्या एक वर्ग के चन्द लोगों को यह अधिकार है कि बौद्ध धर्म के उपदेष्टाओं का निर्माण करें। बौद्ध धर्म में प्रत्येक वर्ग के लोग आते हैं, तो क्या अन्य वर्ग वालों को इस नये संघ में स्थान मिलेगा? या यह नया संघ उनके गले उतरेगा? हिन्दू धर्म के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा ईसाई-इस्लाम के अनुयायी भी बौद्ध बनते रहे हैं और बनते जा रहे हैं, तो क्या आप अपनी बात उन पर लाद सकते हैं?

भिक्षु का स्थान नये संघ में क्या होगा? हमें देखना है कि जोशी जी (दि बुद्धिस्ट सोसायटी आफ इण्डिया, दिल्ली स्टेट के महामन्त्री) की भावनानुसार अम्बेडकरवादियों का एक वर्ग है, जो शोषित और दलित कहा जाता है?

त्रिपिटक में आया है कि बौद्ध धर्म समुद्र के समान है। जिस प्रकार अनेक नदियाँ, नाले व झीलें समुद्र में आकर मिल जाती हैं और अपना नाम-रूप खो देती हैं। ठीक इसी प्रकार बौद्ध धर्म में हर वर्ग व हर जाति के लोग आते हैं, वे सब अपने नाम, कुल, गोत्र को त्यागकर केवल बौद्ध ही रह जाते हैं।

आज एक वर्ग-विशेष जिसे अम्बेडकरवादी कहते हैं, बौद्ध बनने की चेष्टा कर रहा है। लेकिन अम्बेडकरवादियों को बौद्ध बनने के पहिले ही यह जान लेना जरूरी होगा कि वे भी बौद्ध धर्म के दीक्षा

ग्रहण करने के पश्चात् केवल बौद्ध ही रह जायेंगे। अम्बेडकर वादी नहीं। डॉ० अम्बेडकर का बौद्ध धर्म में दीक्षित होने के बाद कोई स्वतन्त्रवाद नहीं रह गया है, बल्कि वे बौद्ध रह गये हैं तथा उन्होंने भी स्वयं यह माना है। बौद्ध धर्म की दीक्षा लेते समय उन्होंने उद्घोषणा की थी—

“नत्थि में सरणं अञ्जं संघो में सरणं वरं ऐतेन सच्च वज्जेन होतुमेजय मङ्गलं” और संघ ने उन्हें शरण दी तथा बौद्ध बने।

बाबासाहेब जीवन भर शोषितों व दलितों के लिए संघर्षरत रहे, उन्हें जगाया। परन्तु तथाकथित अम्बेडकरवादी उन्हीं बाबासाहेब का अवमूल्यन करते हुए संघ को अपमानित करने के षडयन्त्र में उनके नाम का दुरुपयोग कर रहे हैं। ऐसे लोग न तो बाबासाहेब के अनयायी हो सकते हैं और न ही बौद्ध, वे तो अबौद्ध ही हो सकते हैं।

बाबासाहेब का साईन बोर्ड लगाकर समाज को धोखा देकर ठगने वाले अपने को बौद्ध कहकर हरिजनों के आरक्षण और अन्य सुविधायें हड़पने वालों का बाबासाहेब की जयन्ती समारोह (भोला नाथ नगर, शाहदरा, दिल्ली) में श्री मोहनलाल पिपल ने ललकारा था और तथाकथित “बौद्ध महासभा” के कार्यकर्ताओं से पूछा था कि तुममें से कौन-सा कार्यकर्ता घोषित या दीक्षित बौद्ध है, तो एक भी कार्यकर्ता से जजाब देते नहीं बना।

इससे सिद्ध होता है ये ऐसे लोग बौद्ध नहीं हैं। फिर किस अधिकार से वे उस संघ को अपमानित व लांछित कर रहे हैं, जिस संघ ने बाबासाहेब को दीक्षा देकर शरण दी! बौद्धों के लिए नियम बनाने की बात तो और भी दूर की बात है।

बौद्ध धर्म में विघटन करने वालों की एकमात्र चाल स्पष्ट हुई है कि—अम्बेडकरवाद की आड़ में बौद्धों पर नास्तिकवाद या ब्राह्मणवाद लादना। लेकिन आज भी करोड़ों बौद्ध लोगों का एक संघ है और विश्व के बौद्ध अपने भिक्षुओं का अपमान सहन नहीं करेंगे।

मानव हृदय में अहिंसा, सत्य और शील का बीजारोपण करके समाधि और भावना से उसमें निर्वाण के अमृतफल को प्रकट करने वाला भिक्षु ही तो है। भिक्षुओं का अपमान करने वालों को जरा विवेक से काम करना चाहिए। उनका इस प्रकार "अम्बेडकरवाद" जाति विशेष का धर्म मानकर बाबासाहेब को पीछे घसीट लेना। अम्बेडकरवादी लोग गांधी के चाक पर बनी हरिजन जाति रूपी सर्पनी की कुण्डली से बाहर नहीं निकल पायेंगे। यह सर्पण उन्हें निगलती ही जायेगी। बौद्ध धम्म उपदेष्टाओं के नये संघ से इसके निर्माताओं को ही हानि होगी। जैसी ऊल-जलूल बातें नियम रूप में तय की गई हैं। उससे यह सिद्ध हो जायगा।

सदगृहस्थी को आदर्श भिक्षु का सदैव सम्मान करना चाहिए उसका अपमान न करें। बौद्ध धर्म व संघ में पूर्ण विश्वास व श्रद्धा रखनी होगी। पंचशील का ग्रहण और पालन पूर्णिमा, अमावस्या और उपोस्थ के दिनों में अष्टशील का ग्रहण करना चाहिए। बौद्ध साहित्य का अध्ययन समय-समय पर बौद्ध मन्दिरों और विहारों में जाकर प्रवचन सुनना चाहिए और उस पर मनन और चिन्तन करना चाहिए। भिक्षुओं को भोजन दान व अल्पाहार दान देना चाहिए। बौद्ध तीर्थों की यात्रा व बौद्ध संस्कृति तथा संस्कारों को ग्रहण करके उनका पालन करना चाहिए। भिक्षु की अनुपस्थिति में आचार्य संस्कारों से कराये, किन्तु प्राप्त धन भिक्षु को समर्पित करें।

भिक्षुओं को दिया गया दान फलदायक व धर्म वृद्धि में सहायक होता है। चीवर जीर्ण होने पर नये चीवर का दान देना चाहिए। अर्थात् सभी प्रकार से भिक्षु की आवश्यकता पूर्ति को ध्यान देना चाहिए, ताकि धर्म प्रचार में उसकी शक्ति वृद्धि हो सके। इसके विपरीत अपने स्वार्थों के साधन के लोभ में पाखण्डी दलगत नेताओं व लोगों के कुप्रचार से प्रभावित होकर यदि भिक्षु को प्रताड़ित किया गया, तो यह बौद्ध धर्म को दुत्कारना होगा। तथागत बुद्ध के आदर्शों की धज्जियाँ उड़ानी मानी जायगी। जबकि बौद्ध के कट्टर शत्रु शंकराचार्य ने अपने ग्रन्थों में बुद्ध की वन्दना की है।

स्वयं बुद्ध के अनुयायी होने के दम भरने वालों द्वारा प्रचारित कार्य भार स्वयं उन्हें ही संकलित करता है व उनके औघेपन का प्रमाण है। सम्राट अशोक रास्ते में मिलने पर हाथों से नीचे उतरकर भिक्षु को प्रमाण करते थे, तो अपने-आपको बौद्ध कहलाने वालों का क्या कर्तव्य बनता है ? (आचार्य सुशील कुमार बौद्ध, दिल्ली)

और एक नास्तिक (श्रीधर जाधव (महामन्त्री भारतीय बौद्ध महासभा, बम्बई) ने दिनांक ६-४-१९८८ को मुझे लिखे गये एक पत्र में इस प्रकार कहा है—

आज भारत भूमि पर सन् १९५६ के बाद जो लोग बौद्ध धर्म को अपनाते हैं, वह केवल बोधिसत्व डॉ० बाबासाहेब अम्बेडकर के विचारों से और मार्गदर्शन पर आधारित है। वह कोई बौद्ध भिक्षु के विचारों से नहीं।

मेरा उत्तर—भगवान् सम्यक सम्बुद्ध द्वारा उपदिष्ट पालि त्रिपिटक जिसके आधार पर संसार के समस्त बौद्धवादियों ने देश लाभ उठाया है और उठा रहे हैं। सभी हमारे पवित्र एवं विद्वान् महास्थविर भिक्षुओं द्वारा २५०० वर्ष पूर्व संचित किये हुए था, उनमें से बाबासाहेब सहित सभी लोगों ने उधार लेकर लोगों में प्रचार किया है। अतः पालि त्रिपिटक जिस पर हम निर्भर हैं किसी अम्बेडकर ने नहीं लिखा है, बल्कि भिक्षुओं ने लिखा है। सभी सूत्र और गाथायें भिक्षुओं ने ही रची हैं, जिसको यह नये बौद्ध कहलाने वाले नास्तिक भी उपयोग करते हैं। इस बात को सोचकर उन्हें शर्म आनी चाहिए तथा पालि त्रिपिटक और भिक्षुओं का भजाक उड़ाना छोड़ देना चाहिए। यही उनके विवेक, बुद्धि का परिचायक होगा। तभी वे सही अर्थ में बौद्धधर्मी होने का गर्व कर सकता है, अन्यथा नहीं।

आगे उसी पत्र में उसने लिखा है कि—“कोई भी पीत वस्त्र धारण करता है, तो हमें उसकी शरण में जाना चाहिए। ऐसा नहीं है, तो उस पीत वस्त्र की पवित्रता को सामने रखना बहुत जरूरी

है, उसके अन्दर किसी भी तरह की मिलावट न हो, इस बात पर पूरा ध्यान दिया जाना चाहिए”

हमारा उत्तर—श्रीमान जाधव के विचार सुन्दर हैं, हम इससे सहमत हैं। परन्तु पीत वस्त्रधारी पवित्र और शुद्ध तभी होगा, जब श्वेत वस्त्रधारी उपासकों में भी पूरी तरह से शुद्धता होगी। सफेद कपड़े वाले उपासक—भ्रष्ट, शराबी, जुआरी, चोर, मूर्ख, लम्पट, लुच्चे, नास्तिक और अधार्मिकता से पूर्ण रूप से मुक्त हों, तभी वे भिक्षुओं के चरित्र एवं पवित्र की आशा कर सकते हैं अन्यथा नहीं भिक्षु उपासकों में से आते हैं। भिक्षु कहीं आसमान से नहीं टपकते। भिक्षु की शुद्धि और योग्यताएँ उस समाज की शुद्धि और योग्यता पर आधारित हैं, जिस समाज से भिक्षु आते हैं। अतः भिक्षु भ्रष्ट और पतित है, तो उसका उत्तरदायी समाज है; क्योंकि समाज ही ऐसे भिक्षुओं की रक्षा और पालन-पोषण करता है।

अच्छे नेता को चुनने के लिए अच्छी जनता की जरूरत होती है। अगर यह बात सही है, तो ठीक इसी प्रकार योग्य भिक्षुओं के निर्माण के लिए योग्य उपासक एवं उपासिकाओं की आवश्यकत है। अयोग्य समाज अयोग्य भिक्षुओं का निर्माण करेगा। यह बात कोई भी आलोचक या नास्तिक कभी न भूले। इस विषय का स्पष्टीकरण मैं भूमिका में भी किया है।

इस सम्बन्ध में अधिक विस्तार के लिए एक मासिक पत्रिका “प्रज्ञा विजय” बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश के १९८७ मार्च के अंक में से यह लेख प्रस्तुत है—

(१) यूँ तो हम जानते हैं कि धर्म के नये सिरे से प्रचार-प्रसार हेतु भिक्षुओं और उपासकों का परस्पर तालमेल होना जरूरी है लेकिन यह सब कुछ रत्नत्रयी के प्रतिदायक को श्रद्धा, आस्था, भक्ति, दानशीलता एवं धर्मनिष्ठा का ही परिचायक है, न कि अहं सान का अहसानपन और यदि उपर्युक्त गुणों से कोई मनुष्य परे है तो वह बौद्ध धर्मावलम्बी नहीं कहा जा सकता।

(२) भारतीय बौद्ध महासभा का गठन बोधिसत्त्व बाबासाहेब

अम्बेडकर ने इसलिए किया था कि बहुजन समाज दीनता एवं हीनता से ऊपर उठकर पंचशील के आधीन धम्मध्वज के नीचे आए और निष्ठापूर्वक संगठित होकर एक आदर्श समाज बने। इस संस्था का सदस्य पक्का बौद्ध हो (दुरंगीचाल से दूर हो) ताकि दूसरों को भी प्रेरणा मिले।

(३) खेद के साथ कहना पड़ता है कि भारतीय बौद्ध महा-सभा से सम्बन्धित व्यक्ति अधिकांश अबौद्ध हैं, पर दूसरों को बौद्ध बनाने का ढिंढोरा पीटते हैं। वे परम्परावादी बुद्ध शासन की अवज्ञा करते हुए स्वयं पण्डा-पुरोहित बनने का मौका ढूँढते हैं और मिथ्या-भिमान रखते हैं, जो बौद्ध धर्म के लिए षडयन्त्र और बाबासाहेब के प्रति पूर्ण विश्वासघात है।

(४) बुद्ध धर्म एक श्रमण संस्कृति होने के नाते भगवान बुद्ध की अनपस्थिति में भिक्षु संघ ही उनका और उनके धर्म का प्रतिनिधि और प्रतीक है। इस सत्य से कोई इनकार नहीं कर सकता। भिक्षु संघ समस्त बौद्ध जगत के लिए (आहुनेय्यो पाहुनेय्यो अञ्जली करणीय्यो, अनुत्तरपुञ्ज कखेतं लोकस्साति) एक पवित्र धार्मिक संघ है, जिसका गौरव एवं सम्मान करना हर बौद्ध के लिए आवश्यक ही नहीं, परम धर्म भी है।

(५) वस्तुतः बौद्ध भिक्षु स्वयं एक संस्था होता है और भिक्षु संघ की उपादेयता तो और भी महान् है, जिसका भारतीय बौद्ध महा-सभा जैसी साधारण संस्था (गृहस्थों की समिति) में विलीन होना या उसके नेतृत्व में कार्य करना भिक्षु-संघ के लिए क्या समस्त बौद्ध जगत का अपमान है। ऐसे निराधार एवं अविवेकपूर्ण प्रस्ताव लाना बौद्ध धर्म की महत्ता तथा पवित्रता के लिए कलंक है।

(६) जिस सभा के सदस्य ही पूर्ण बौद्ध नहीं हैं, वे औरों को बौद्ध कैसे बना सकते हैं और फिर बौद्ध भिक्षुओं को जन्म देना, उन्हें प्रशिक्षण देना और उन पर शासन करना आदिये सब “किमाश्रय-मतः परं” वाली बातें हैं, जो हर किसी बौद्ध को हास्यास्पद ही लगेंगी।

(७) यह रहस्य किसी से छुपा नहीं है। दिल्ली, नागपुर अथवा बम्बई में या अन्यत्र भारतीय बौद्ध महासभा के अधीनस्थ जितने बुद्ध विहार हैं, उसमें से अधिकांश उजाड़ हैं या शराबियों के अड़्डे हैं या फिर अतिथि गृह के रूप में प्रयोग होते हैं। उनके संचालक भी अधिकांश अबौद्ध ही हैं, जो परस्पर झगड़ते-लड़ते रहते हैं। भूले-भटके भिक्षुओं को भी उनमें शरण नहीं मिलती। दिल्ली में ऐसे कई बुद्ध विहार हैं, जहां भारतीय बौद्ध महासभा के लोग परस्पर झगड़ा तथा फूट पैदा करना ही अपना काम तथा धर्म समझते हैं और भिक्षुओं के साथ मार-पीट करने में भी लजाते नहीं हैं। जैसे-दिल्ली के कल्याणपुरी, न्यू सीलमपुर, बिहारी कालोनी, बदरपुर इत्यादि बुद्ध विहारों पर होने वाले झगड़े इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं।

(८) बौद्ध धर्म का अबाध गति से प्रचार भिक्षुसंघ का भारतीय बौद्ध महासभा में विलय होने से नहीं, अपितु उसके मार्ग-निर्देशन में चलकर और उन्हें निष्ठापूर्वक सक्रिय योगदान देकर किया जा सकता है। यही नहीं भारतीय बौद्ध महासभा के अधीन जितने बुद्ध विहार हैं, वे सब भिक्षु संघ को सादर समर्पित किये जाएँ और वहाँ रहने वाले भिक्षुओं को भोजन, वस्त्र तथा अन्य आवश्यक साधन उपलब्ध किये जायें, ताकि भिक्षु स्वन्त्रतापूर्वक अध्ययन, चिन्तन, मनन कर सकें और बुद्ध-शासन में रत होकर धर्म तथा समाज की सेवा कर सकें।

(९) अन्त में भारतीय बौद्ध महासभा से मेरा नम्र निवेदन है कि वह इस प्रस्ताव (भिक्षु संघ भारतीय बौद्ध महासभा के अधीन काम करे) को रद्द कर दे, भुला दे। यह रहस्यमयी तथा दुनियावी बातों में उलझने का समय नहीं है। इसी झगड़े में हमने ३० वर्ष गवाँ दिये हैं, पर धर्म की वास्तविक मणि को प्राप्त नहीं कर पाये और आज भी कंगाल ही बने हुए हैं।

(१०) मेरा भारतीय बौद्ध महासभा से कोई द्वेष नहीं है; झगड़ा नहीं है। मैं भी उसका कट्टर पक्षपाती हूँ। किन्तु हमें विश्वव्यापी परम्परावादी बुद्ध-शासन को तोड़ना-मरोड़ना नहीं है। बजाय

दक्रियानुसी तर्कों के हमें उसके मार्ग पर चलना है। इसी में हमारा उद्धार एवं संगठन निहित है और यही श्रद्धेय बाबासाहेब अम्बेडकर का अन्तिम लक्ष्य था। (डॉ० प्रताप सिंह गौतम—कोण्डली, दिल्ली-६१)

प्रश्न (७) वन्दना, पूजा, सूत्रपाठ सब व्यर्थ हैं।

उत्तर—एक भी व्यर्थ नहीं है, सभी सत्य हैं। पूजा, वन्दना, सूत्रपाठ आदि धर्म के बहिर्गम रूप हैं। बिना इस प्रकार के बाह्य आराधना के भीतर मन को स्थिर करने में अज्ञानी समाज को एक प्रकार से असम्भव ही है। इसलिए इस प्रकार के बाह्य आचार की जरूरत होती है; क्योंकि वर्तमान में भारत के नाममात्र के नव-बौद्ध ६८% अपने स्वीकृत धर्म के प्रति अज्ञानी हैं। इन्हीं अज्ञानियों के लिए ही प्रतीक, चिन्ह, स्तूप, विहार, बुद्ध मूर्ति, विद्या केन्द्र आदि का निर्माण किया जाता है। सभी लोग बुद्धिवादी नहीं होते हैं। सबकी बुद्धि समान नहीं है। बुद्धि के कम-ज्यादा के भेद से आचार-विचारों में भी न्यूनाधिक्य होना निश्चित है। विहार, पूजा-वन्दना, सूत्रपाठ, दान और भिक्षुओं का उपदेश आदि धार्मिक क्रियायें साधकों के मन में एक विशेष आकर्षण एवं श्रद्धा उत्पन्न करती हैं और धर्म में उत्तरोत्तर बढ़ोत्तरी करती हैं। इसलिए इन सबकी अत्यन्त आवश्यकता है। कोई नास्तिक अथवा अर्ध-बौद्ध अज्ञानवश उपर्युक्त बौद्ध संस्कृति को जो २५०० वर्षों से हमारे पूज्य महास्थविर भिक्षुओं द्वारा संरक्षण देकर आई हुई विश्वव्यापी है, उसे नष्ट करने की सारी कोशिश और पड़यन्त्र विफल करने का कार्य प्रत्येक बौद्धधर्मी का प्रथम कर्तव्य है; क्योंकि “संस्कारेणैव संस्कृति” अर्थात् संस्कार से ही संस्कृति बनती है।

अतः प्रत्येक उपासक, उपासिका, श्रामणेय का कर्तव्य विहार में जाना है। पूजा, वन्दना, शीलग्रहण, सूत्रपाठ, भिक्षुओं का उपदेश सुनना आदि धार्मिक कृत्यों को सोल्लास मनाया करें। उपोस्थ व्रत रखना और परित्राण पाठ भी शील सम्पन्न भिक्षुओं से कराना और दान देना भी अति आवश्यक कर्तव्य है। जिससे अनेक प्रकार की आपदा, भय एवं अमंगलों से छुटकारा मिले।

कर्मवाद के सिद्धान्तानुसार बौद्ध यह नहीं मानते कि बुद्ध की पूजा करने से वरदान देंगे, परन्तु वे यह स्वीकार करते थे कि बुद्ध का ध्यान करने से चित्त समाहित (शान्त) होता है और पूजा करने वाला व्यक्ति अपने को निर्वाण के लिए तय्यार करता है। बुद्ध की शिक्षा में अनुग्रह और प्रार्थना को कोई स्थान नहीं दिया गया है। एतदर्थ कोई उचित शब्द प्राचीन बौद्ध साहित्य में प्राप्त नहीं होता है। इससे मिलते-जुलते प्रणिधि और प्राणिधान शब्दों का प्रयोग होता है। जिनका एक ही अर्थ "प्रतिज्ञा" है कभी-कभी यह शब्द "सत्य वचन" अर्थ में प्रयुक्त होता है।

परन्तु ईसा की प्रथम शताब्दी के कुछ पूर्व बौद्धों में करुणामय देवों की पूजा प्रारम्भ हुई। उन देवों की प्रतिभा या प्रतीक की वे पूजा करने लगे और निर्वाण तथा सुख हेतु प्रार्थना करने लगे। महायान में पूजा और प्रार्थना का महत्व विशेष रूप से बढ़ा। ये पूज्य देव शाक्य मुनि, पूर्व बुद्ध, मैत्रेय, बोधिसत्व हैं। क्रमशः भक्ति का प्रभाव बढ़ने लगा और निर्वाण के स्वरूप की मान्यता बदलने लगी। सुख भूमि की प्राप्ति इसका उद्देश्य हो गया। बुद्ध का लोकोत्तर रूप प्रकाश में आ गया।

यद्यपि पालि ग्रन्थों में भी बुद्ध को लोकोत्तर कहा गया है, परन्तु वहाँ लोकोत्तर का अर्थ मात्र इतना ही है कि बुद्ध पदम-पत्र की भाँति संसार में अलिप्त रहते हैं। निर्वाण-मार्ग का आविष्कार उनकी विशिष्टता है, उन्हें लक्षण और अनुव्यंजन से युक्त भी बतलाया गया है। परन्तु वह भी मात्र उनकी महानता को सूचित करने के लिए है। लोकोत्तर की परिभाषा करते हुए विद्वान रमाशंकर त्रिपाठी का कहना है कि—

“लुज्जति पलुज्जतीति लोको उत्तरतिति उत्तर “(अभिधम्मसंगहो-भदन्तरेवत धम्म” अर्थात् जो नष्ट होता है तथा पुनः उत्पन्न होता है वह लोक है। जल से बाहर आता है, इसलिए उत्तर है।

परन्तु महायानी बौद्ध उनको विशेष अर्थ में लोकोत्तर मानने लगे। इन्हीं मान्यताओं ने महायान में भक्तिवाद को पल्लवित ए

पुष्पित किया। पालि के खुदक निकाय के कुछ ग्रन्थों में स्तूप-पूजा की चर्चा प्राप्त होती है। यथा अपदान में कहा गया है कि वाहिक स्थविर ने स्तूप की पूजा करते हुए निर्वाण को प्राप्त किया। “श्रुपं करोथपूजेथ निब्बुतो सो महामति, खिप्पाभिञ्जनमेसग्गे सावको मे वचो करो। (बाहिया थेरापदान—अपदान पालि भाग-२, पृष्ठ १२५)

इसी प्रकार इसी ग्रन्थ में अन्य स्थानों पर भी स्तूप-पूजा व चैत्य-पूजा से प्राप्त होने वाले फलों की चर्चा की गई है और “धर्म गुप्तक” को स्थविरवाद की एक शाखा बताया गया है। परन्तु स्तूप-पूजा की दृष्टि से ये महायान की ओर अग्रसर है। इस मत के अनुसार बुद्ध को भेंट चढ़ाना और स्तूपों की पूजा करना प्रधान धर्म है। वे मानते हैं कि संघ को दान बुद्ध को दिये दान से भी पुण्यदायक है; क्योंकि बुद्ध संघ में ही सम्मिलित है। वे स्तूपों को दिये गये दान को भी पुण्यदायक समझते थे।

(डा० नालिनाथ दत्त—बुद्धिस्ट सेकट इन इण्डिया, पृष्ठ १७२—मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी १९७५)

“सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र” में स्तूप-पूजा का भक्ति भावना से अनन्त वर्णन है। इसी प्रकार “शिक्षा समुच्चय” (आचार्य शान्ति देव कृत) और सुखावती व्यूह में भी भक्तिभाव के अगणित फल का वर्णन है। कि बहुना पालि त्रिपिटक के सुत्त निपात के रतनसुत्त में भी आया है कि—सूत्रपाठ करने से रोग, अकाल और मनुष्य कृत उपद्रवों की मुक्ति के लिए रतनसूत्र का पाठ करना चाहिए। इसी प्रकार थेरवाद बुद्ध धर्म के “आटानाटिय परित्त” जिन पञ्जर “महामंगल गाथा” बोज्यंगसुत्त “महामंगल सुत्त” आदि और भी कितने ही परित्राण सूत्रों में भी पूजा, वन्दना, परित्राण पाठ का अनन्त महत्व दिया गया है तथा उसका फल असीम बताया गया है।

हम जानना चाहते हैं कि सर्व मंगलकारी हमारे उपर्युक्त विश्व-व्यापक धार्मिक अधिकार को नकारने वाले यह नास्तिक होते कौन हैं? उसे क्या अधिकार है कि हमारी धार्मिक आस्था को नकारने का!

बौद्ध संस्कृति विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृतियों में एक है तथा इसकी स्मृति भी अतुलनीय है। अतः किसी कोने से कुछ लोगों के विरोध से कुछ भी परिणाम निकलने वाला नहीं। इसलिए नास्तिकों को इस सम्बन्ध में अपने दृष्टिकोण को बदलना चाहिए, यह सुझाव मैं अवश्य दूंगा। सब लोग धार्मिक बनें। धम्म का पठन-पाठन हो। हिन्दू भारत में फिर एक बार बौद्ध धम्म को अपने स्थान पर प्रतिष्ठापित करना अत्यन्त आवश्यक है। यही बाबासाहेब डॉ० बी. आर. अम्बेडकर की इच्छा थी। इसे पूरा करना, उसके लिए जीना और मरना भारत के बौद्धों का प्रथम कर्तव्य होना चाहिए। यह धम्म और संस्कृति को खण्डित या आलोचना करके कभी भी सम्भव नहीं है। हाँ उसमें श्रद्धा रखकर अवश्य उसकी सेवा कर सकते हैं।

निष्कर्ष यह है कि बौद्ध धम्म और संस्कृति के प्रतीक हमारे आचार, विचार, पूजा, वन्दना आदि कृत्यों को मना करने का अधिकार किसी नास्तिक या बुद्धिवादी को नहीं है; क्योंकि बौद्धों के धार्मिक अवसरों की प्रथाएँ सादे एवं सुन्दर ढंग के समारोह हैं। उसका वास्तविक धर्म पथ से कोई सम्बन्ध न होने पर भी ऐसे लोगों को जो धर्म पथ पर अपेक्षाकृत कम बढ़ सके हैं, कुछ धार्मिक भावनाओं और आवश्यकताओं को संतुष्ट करने हेतु और धीरे-धीरे उनके धर्म पथ पर बढ़ाने के लिए इन प्रथाओं, समारोहों और उत्सवों आदि सांस्कृतिक चिन्हों का अपना महत्व है। अर्थात् बुद्ध का प्रतिमायुक्त मन्दिर है, स्तूप या धातु गर्भ है। बोधि वृक्ष है और इन विहारों में सभी बौद्ध देशों में धार्मिक अनुष्ठान होता है। फूल चढ़ाते हैं, दीपक जलाते हैं और सुगन्धी धूप जलाते हैं, इसे आस्तिक धर्मों में की जाने वाली प्रार्थना से नहीं जोड़ा जा सकता। यह केवल “महानतम गुरु” जिसने यह मार्ग दिखाया उसकी स्मृति में श्रद्धासुमन अर्पित करना है।

अन्त में बुद्ध प्रतिमा के सम्बन्ध में दो उदाहरण प्रस्तुत करके इस प्रकरण को समाप्त करता हूँ। “काऊण्ट कसेरलेग” नामक एक अँग्रेजी विद्वान ने अपनी पुस्तक “ट्रेवल डायरी आफ ए फिलोसोफर” में

कर" में लिखा है कि—इस संसार में, मैं बुद्ध की मूर्ति से बढ़कर श्रेष्ठ अन्य किसी वस्तु को नहीं जानता। दृश्य जगत में अध्यात्मिकता की यह सम्पूर्ण मूर्ति है।

दूसरा उदाहरण पण्डित जवाहर लाल नेहरू अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि—अनुराधापुर (श्रीलंका) में मैंने बुद्ध की एक प्राचीन बैठी हुई पाषाण की मूर्ति को बहुत पसन्द किया था। एक वर्ष बाद जब मैं देहरादून जेल में था, तब श्रीलंका के एक मित्र ने उस मूर्ति का चित्र मेरे पास भेज दिया, जिसे मैंने अपनी कैदखाने की कोठरी के छोटे टेबिल पर रख दिया। यह चित्र मेरे लिए एक अनमोल साथी बन गया। बुद्ध की मूर्ति की दृढ़, शान्त आकृति ने मुझे शान्ति एवं शक्ति प्रदान की तथा निराशा की अवधि पर विजय पाने में मेरी सहायता की।

(धर्मदूत मासिक पत्रिका—सारनाथ, दिसम्बर १९७३ से उद्धृत)

प्रश्न (८) शरणं गच्छामी नहीं अनुसरण करता हूँ कहना चाहिए ?

उत्तर—नास्तिकों का कहना है कि शरणं गच्छामी कहने से गुलामी की गन्ध आती है। किन्तु सत्य यह है कि शरणं गच्छामी कहने से गुलामी की गन्ध भ्रमवश नास्तिकों की मूर्खता का परिचायक है। अनुसरण करता हूँ, का मतलब हुआ जैसे एक साथी (कामरेड) की तरह का सम्बोधन है।

भगवान् तथागत शास्ता महाकारुणिक के समान इस संसार के इतिहास में आज तक कोई नहीं हुआ; फिर बराबरी करने का सवाल ही कहाँ उठता है ? क्या शरणं गच्छामी कहने में शर्म लगता है, तो वे इससे दूर रहना ही श्रेयस्कर है। ऐमें मूर्ख नास्तिकों को इस धर्म में कोई स्थान नहीं है और ऐसे लोग इस धर्म में कोई उन्नति नहीं कर सकते। बुद्ध धर्म और संघ मानव समाज के लिए अन्तिम शरण स्थान हैं; उसकी अवहेलना किसी प्रकार बर्दास्त नहीं की जा सकती।

अगर अनुसरण करता हूँ कहने से और शरणं गच्छामी कहने से

अधिक परक तो नहीं है, फिर भी परम्परा से आये हुए शरणा-गमन की उपेक्षा नहीं कि जा सकती; क्योंकि परम्परा ही धर्म को हमेशा रूढ़ियों द्वारा कायम रखती है। बिना परम्परा के संसार में कोई धर्म सम्भव नहीं है। इसलिए कोई सनकी या पागल की बातों में आकर हम हजारों वर्ष पूर्व से चले आ रहे, शरणा गमन को कभी त्याग नहीं सकते।

तथाकथित मूर्ख नास्तिकों ने भारत में पवित्र बौद्ध धर्म की, बहुत हालत खराब की है। जिन पर धर्म-रक्षा का भार था, वे ही राजनीति के चक्कर में, कुर्सी के मोह में पड़कर नास्तिकवाद की रट लगाकर, भोली-भाली जनता को 'त्रिशंकु' की तरह न इधर की न उधर की, बीच में लटकाये हुए हैं। एक धार्मिक के लिए यह सहन करना मुश्किल है। परम्परा की निन्दा करने वाले इन नास्तिकों से धर्म की भलाई की कोई आशा नहीं कर सकता; क्योंकि धर्म बुद्धिवाद का विषय नहीं है, यह अनेक बार दोहराना पड़ता है। धर्म के लिए श्रद्धा, दान, शील, वीर्य, शान्ति, ध्यान आदि महत्वपूर्ण पारमिताओं का अभ्यास अत्यावश्यक है।

बुद्ध, धर्म और संघ यह तीन रत्न हैं; इनमें से एक में थोड़ी-सी भी श्रद्धा कम हुई, तो वे बौद्ध नहीं हो सकते। कतिपय नास्तिकों का कहना है कि तपुस्स और भल्लिक ऊरुविला में दो ही शरण ली थी वह कैसे प्रथम उपासक बन गये? इसका उत्तर यह है कि उस समय संघ तैयार नहीं हुआ था, जब संघ का निर्माण मृगदाव में हुआ, तब से आज तक समस्त बौद्ध जगत तीन शरण ही लेकर आया है और जब तक विश्व में बौद्ध रहेगा, तब तक त्रिशरण का अन्त नहीं हो सकता।

मुझे एक मासिक पत्र में पढ़ने को मिला है कि "डॉ० अम्बेडकर भी पहिले दो शरण के ही पक्ष में थे" अगर यह सही है तो उन्हें दो शरण लेना चाहिए था, फिर नागपुर में दीक्षा के समय तीन शरण क्यों उच्चारण गया? स्पष्ट है अगर त्रिशरण नहीं मंजूर करेगा, तो

वह बौद्ध हो ही नहीं सकता था, बाबासाहेब इस बात को अच्छी तरह जानते थे।

सत्य यह है कि मानव जाति के लिए अन्तिम शरण तीन (बुद्ध, धम्म, संघ) हैं। विश्व के समस्त शरणागतिवाद या भक्तिवाद अथवा ईश्वरवाद का यह पूर्व रूप था। इसलिए कतिपय नास्तिक भी भीमं शरणं गच्छामी कहते सुने गये हैं। हिन्दुओं के “रामशरणं” श्री कृष्णं शरणं मम” “अय्यप्प शरणं” आदि उच्चारण बौद्धों की देखा-देखी उधार लिए हुए शब्द हैं। संसार का कोई भी धर्मवादी या राजनेता अथवा संस्कृति, साहित्य, कला आदि के प्रेमी लोग भी अपने-अपने गुरु के शरण में रहने को बुरा नहीं मानते, उलटा भाग्य समझते हैं। फिर भगवान् सम्यक सम्बुद्ध परम कारुणिक तो विश्व के सबसे बड़े और प्रथम धर्माचार्य थे, उनकी शरण में जाना जीवों से लिए श्रेष्ठ और कल्याणकारी मार्ग है।

विश्व इतिहास की परीक्षा में समस्त विद्यार्थी और खोजी लोग जानते हैं कि बुद्ध भगवान् मानव, समाज, सभ्यता, एवं धर्म क्षेत्र में सर्वप्रथम तार्किक, विचारक, सुधारक, वैज्ञानिक, अन्वेषक, क्रान्तिकारी और दार्शनिक थे। अतः उनकी शरण में जाना, तो अहोभाग्य समझना चाहिए। इसी में मानवता का सच्चा कल्याण है।

इसके विपरीत यह नास्तिक बुद्धि भ्रष्ट होकर लोगों को सत्य पथ से वंचित करा रहे हैं और सीधे-सादे लोगों को धर्म पथ से गुमराह करा रहे हैं; यह ठीक नहीं है। प्रत्येक बौद्ध धर्मी का यह कर्तव्य है कि—इन नास्तिकों को मुँह-तोड़ उत्तर दे और श्रद्धावान् और शीलवान् बनने का प्रयत्न करे। जब तक हम धर्म के लिए कुछ त्याग नहीं करेंगे, तब तक हमें धर्म समझने में नहीं आयगा।

श्रद्धा, दान, शील और वीर्य से ही इस धर्म की शुरुआत होती है। बुद्ध धर्म विश्व का एक मात्र जीवित धर्म है, बाकी सब मृतक धर्म हैं; क्योंकि वे सब विश्वास पर टिके हुए हैं, किन्तु बुद्ध धर्म

प्रत्यक्ष दर्शन पर टिका हुआ है। बौद्धों में विश्वास बाद में होता है पहिला दर्शन है।

हम जय भीम नारे के विरोधी नहीं हैं। जय भीम कहना ही चाहिए; क्योंकि इस नारे में एक स्फूर्ति है, चेतना है, नवीनता है, समता बोध है तथा एकता का प्रतीक भी है। अतः इस शब्द से किसी को आपत्ति क्यों हो? जय भीम शुरुआत है; पहिली सीढ़ी है, आरम्भ है, आगे बहुत मन्जिल तय करना बाकी है। तभी यह नारा सफल होता दिखाई देगा। अर्थात् जय भीम का कार्य पूरा करेगा, तब ही नारा सफल हो सकता है, अन्यथा कोरा नारा मात्र रह जायगा।

हमारी दृष्टि से डॉ० अम्बेडकर द्वारा भारत का संविधान बनाना महत्वपूर्ण नहीं है, जितना बौद्ध धर्म का अनुगमन करना महत्वपूर्ण है। अर्थात् डॉ० अम्बेडकर पैदा नहीं हुआ होता तो क्या भारत स्वतन्त्र नहीं होता और संविधान नहीं बनता था? अवश्य स्वतन्त्र होता और संविधान भी बनता, भले ही उसका स्वरूप कुछ और ही होता, किन्तु बौद्ध धर्म का पुर्नजागरण केवल अम्बेडकर ही कर सकता था, अन्य कोई नहीं। इस महान उपकार के लिए भारत के मैदानी इलाके के बौद्ध उन्हें अपना राजा मानने के लिए भी तैयार हैं; बशत राजा द्वारा धर्म में पूर्ण श्रद्धा, आस्था और सम्मान प्रदर्शित हो। जैसे—

एशिया के अनेक बौद्ध राजाओं और राष्ट्रध्यक्षों को भी सद्धर्म में आज भी पूर्ण रूप में आस्था है, श्रद्धा है, समर्पण है, भक्ति है प्राणों से भी प्यारा है; जहाँ राष्ट्र धर्म ही बौद्ध धर्म है। यह हमारा दुर्भाग्य है कि इस घोर जात-पात और धर्मान्धों के देश में १३०० वर्ष पूर्व ही बौद्ध धर्म मिट चुका था डॉ० बाबासाहेब अम्बेडकर को उसे पुर्नजीवन दिया था, किन्तु ३५ वर्ष बाद भी वह जहाँ का तहाँ पड़ा है। उठने की स्थिति अब तक नहीं प्राप्त कर सका।

इस धर्म को पुनः सम्पूर्ण भारत में किस प्रकार फैलाया जायगा यही इस समय मुख्य रूप से विचारणीय प्रश्न होना चाहिए। उसके

लिए प्रत्येक बौद्ध धर्मी को अपनी शक्ति के अनुसार तन-मन-धन से सहयोग करना चाहिए। तब ही बाबासाहेब की इच्छा पूरी होगी। तब ही हम उनके ऋण से मुक्त हो सकेंगे।

तात्पर्य यह है कि धर्म को बढ़ाने के लिए पुण्य-क्रिया वस्तुओं का सेवन करना बहुत जरूरी है। इसके बिना धर्म में कोई भी उन्नति नहीं हो सकेगी; पुण्य-क्रिया के दस प्रकार हैं—

दानशीलय थोपि भावना विधि पत्तोय तमोबना

वेय्या वच्च मुजु च धम्म सवणं पूजा तथा देसना

एतानीध दसापि पुञ्ज किरियावत्यु निविञ्जुवदे ॥

(विशुद्धि मार्ग, हिन्दी—प्रजाभूमि निर्देश, परिच्छेद १७)

अर्थ—दान, शील, भावना, अपचायन (गौरव-आदर करना), सेवा टहल, दान की पत्ति (हिस्सा देना), दान का हिस्सा पाकर अनुमोदन करना, धर्म श्रवण (पूजा) धर्म देशना, दृष्टि को ऋजु (सरल) करना, इसे धर्म के १० लक्षण कहा गया है, जानियों ने। अर्थात् पुण्य वह है जो मन के विकास और ज्ञान के लिए सहायक होने वाले सभी कर्म। इसके विपरीत सभी पाप है। 'पुण्यं तु मानस विकास क्रिया विशेषः तत विपरीतं पापं'।

प्रश्न (६) त्रिपिटक में ब्राह्मणों ने मिलावट की है इसलिए सत्य नहीं है।

उत्तर—यह बात सत्य नहीं है; क्योंकि सम्राट अशोक के पूर्व शायद कुछ ब्राह्मणों ने बौद्ध धर्म में भिक्षु वेष में आकर अज्ञानवश कुछ मिलावट अवश्य की होगी, किन्तु तीसरी संगीति (२५३ ईसा पूर्व) के बाद कोई भी त्रिपिटक में मिलावट नहीं कर सका; क्योंकि सम्राट अशोक महान ने अपने गुरु अर्हत मोग्गल्लिपुत्तस्स के नेतृत्व में तृतीय धर्म सभा का आयोजन पाटलीपुत्र के अशोकाराम विहार में कराकर ६१,००० भिक्षुओं को एकत्रित किया था, उनमें से ६०,००० अधर्मी तथा बुद्ध-शासन से अनभिज्ञ भिक्षु धूर्तों को सम्राट ने सफेद वस्त्र पहनाकर संघ से बाहर कर दिया था।

शेष बचे हुए १,००० महान् त्रिपिटकधारी विद्वान और शीलवान्

भिक्षुओं के साथ महासभा का संचालन करके "कथावत्थु" नामक महान पालिग्रन्थ लिखाकर पूर्व के सभी भ्रमों तथा मतभेदों को समाप्त कर दिया था। इसी सभा में वर्तमान पालि त्रिपिटक (बुद्ध वचन) निश्चित किया गया था। उसके पूर्व में जो मिलावट हो चुकी थी, उसके लिए हम या कोई भी अब कुछ नहीं कर सकता। २३०० वर्ष से अब तक वही पवित्र त्रिपिटक थेरवादी बौद्धों में प्रचलित है तथा एक मात्र अन्तिम प्रमाण है।

उसकी प्रथम लिपि सिंहली में तैयार हुई थी, जो सिंहल के राजा ने (२६-१७ ईसा पूर्व) इस सभा का आयोजन किया था। यह एक वर्ष तक चली थी, यह श्रीलंका के मलय प्रदेश के अलोक विहार नामक गुफा में हुई थी। इसका संरक्षक राजा "बट्टगामी अभय" था। यह राजा धार्मिक और राजनीतिक दोनों दृष्टियाँ में वीर था।

सम्राट अशोक के पुत्र महामहेन्द्र स्थविर ने पालि त्रिपिटक को श्रीलंका (२५२ ईसा पूर्व) में ले गये थे। श्रीलंका में प्रथम बार पालि त्रिपिटक लिपिबद्ध होने के बाद वहाँ से बर्मा, थाईलैण्ड, कम्बोडिया और लाओस में भी इस धर्म ने मजबूती से जड़ जमाई। इन देशों में आज भी बौद्ध धर्म वहाँ का राज धर्म है और सम्पूर्ण जनता में ८५% जनता बौद्ध धर्मी है।

जहाँ तक पालि त्रिपिटक के संशोधन का सवाल है, उसके बारे में भूमिका में बताया गया है कि कम-से-कम स्थविरवादी २५० विद्वान भिक्षुओं की कम-से-कम एक वर्ष की सभा (संगीति) कर ही सम्भव हो सकता है। अन्यथा संसार का शक्तिशाली बौद्ध सम्राट ही क्यों न हो, यह कार्य सम्भव नहीं है। अतः त्रिपिटक संशोधन अथवा बुद्धिवाद के अनुकूल बातें ग्रहण करके बाकी त्याग दें, सम्भव नहीं है। हम किसी के अधिकार को छीनना नहीं चाहते, हम अपनी जन्म-भूमि के ऐतिहासिक और जन्म सिद्ध एवं संविधान प्रदत्त अधिकार को चाहते हैं।

पालि त्रिपिटक हमारे विश्वास और श्रद्धा का एकमात्र आधार है, उसका खण्डन बौद्ध धर्म पर कुठाराघात है। हम इसका डटकर

विरोध करेंगे ; क्योंकि पालि त्रिपिटक और भिक्षुओं का विरोध हम बर्दाश्त नहीं कर सकते । हो सकता है, इन दोनों में बुद्धिवाद की दृष्टि में सोचने से अनेक गलत या अज्ञानपूर्ण बातें होंगी और होती ही रहेंगी । यह सभी धर्मों में पाया जाता है ।

धर्म ही अन्धविश्वास का दूसरा नाम है । अनेक धूर्त और भ्रष्ट भिक्षु भी शुरू से आज तक हुए हैं और होते रहेंगे । किन्तु गंगा की पवित्रता का नष्ट उसी में से बहने वाले मल, मृत जन्तुओं का अंग नहीं कर सकता । अर्थात् गंगा में मल-मूत्र हजारों मन हड्डियाँ, राख और मृत शरीरों के हिस्से गिराने पर भी हिन्दुओं के लिए गंगा अशुद्ध नहीं, पवित्र है । इसी प्रकार अनेक गलत बातें या भिक्षुओं की गलतियाँ रही हों और अब भी विद्यमान होंगी; किन्तु सच्चे बौद्ध के लिए अपने मार्ग में यह सब बाधक नहीं हो सकतीं । सच्चा धार्मिक इनमें केवल अच्छाई ही देखता है बुराई को नहीं ।

अब यह देखें कि इन नास्तिकों के आधार स्तम्भ "बुद्ध एण्ड हिज धम्मा" में कितनी मिलावट हुई है । यह मिलावट करने वाले हिन्दू थे । उसका नाम नानक चन्द रट्टु नामक पंजाबी हरिजन है । आयु के ६३ वर्ष में भी वह आज दिल्ली में जीवित है । उन दिनों में अर्थात् १९५५-५६ की अवधि में यह बाबासाहेब का मुख्य टाइपिस्ट था । यह आज भी रविदास का भक्त है और उनके एक साथी प्रकाशचन्द नामक अन्य व्यक्ति भी था । इनके पास ६ महिने पर्यन्त "बुद्ध एण्ड हिज धम्मा" की पाण्डुलिपि पड़ा रहे थे । सम्पूर्ण रूप से हेर-फेर करने की छूट लेखक ने उन्हें दे रखी थी । लेखक के देहावसान के ६ महिने बाद ही उक्त पुस्तक प्रकाशित की गयी थी, इस सम्बन्ध में एक माने हुए मराठी लेखक 'धनंजयखीर' नामक व्यक्ति ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "विश्वभूषण डॉ० बाबासाहेब अम्बेडकर में इस प्रकार व्यक्त किया है ।

"भगवान बुद्ध और उनका धम्म" नामक ग्रन्थ की पाण्डुलिपि को अनेक बार सुधारा गया और अनेक बाद परिच्छेद बदलना पड़ा । उसका क्रम अनेक बार बदला गया । कभी-कभी सम्पूर्ण

प्रकरण ही दुबारा लिखा गया। यह प्रचण्ड काम था। यह काम उनके वैयक्तिक कार्यवाहक कर्मचारी नानकचन्द रट्टु और प्रकाश चन्द ने किये थे, इन दोनों ने अनेक मास प्रयत्न किये।

(विश्व भूषण डॉ० बाबासाहेब अम्बेडकर—मराठी, पृष्ठ ५०८, लेखक धनंजय खीर)

अतः 'बुद्ध एण्ड हिज धम्मा' में जो भी परम्परा विरोधी बातें आयी हैं, वह सब इन दो पंजाबी हिन्दू भाईयों की भूल का फल है। बौद्ध धर्म के बारे में नाम मात्र के लिए भी न जानने वाले इन हिन्दुओं के हाथों में इस प्रकार का महान उत्तरदायित्व सौंपना बहुत बड़ी गलती थी, उसी का परिणाम 'बुद्ध और उनका धम्म' में आई हुई अनेक धम्म विरोधी बातें हैं। उसके लिए मूल लेखक उत्तरदायी नहीं हो सकता; क्योंकि उसके लिए वही पुस्तक में प्रमाण है।

(१) देवता पर मुझे विश्वास नहीं है, ऐसा किसने कहा है?

(विश्व भूषण डॉ० बाबासाहेब अम्बेडकर मराठी के लेखक धनंजय खीर, पृष्ठ ४९५)

(२) भगवान बुद्ध ने जो धर्म तत्त्व उपदेश दिया है, वही मैं पालन करने वाला हूँ। (वही पृष्ठ, ५१८)

(३) भगवान बुद्ध के कहे हुए अष्टांग मार्ग को मैं जोरों से निष्ठा पूर्वक पालन करूँगा। (वही पृष्ठ ५२०)

ऐसे महान् आदर्शवादी धम्मनिष्ठ व्यक्ति धम्म विरोधी बातें कैसे लिख सकते हैं? सोचने की जरूरत है; क्योंकि उन्होंने स्वयं लिखा है।

(४) एक बौद्ध का कर्तव्य केवल एक अच्छा बौद्ध बनना ही नहीं, बल्कि उसका कर्तव्य बुद्ध धर्म का प्रचार करना ही मानवता की सेवा है। (बुद्ध और उनके धर्म का भविष्य—डॉ. बी. आर. अम्बेडकर)

(५) उन्होंने नये बौद्धधर्मियों के लिए जो २२ प्रतिज्ञायें दी हैं उनमें ७वाँ नम्बर इस प्रकार है—“मैं बौद्ध धर्म के विरुद्ध कोई भी कार्य नहीं करूँगा।”

क्या इन बातों से भी यह स्पष्ट नहीं हुआ है कि डॉ० अम्बेडकर

कितने पक्के आदर्शवादी, महान् बौद्ध नेता थे, उनके ऊपर नास्तिकता का आरोप या धर्म विरोधी बातें लिखने का आरोप कितना मुखतापूण है। अतः बौद्धागमों में ब्राह्मणों की मिलावट का प्रलाप कोरा नास्तिक वादी दृष्टिकोण से प्रेरित है। उसके लिए बाबासाहेब जैसे महान् अमर धर्मसेनानी को दोष देना भारी अन्याय है; क्योंकि बाबासाहेब तो पक्के धार्मिक थे, वह अधर्म की बातें कैसे कर सकते थे ?

निष्कर्ष यह है कि नास्तिकों को अपना दृष्टिकोण बदलना चाहिए और पालि त्रिपिटक और भिक्षुओं का विरोध छोड़ देना होगा, तभी वे बाबासाहेब के पक्के अनुयायी हो सकते हैं, अन्यथा नहीं। यही एकमात्र मार्ग है, बुद्धशासन को भारत में सर्वत्र फैलाने के लिए। एकतायुक्त होकर त्याग एवं श्रद्धा के साथ धर्मानुष्ठान एवं प्रचार के लिए तत्परता के साथ तय्यार रहें। इसी में भारतीय बौद्धों का कल्याण है तथा भारत को बौद्धमय बनाने का संकल्प पूरा होगा। उल्टे नास्तिकवाद से पतन और बौद्ध धर्म के नये पौधे शून्य में अवश्य लीन होंगे। नास्तिकवाद धर्म को नष्ट करने में ही सहायक होगा ! उसकी बढ़ोत्तरी के लिए नहीं।

कतिपय नास्तिकों द्वारा पालि त्रिपिटक (बुद्ध वाणी) का संशोधन चाहते हैं, तो अम्ब्रेडकर के धर्म सम्बन्धी दृष्टिकोण में भी संशोधन की हमारी मांग की गुन्जाइश की सम्भावना से इनकार नहीं किया जा सकता।

एक नास्तिक ने एक बार कहा था कि—सभी भिक्षु बिना काम किये बैठकर खाने वाले हरामखोर होते हैं। तब मैंने उत्तर दिया कि, तुम्हारी बातों से पता चलता है कि बी. डी. सावरकर ने “भारतीय इतिहास के छः स्वर्णिम पृष्ठ” नामक पुस्तक में बौद्ध भिक्षुओं को ‘मुफतखोर’ कहा है, वह तो कट्टर बौद्ध विरोधी था, किन्तु तुम बौद्ध होकर ऐसा क्यों कहते हो, तो उत्तर था—तुम्हारे जैसे भिक्षुओं से हमारे समाज के लिए खतरा है। वह व्यक्ति रेलवे का एक क्लर्क है, हाल में निवृत्त हुआ है, वह अभी भी मेरा मित्र है।

दूसरे नास्तिक ने मंच पर ही जहाँ मैं बैठा था कहा कि चीवरधारी का विश्वास नहीं करना चाहिए ? वरना हम जैसों को कौन पूछेगा । यह १९८१ मई मास में अशोक नगर, चेम्बुर में भारतीय बौद्ध महासभा बम्बई के नेतृत्व वाली सभा में पवार नामक एक नास्तिक ने कहा था । मूल मराठी इस प्रकार है—चीवरधारी यांचा विश्वास ठेतूनको मंग अपलेला कोण विचारणार ? तत्कालीन भारतीय बौद्ध महासभा के अनेक गणमान्य व्यक्ति वहाँ बैठे थे । वहाँ उस समय चीवरधारी सिर्फ मैं ही था ।

अन्त में मुझे यही कहना है कि त्रिपिटक में ब्राह्मणों की मिलावट का प्रलाप २१ वीं सदी में कोई काम का नहीं है । इसे कोई भी सच्च बौद्ध कभी कबूल नहीं कर सकता । त्रिपिटक ब्राह्मणों की कल्पना नहीं, भगवान् तथागत बुद्ध के ८४ हजार उपदेशों को संघ स्थविरों द्वारा संकलन किया हुआ है । जो संसार के सभी बौद्धों के लिए शिरोधार्य है । इसे कोई भी नास्तिक प्रलाप या कुतर्कों द्वारा झूठ लाया नहीं जा सकता ।

प्रश्न (१०) केवल विज्ञान ही धर्म है बाकी सब झूठ है ।

उत्तर—विज्ञान कभी धर्म नहीं हो सकता । विज्ञान केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को ही मानता है, अनुमान को नहीं । धर्म के अस्तित्व के लिए अनुमान प्रमाण भी मानना पड़ेगा । इस सम्बन्ध में एक प्रसिद्ध लेखक प्रोफेसर डी० आर० जाटव ने अपनी पुस्तक “डॉ० अम्बेडकर का समाज दर्शन” के पृष्ठ ३८ से यह उदाहरण प्रस्तुत है—

धर्म बुद्धिवाद का विषय नहीं है ; बल्कि भावना, श्रद्धा भक्ति एवं अध्यात्म साधना का विषय है । अम्बेडकर किसी एक वर्ग या जाति के लिए नहीं थे । वे सम्पूर्ण मानवों के लिए थे । सम्पूर्ण मानव सेवा सिर्फ बुद्ध धर्म के प्रसार एवं प्रचार से ही सम्भव हो सकती है । बाबासाहेब के जीवन के अन्तिम समय में उनकी यह धारणा मजबूत हो गयी थी कि—जो व्यक्ति बाबासाहेब की आड़ लेकर बुद्धि कुतर्कों द्वारा धर्म में सिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं । वह अभी बाबासाहेब को नहीं समझे हैं । धर्म व्यक्तिगत और सामाजिक उत्थान

लिए एक आवश्यक तत्व है। नैतिकता एवं धर्म के बिना समाज अधूरा है। व्यक्ति और समाज दोनों धर्म के बिना अपूर्ण हैं।

देखिये इसके विपरीत एक नास्तिक ने लिखा था कि—

मेरा ऐसा भी मानना है कि अभी हमें न तो बुद्ध शासन की जरूरत है और न बौद्ध संस्कार की। हां ! अपना झुकाव अवश्य ऐसे बौद्ध धर्म की ओर बनाये रखेंगे, जो मार्क्सवाद के अति निकट ही नहीं, बल्कि एक दूसरे के पूरक हो।

(छोटेला बौद्ध, पाराङ्गी पोर्ट, उड़ीसा—निर्णायक भीम मासिक पत्र, सन्त कबीर नगर, कानपुर १२, अगस्त १९८३)

आश्चर्य है ऐसे नास्तिकों से क्या धर्म की आशा कर सकते हैं ? कभी नहीं। कहाँ मार्क्सवाद ! कहाँ बौद्ध धर्म ! इन दोनों में जमीन और आसमान का अन्तर है। एक बार बर्मा के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री तथा कट्टर धम्म उपासक ऊनू ने वाराणसी में भाषण करते हुए कहा था कि—“कार्ल मार्क्स भगवान बुद्ध की चरणधूल के समान भी नहीं है।” मैं इन वाक्यों को परम सत्य मानता हूँ और मुझे भी पूरा भरोसा हो गया है कि कार्ल मार्क्स भगवान बुद्ध के चरण धूल के बराबर भी नहीं है। यह सत्य है, फिर मार्क्सवाद हमारे किस काम का है और बुद्ध धम्म का उसके पूरक बनने का सवाल ही कहाँ होता है ?

और एक नास्तिक का प्रलाप देखे—आगरा (उत्तर प्रदेश) के अम्बेडकर पार्क में दिनांक २८-१०-१९८७ को भाषण करते हुए श्री रामजीलाल सुमन पूर्व श्रम मंत्री, भारत सरकार ने कहा—“मैं किसी धर्म को नहीं मानता ! बौद्ध धर्म को भी उतना ही मानता हूँ, जितना उसका वैज्ञानिक दृष्टिकोण है, (दैनिक अमर उजाला, आगरा २६-१०-१९८७) यह नास्तिक नहीं है, तो और कौन है ? क्या ऐसे लोग बौद्ध धर्म के लिए अभिशाप नहीं हैं ? यही लोग बाबासाहेब के धर्म को डुबाने वाले होते हैं।

और एक दिलचस्प किस्सा सुनिए—आगरा के अम्बेडकर पार्क में २६-१०-१९८७ को उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमन्त्री स्व०

बीर बहादुर सिंह द्वारा बाबासाहेब की मूर्ति पर माला पहनाने के लिए जुता पहनकर सीढ़ी से मूर्ति पर चढ़ने के विरोध में आगरे के जाटवों का झुण्ड क्रुद्ध होकर प्रायश्चित्त के रूप में दिनांक २६-१०-१९८७ को ११ मन दूध, एवं गंगा और जमुना के जल से मूर्ति को शुद्ध करने के लिए राजनीतिक तमाशेबाजी की भीड़ एकत्रित हुई थी। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता भिक्षु ज्ञान प्रभाकर, पूर्वोदय बुद्ध विहार, चक्कीपाट, आगरा वाले ने की थी। चित्र सहित ३०-१०-१९८७ के अमर उजाला नामक आगरा के दैनिक पत्र में छपा था पत्र की रिपोर्ट में १० हजार आदमी उपस्थित होने के चित्र के साथ उल्लेख किया था। इस पंक्ति का लेखक उन दिनों आगरे में ही था।

हम पूछते हैं, क्या दूध से मूर्ति धोने से मूर्ति शुद्ध होगी अथवा क्या गंगाजल पवित्र माना, तो वह बौद्ध हो सकता है? कभी नहीं। यह विज्ञानवादी दृष्टिकोण से भी एकदम विरुद्ध है तथा डॉ० बाबा साहेब अम्बेडकर के सिद्धान्तों से भी एकदम विरुद्ध है। अतः आगरे के जाटवों ने दूध और गंगाजल से अम्बेडकर के मूर्ति को धोकर बाबासाहेब के सिद्धान्तों और आदर्शों की खुलेआम हत्या की है।

हिन्दूवादी दृष्टिकोण और अम्बेडकर के आदर्श एक साथ नहीं चल सकते हैं। ऐसे लोग बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों से हजार मील दूर हैं। वे बौद्ध होने का नाटक हरिजनों को धोखे में डालने के लिए ही कर रहे हैं, जिनसे उनके व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति हो जाय। इनकी बातों में केवल वही लोग आ सकते हैं, जो धर्म से अनभिज्ञ अथवा अशिक्षित, अज्ञानी, पिछड़े हुए लोग जिनकी संख्या भारत में काफी अधिक है। धर्मवादियों के लिए ऐसे नास्तिकों और पथ-भ्रष्टों से घृणा ही नहीं करना चाहिए, बल्कि ऐसे विचारों को निडर होकर खुलेआम खण्डन भी करना चाहिए, ऐसे नास्तिक लोग बौद्ध धर्म के लिए भारी खतरा हैं।

बाबासाहेब ने भारत में मृत बौद्ध धर्म को पुनर्जीवन किया है वह कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ है, उसी श्रद्धा और इज्जत के साथ उसका संरक्षण और पोषण भी करना चाहिए। धम्म के

आलोचना करके या उसका खण्डन करके कोई उसकी सेवा नहीं कर सकता। बल्कि श्रद्धा, भक्ति और दृढ़ विश्वास के साथ ही संसार में किसी भी धर्म की रक्षा सम्भव हो सकती है। इसलिए थेरवादी बौद्ध विचार धारा वालों को पालि बौद्ध धम्म की आलोचना नहीं करनी चाहिए।

भगवान बुद्ध के सही उपदेश पालि त्रिपिटक में ही मिल सकते हैं, अन्यत्र कहीं नहीं। अतः श्रद्धा के साथ पालि बौद्ध (स्थविरवादी) धम्म का अभ्यास करना चाहिए। वही सच्चा और आदर्शवादी हो सकता है। इसके विपरीत नास्तिकवाद से उलझने से उन्हें न शान्ति मिल सकती है और न सच्चा धर्म ही और न ही हमारे समाज का ही भला हो सकता है।

धर्म के अध्ययन, मनन, प्रचार, चिर-स्थायित्व, विपुलता एवं समृद्धि के लिए बौद्ध संस्कार और संस्कृति की नये सिरे से पुनर्स्थापना की इस समय अत्यन्त आवश्यकता है। इसके लिए भारत के बौद्धों को जीना और मरना होगा। जब तक हम इस काम के लिए कुछ त्याग करने के लिए तय्यार नहीं रहते, तब तक हम बाबा-साहेब के नाम की कोरी रट लगाने वाले ही हो सकते हैं; सक्रिय कार्यकर्ता नहीं।

नाम की रटने में महत्व नहीं, उनके कार्य को करने में महत्व है। इसे प्रत्येक बौद्ध पहचाने, तो भारत में बुद्ध शासन की अभिवृद्धि के लिए मार्ग प्रशस्त हो सकता है। एक धार्मिक और 'विरत्न' के लिए समर्पित भिक्षु होने के नाते मैंने अपनी चिन्ता को यहाँ व्यक्त करने की कोशिश की है। यही एक उपाय है कि—भारत में सर्वत्र बुद्ध शासन के प्रकाशन के लिए (जिसके लिए बाबासाहेब ने हमें आदेश दिया है)।

निष्कर्ष यह है कि विज्ञान धर्म नहीं है। केवल वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संसार का कोई भी धर्म चिरस्थायी बना नहीं रह सकता। अतः धर्म में शत-प्रतिशत वैज्ञानिकता का दावा या माँग हास्यास्पद, दिशाहीन, भ्रान्त कल्पना मात्र है। इसलिए सद्धम्म में

अखण्डित श्रद्धा अत्यन्त आवश्यक है। भगवान तथागत बुद्ध का यह महत्वपूर्ण धम्म अमृतदायक एवं सर्वांगपूर्ण भी है। इसकी महत्ता की कोई सीमा नहीं है। स्पष्ट है मार्क्स का विज्ञानवादी कम्युनिष्ट धर्म बुद्ध धर्म के निकट रहने लायक भी नहीं है। इसलिए उसकी आड़ लेकर हमारे धर्म पर आक्रमण नहीं हो सकता।

मार्क्सवाद का पतन पूर्वी यूरोप में हो चुका है। रोमानिया, रूस, पोलैण्ड आदि से उसकी नींव ही हिल चुकी है। लिथुवानिया, चैकोस्कोवाकिया, अजस्वेजान, हंगरी आदि में भी इसका प्रभाव समाप्ति की ओर है। यह साम्यवादी जहर से अप्रभावित देशों के लिए खुशी की बातें हैं।

डेढ़ लाख ने पार्टी छोड़ी—मार्क्सको २० अगस्त ६०, कम्युनिस्ट पार्टी की रशियन शाखा के प्रमुख के अनुसार जुलाई में १ लाख ६२ हजार ७५० सदस्यों ने पार्टी छोड़ दी। सोवियत संघ के सबसे बड़े गणराज्य रशिया में पार्टी सदस्यों की संख्या ११ लाख हैं। इस प्रकार पार्टी के १/६% सदस्यों ने पार्टी छोड़ दी है।

(नभाटा २१-८-१९६०)

रूस में पूंजीवाद की स्थापना होने जा रही है। कम्युनिस्ट तीर्थ-स्थान रूस तथा अन्य देशों में भी साम्यवादी किले जन आक्रोश के आगे ध्वस्त हो गए हैं। साम्यवाद की अभेद्य दीवारें टूट-टूटकर क्षतिग्रस्त हो गई हैं। यूरोपीय देशों में चल रही परिवर्तन की लहर ने सम्पूर्ण विश्व को अपनी ओर आकर्षित किया है। साम्यवाद के प्रणेता रूस के कदम लड़खड़ा रहे हैं। रोमानिया में साम्यवाद ने रक्तंजित इतिहास छोड़ा है। चीनी तानाशाही ने खून की होली खेलकर क्रूर दमन-चक्र चलाया। मगर प्रबल जन आक्रोश के आगे ढीले पड़ गए।

जर्मनी एकीकरण की प्रक्रिया ने सोवियत संघ, अमेरिका और चीन की नींद उड़ा दी है। उन्हें स्पन्द में नाजीवाद उभरता दिखाई दे रहा है और नाजीवाद की आड़ में अनर्गल प्रलाप कर रहे हैं। जबकि इन महाशक्तियों ने स्वार्थ की पूर्ति के लिए लाखों जनमानस

के साथ खून की होली खेली है। अब भी खेल रहे हैं। अतः निश्चित है कि आगे जाकर विश्व में साम्यवाद रोग विहीन मानवता का उदय होगा, यह अवश्यम्भावी है।

विगत ३२ वर्षों से तिब्बत में १२ लाख से अधिक बौद्धों की हत्या चीनी साम्यवादियों ने की है तथा उसका क्रम अब भी जारी है। इस दर्द भरे समाचार से कोई भी संवेदनशील मानव का दिल कम्पित हुए बिना नहीं रह सकता। तात्पर्य यह है कि साम्यवाद की आड़ लेकर बौद्ध धर्म पर आक्रमण नहीं हो सकता। अगर हुआ भी है, तो उसे यथा समय मिलते ही कुचल देंगे।

माक्सवाद का अगर इस समय उचित उत्तर नहीं दिया गया, अर्थात् हमारे बौद्ध विद्वानों ने इस विषय पर ढिलाई, आलस्य तथा अकर्मण्यता से काम लिया, तो एशिया में बौद्ध धर्म का भविष्य खतरे में पड़ सकता है। इन्हें आज के नवयुवकों को यह समझाना होगा कि बुद्धवाद में सत्य है, वह मानवतावाद से ओत-प्रोत है, अध्यात्मिकता का सागर है और आधुनिक विज्ञान को भी सही दिशा दे सकता है।

भगवान् बुद्ध के वैज्ञानिक धर्म का यह अर्थ नहीं है कि उसमें श्रद्धा, भक्ति, वन्दना, भावना, परित्राण या प्रणिधान के लिए कोई स्थान नहीं है। भारत के मैदानी इलाकों में हजारों वर्ष पहिले ही बौद्ध धर्म समाप्त हो चुका था, किन्तु उस काल के धार्मिकों ने श्रद्धावश जो गुफा, स्तूप और मूर्तियाँ, पर्वत कन्दराओं से खोद रखी हैं, वह नष्ट नहीं हो सकीं।

बिना श्रद्धा के एक भी बुद्ध विहार नहीं बन सकता। अगर नास्तिकवाद ही अलापते रहें, तो कोई भी धर्म अपनी उन्नति नहीं कर सकता। मूर्ति, विहार एवं ध्वज भले ही बाह्य रूप हों; किन्तु अन्दर की ओर प्रवेश के लिए आधार के रूप में इन बाह्य वस्तुओं की अत्यन्त आवश्यकता होती है। उदाहरण—

नारियल में खाद्यवस्तु भीतर होती है, परन्तु छिलका और पोटली के बिना खाद्य वस्तु और जल भीतर ही नहीं टिक सकता,

अथवा गन्ने में रस कम, छिलटा अधिक होता है, किन्तु बिना छिलके के रस टिकना असम्भव है। इसी प्रकार विहार, मूर्ति, ध्वज, बोधिवृक्ष, भिक्षु निवास और त्रिपिटक आदि बाह्य वस्तुओं के बिना पवित्र बुद्ध धर्म कायम रहना मुश्किल ही नहीं असम्भव ही है। इसलिए उपर्युक्त धार्मिक चिन्हों की अवहेलना या उपेक्षा धर्म विरोध माना जायगा। इसे त्याग देना ही सच्चे धार्मिकों की पहचान है; क्योंकि एक की शुद्धि अनेकों की शुद्धि का कारण बन सकती है।

बुद्ध ने स्वयं कहा था कि "अत्तशरण अनन्यशरण एवं स्वयं प्रकाश बनकर विहरो" जो स्वयं प्रकाश बनता है, वह दूसरे को भी प्रकाश के लिए प्रेरणा दे सकता है। जैसे एक तिमिर रोगी के लिए अमावस्या के बाद द्वितीय दिन का चन्द्र दर्शन असम्भव-सा होता है, तो कोई उसे वृक्ष की डाल और पत्ती के बीच से देखने को कहता है, तो उसे चन्द्र दर्शन सम्भव हो जाता है। इसी प्रकार धर्म के बाह्य रूप, मूर्ति, विहार और अन्य धार्मिक चिन्हों की सहायता से भगवान में सहायता परम कारुणिक बुद्ध के धर्म के सही रूप को पहचानने मिल सकती है।

ये बाह्य वस्तुएँ सही धर्म के रूप न होने पर भी यह धर्म के लिए सहायक (प्रत्यय) अवश्य हैं; इसलिए उन सबकी अवहेलना नहीं हो सकती है। ये मूर्ख नास्तिक हमारे धर्म की कितनी ही निन्दा करें, हम एक रत्ती भर भी डिगने वाले नहीं हैं। हम धर्म के साथ ही जीयेंगे और मरेंगे भी। पाप कर्मों की सहायता से जीने के बजाय, धर्म के साथ मरना ही श्रेयस्कर है। किसी ने कहा भी है "धर्मण निधनं श्रेयः नञ्जयं पाप कर्मणि" यह तो स्पष्ट है कि कोई भी अपने स्वीकृत धर्म की उपेक्षा या तिरस्कार नहीं कर सकता, फिर यह नास्तिकवादी अर्ध-बौद्ध किस आधार पर हमारे विश्व विजयी सर्वश्रेष्ठ आर्य धर्म का मजाक उड़ा रहे हैं; समझ में नहीं आता। उनकी यह बचकानेपन की हरकतें धार्मिकों के लिए हास्यास्पद है।

प्रश्न (११) केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को ही मानना चाहिए, अनुमान को नहीं?

उत्तर—केवल प्रत्यक्ष प्रमाण नास्तिकों के लिए है। प्रत्यक्ष प्रमाण भौतिकवादियों का सिद्धान्त है, धार्मिकों के लिए अनुमान प्रमाण को भी मानना अत्यावश्यक है, अन्यथा धर्म ही नहीं चल सकता। उदाहरण—निर्वाण को पृथ्वी के सभी बौद्ध मानते हैं, किन्तु निर्वाण को किसी ने देखा नहीं केवल सुना है, फिर भी विश्वास करना पड़ता है कि निर्वाण है और वह सत्य है। वह मनुष्यों को प्राप्त हो सकता है। अर्थात्—

निर्वाण के प्रवेश के पूर्व उसके बारे में अनुमान करना पड़ता है कि निर्वाण है। जैसे—धुँआ देखकर उसके पीछे अग्नि होने का अनुमान जैसे—रसोईघर, श्मशान और रेल का इंजिन। इन तीनों स्थान पर धुँआ देखकर उसके नीचे अग्नि होने का अनुमान पक्का बनता है या फिर आम को देखकर आम का वृक्ष होने का अनुमान तथा बाढ़ को देखकर कहीं वर्षा होने का अनुमान करना ही पड़ता है। अतः प्रत्यक्ष के लिए उपयोगी अनुमान को माने बिना सत्य की उपलब्धि नहीं हो सकती।

स्पष्ट है कि नास्तिकों के प्रत्यक्ष प्रमाण मात्र से ही सम्पूर्ण सत्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसलिए भगवान तथागत बुद्ध ने प्रत्यक्ष के साथ अनुमान को भी प्रमाण माना है।

कोई भी बाह्य ज्ञान या नास्तिकवाद मनुष्यों के भीतर की अध्यात्मिक आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर सकता। उसकी शान्ति के लिए अध्यात्मवाद की शरण लेना अत्यन्त आवश्यक है। भगवान बुद्ध का अध्यात्म मार्ग विश्व में सर्वश्रेष्ठ है; क्योंकि उसमें प्रत्येक व्यक्ति के लिए श्रेष्ठ दर्शन, अनुभव और आचार का मार्ग प्रशस्त है, जिसकी बराबरी संसार का कोई भी धर्म नहीं कर सकता।

यह सही है कि अनुमान हर जगह सहीं नहीं उतरता हो, किन्तु प्रत्यक्ष के लिए उपयोगी अनुमान सही है। इसीलिए भगवान बुद्ध का अनुमान प्रमाण-तत्व की प्राप्ति के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

अज्ञानियों को कुतर्कों द्वारा बहकाकर धर्म भ्रष्ट करना विद्वता का लक्षण नहीं है। विद्वता का लक्षण वह होता है, जो सभी प्रकार

के ज्ञानी, अज्ञानी, मूर्ख, बाल बुद्धि, विवेकी, अविवेकियों को साथ लेकर चलता हो।

ऊपर बताया है कि निर्वाण प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध नहीं है, उसके लिए हमें अनुमान पर निर्भर रहना होगा। अन्त में अनुमान सत्य के रूप में परिणत होता है। अर्थात् उस व्यक्ति प्रपंच के सर्वोच्च सत्य को प्राप्त कर लेता है। स्पष्ट है कि निर्वाण अनुमान के मार्ग से ही प्राप्त कर सकता है।

बहुत से नास्तिक भगवान बुद्ध के ८४,००० उपदेशों में से सिर्फ एक कलाम सुत्त (अंगुत्तर निकाय) को ही प्रमाण मानकर बाकी ८३,९९९ सूत्रों (उपदेशों) की खिल्ली उड़ाते हैं, उसे बौद्ध कहा जा सकता है? कभी नहीं। कलाम सुत्त विश्व में बुद्धि स्वातन्त्र्य का प्रथम उपदेश था। यह जरूर है, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि बाकी सब त्याज्य है।

भगवान ने यह जरूर कहा था कि तुम्हारी बुद्धि में जो समझ में आता है, वह ले लो, बाकी सब छोड़ दो। इसी आधार पर राहुल सांकृत्यायन जैसे पण्डित ने अपनी पुस्तक "वैज्ञानिक भौतिकवाद" में कहा है कि—“मैं अब भी बुद्ध का ही शिष्य हूँ; क्योंकि बुद्ध ने कहा है कि जो दिमाग में (बुद्धि में) समझ में आता हो, उसे ले लो, बाकी सब छोड़ दो। “मुझे कम्युनिस्ट (साम्यवाद) बुद्धि में आया, इसलिए उसे ले लिया। यह मैंने बुद्ध के उपदेश के अनुसार ही किया है। इसलिए मैं अब भी बुद्ध का शिष्य हूँ।

क्या ऐसे गुमराह नास्तिकों से बुद्ध धर्म की उन्नति की कोई आशा कर सकता है? कभी नहीं। क्या कम्युनिस्ट बौद्ध हो सकता है, कभी नहीं! एक ही सूत्र को भगवान बुद्ध के सम्पूर्ण उपदेश मानना मूर्खता नहीं तो क्या है? सम्पूर्ण बुद्धोपदेश को देखे बिना बुद्ध धर्म समझ में ही नहीं आयेगा। इसलिए बुद्धिवादी कुतर्कों को त्यागकर श्रद्धा और आदरपूर्वक बौद्ध धर्म का अनुकरण करना चाहिए।

सच्ची श्रद्धा में लेशमात्र भी सन्देह या तर्क के लिए गुन्जाइश नहीं रहती है। धर्म में सन्देह या तर्क का स्थान विलकुल न हो।

तभी वे सही अर्थ में धार्मिक कहा जायगा। कुशंका या कुतर्क धर्म के लिए हानिकारक है। सभी तर्क समाप्त होने के बाद ही धर्म में प्रवेश सम्भव है। इस संसार में बिना श्रद्धा या भक्ति के कोई भी धर्म कायम नहीं रह सकता है। हमारे लिए भी यह पूरा सत्य है। तर्क में धर्म नहीं मिल सकता। धर्म केवल श्रद्धा भक्ति और आचार (अनुभव) से ही मिल सकता है। जो कुछ तुम्हारे दिमाग में समझ में नहीं आता है, तो वह सब झूठ कहने का तुमको कोई अधिकार नहीं है। उसे समझने वाले अन्य लोग बहुत होते हैं, उनके लिए छोड़ दो ; क्योंकि इस संसार में हर धर्म में अज्ञानों और अल्प-ज्ञाती ही अधिक हैं ; बुद्धिवादी पण्डित कम हैं।

अज्ञानियों और अल्पज्ञानियों को ध्यान में रखकर साधारण लोगों के मन में भेद या भ्रम उत्पन्न करने वाले धर्म विरोधी कुतर्क न किये जायँ, यही सच्चे धार्मिक के लक्षण हैं। बच्चों की तरह प्रत्येक बातों में बहस या जिद्द करना महामूर्खता का परिचायक है ; पण्डितों का लक्षण नहीं। एक बार बिकने के बाद बार-बार भाव नहीं बोला जाता है।

त्रिरत्न की शरण में जाने के बाद समस्त बहस और कुतर्क समाप्त हो जाने चाहिए। जो तीन रत्न (बुद्ध-धम्म-संघ) हैं, वह असीम महिमा वाले अतुलनीय शक्ति प्रदायक स्रोत हैं, संसार में अन्य किसी से इसकी तुलना नहीं की जा सकती तथा धर्म का स्थान संसार में अन्य कोई वस्तु नहीं ले सकती।

त्रिरत्न की अनन्त महत्ता को नास्तिक नहीं समझ सकता। जो स्रोतापन्न नहीं है या पांचनीवरण जिसके नहीं हटे हैं अथवा जिसने चार आर्य सत्य और अष्टांग मार्ग को नहीं जाना है। वह व्यक्ति और सब-कुछ हो सकते हैं ; किन्तु बौद्ध नहीं। बुद्धिवादियों के कुतर्कों द्वारा लाखों-करोड़ों धार्मिकों को अंधेरे में ढकेलना क्षन्तव्य नहीं है।

निष्कर्ष यह है कि प्राचीन एवं अर्वाचीन बौद्ध विचारकों ने भी व्याय मनीषियों तथा बुद्धिवादियों के तर्कों पर जोर देते हुए भी एक

क्षण के लिए भी अपनी मौलिकता नहीं त्यागी, अपने केन्द्रीय विचार 'निर्वाण' व तत्त्व को बुद्धिगम्य अथवा तर्क द्वारा सिद्ध कभी नहीं किया। वह 'अतककावचरो' बना रहा। उस परमार्थ के बारे में 'आर्य मौन प्रपंचोपशम' ही अन्त तक प्रयुक्त होता रहा। इसलिए कोई भी कुतर्की बुद्धिवाद के बल पर 'अनिर्वाच्य' और प्रत्मात्म वेत्य उस परम पद को प्राप्त नहीं कर सकता। अर्थात् तर्क से कभी भी धार्मिक सिद्धि नहीं मिल सकती।

प्रश्न (१२) परलोक और पुनर्जन्म नहीं है।

उत्तर—परलोक और पुनर्जन्म नहीं कहने वाला बौद्धधर्मी नहीं हो सकता है; क्योंकि बौद्ध धर्म परलोक, पुनर्जन्म, पाप, पुण्य, कर्म, कर्म फल, स्वर्ग-नरक, देवताओं का अस्तित्व मानकर ही चल सकता है। इनमें से एक भी नहीं मानने पर वह सच्चा बौद्ध नहीं हो सकता। हाँ विकृत बौद्ध अवश्य बन सकता है इससे अधिक कुछ नहीं।

अगर पुनर्जन्म नहीं है, तो भिक्षु बनना, शील ग्रहण करना, विहार का निर्माण, त्रिशरण का उच्चारण, उपोस्थव्रत एवं सूत्रपाठ आदि सब-कुछ निरर्थक हो जाता है। अगर यह सब बेकार है तो बौद्ध संस्कृति किस चिड़िया का नाम है।

क्या बिना संस्कृति के भी कोई धर्म सम्भव है? अज्ञानियों को समझाने और शील में प्रतिष्ठित करने के लिए भगवान् सम्यक सम्बुद्ध ने जातक कथा आदि अनेक कहानियाँ एवं रूपक, त्रिपिटक में शामिल किये हुए थे। जो नास्तिक यह कहे कि जो-कुछ उसकी बुद्धि में आता है, वह ही सत्य है और जो उसकी बुद्धि में नहीं आता, वह सब असत्य। अर्थात् जो तत्त्व नास्तिक बुद्धि से परे है, वह सब झूठ क्यों? ऐसा हो सकता है।

इसका अर्थ यह हुआ कि एक होटल में पच्चासों प्रकार के व्यंजन मौजूद हैं, तो वहाँ कोई कहे कि लड्डू ही ठीक है बाकी सब बेकार है या इडली-दोसा ही ठीक है, बाकी सब बेकार है। अथवा भुजिया-पूरी, हलवा आदि पदार्थों में जो जिसको पसन्द है; रुचता है, पचना

है, वह उसके लिए ठीक है और अच्छा है। इसका अर्थ यह नहीं है कि अन्य खाद्य पदार्थ जिसमें अनेक प्रकार के खाद्य और पेय सामग्रियाँ एवं वस्तुएँ शामिल हैं सब व्यर्थ हैं या फेंक देने योग्य हैं। ऐसा कोई समबुद्धि वाला नहीं कह सकता। हाँ कोई पागल व्यक्ति इस प्रकार के प्रलाप अलाप सकता है।

इसी प्रकार परलोक न मानने वाले नास्तिकों का भी दावा है। यह ठीक नहीं है; बिना विश्वास और श्रद्धा के कोई धर्म सम्भव नहीं है। समस्त विश्व के धर्म केवल विश्वास एवं श्रद्धा पर टिके हुए हैं। यह मैं पहिले प्रकरण में भी लिख चुका हूँ, आगे भी समायोचित उल्लेख करना ही पड़ेगा। अब इस मूर्ख प्रलाप को तुरन्त समाप्त कर देना चाहिए।

अतः परलोक और पुनर्जन्म पाप, पुण्य, स्वर्ग, नरक, कर्म, कर्मविपाक एवं देवताओं को मानकर ही सच्चा बौद्ध धर्म चल सकता है; नास्तिकवाद से नहीं। अतः बौद्ध संस्कृति को नष्ट करने पर तुले हुए नास्तिक बुद्धि वाले मूर्खों का पक्ष धर्मवादियों के लिए स्वागत योग्य नहीं है। उसका डटकर विरोध होना चाहिए। अन्यथा इन बुद्धिवादियों द्वारा हमारे धर्म पर आक्रमण करके उसे नष्ट करने का षडयंत्र, जो बहुत दिनों से चल रहा है, आगे और भी बढ़ता जायगा। इसे तुरन्त समाप्त किये जाने की दिशा में पक्के बौद्धधर्मियों को आगे आना चाहिए।

इन धूर्त और अधर्मी नास्तिकों ने कुतर्क करके अबोध जनता को धोखे में रखा है। इसलिये महाराष्ट्र में धर्म परिवर्तन के ३५ वर्ष बाद भी २% भी धार्मिक नहीं बन सके हैं, यह बहुत बड़ी शोचनीय परिस्थिति है। अब आगे यह सिलसिला जारी रखना आत्मघाती प्रक्रिया होगी। इसे तुरन्त समाप्त किया जाना चाहिए।

कुतर्क और धर्म में अविश्वास, अश्रद्धा और अज्ञान समाप्ति की दिशा में कार्य करना चाहिए। अगर इस धर्म को कायम रखना है, आगे बढ़ाना है। सारे भारत के सब प्रकार के लोगों को इसमें

शामिल करना है, तो निश्चय ही परलोक और पुनर्जन्म को मानकर ही सम्भव हो सकता है।

नास्तिक बुद्धि वाले सूखा तर्कवाद करके निकल जायेंगे, किन्तु धार्मिक व्यक्ति को ऐसा करना सम्भव नहीं है; क्योंकि उसे आचार, विचार, शील, उपोस्थ, परित्राण, भिक्षु और बौद्ध धर्म के संस्कार आदि लगन से सीखने ही पड़ेंगे। अन्यथा अगली पीढ़ी के लिए वह धर्म के नाम पर क्या देंगे ?

पीढ़ी-दर-पीढ़ी से उत्पन्न रूढ़ी से ही धर्म कायम रहता है। यह संसार के सभी धर्मों के लिए लागू है। अतः धर्म के उपासकों के लिए पुनर्जन्म और परलोक में विश्वास रखना अत्यन्त आवश्यक है।

अगर कोई नास्तिक सवाल करे कि पुनर्जन्म है। इसका प्रत्यक्ष में क्या प्रमाण है ?

उत्तर—यही लोक है, ये ही परलोक होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। यही लोक है, तो परलोक भी है। बिना परलोक के लोक होना भी सम्भव नहीं है। पुनर्जन्म की स्थापना के लिए कुछ प्रत्यक्ष उपमायें नीचे दी जाती हैं—

(१) जैसे एक लकड़ी जलकर नष्ट हो जाती है, तो उसी में से कोयला उत्पन्न हो जाता है। कोयले की आवश्यकता लकड़ी को नष्ट नहीं देखती, वे कोयले की उत्पत्ति ही देखती है।

(२) कोयला जलकर समाप्त होने के बाद राख उत्पन्न होती है। राख की आवश्यकता न लकड़ी देखती है, न कोयला ही देखता है, वह सिर्फ राख की उत्पत्ति देखते हैं।

(३) एक का अन्त दूसरे की उत्पत्ति का कारण बनता है। वस्तुएँ रूप बदलती ही रहती हैं। कभी नष्ट नहीं होती हैं।

(४) संसार की प्रत्येक वस्तु क्षण-क्षण परिवर्तनशील प्रवाह के रूप में रूपान्तरित होती रहती है।

(५) अनादिकाल से उत्पत्ति, नाश या आविर्भाव-निरोभाव, उदय-व्यय (अस्तमन), संकोच और विकास, संवर्त-विवर्त यह सभी रूपान्तर शब्दों के पर्याय हैं।

(६) दूध मर जाता है, उसी में से दही उत्पन्न होता है ; दही से घी और मूठा पैदा होता है, घी से सर्पिष (घी के कीट) उत्पन्न होते ही रहते हैं। इसे रूपान्तर संज्ञा कहते हैं। एक के अन्त से दूसरे की उत्पत्ति मिद्ध है।

(७) गेहूँ के मरने के बाद आटा पैदा होता है। आटे के मरने के बाद रोटी उत्पन्न होती है। रोटी मरने के बाद पाखाना बन जाती है। इसे ही कार्य-कारण परम्परा कहते हैं।

कार्य-कारण परम्परा का दूसरा नाम बौद्धों की भाषा में 'प्रतीत्य समुत्पाद' है। अर्थात् उत्पत्ति ही विनाश है और विनाश ही उत्पत्ति है। यानि समस्या के भीतर ही समाधान मौजूद है या कार्य के अन्दर ही कारण मौजूद है।

प्रतीत्य खतम होकर उसी में समुत्पाद (उत्पाद) होना, प्रतीत्य समुत्पाद है। यह बुद्ध धर्म का प्रमुख दर्शन है। यह १२ कड़ी में विज्ञानचित्त, निर्वाण पयन्त सहस्रों जन्मों में घूमता ही रहता है। यह आन्तरिक चेतना या पंच स्कन्ध (रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान का समूह निर्वाण तक जन्म और मरण क चक्कर में घूमता ही रहता है। उसका क्रम इस प्रकार है—

(१) अविद्या, (२) संस्कार, (३) विज्ञान, (४) नाम-रूप, (५) षडा-यत्न, (६) स्पर्श, (७) वेदना, (८) तृष्णा, (९) उपादान, (१०) भव, (११) जाति, (१२) जरामरण में चक्कर काटता है। इसे ही 'द्वादशांगी प्रतीत्य समुत्पाद दर्शन' कहते हैं।

अतः स्पष्ट हो गया है कि परलोक और पुनर्जन्म को न मानने पर वह बौद्ध धर्मी नहीं हो सकता। इसलिए जल्दी-से-जल्दी इन नास्तिकवादों से मुक्त होने की कोशिश होनी चाहिए। सच्ची श्रद्धा के साथ धम्म के अनुगामी बनने का प्रयत्न करें तो इससे खुद की और दूसरों की भी धार्मिक उन्नति हो सकेगी।

लौकिक अवरोध के बादल बिखर जाते हैं और अलौकिक सुख के सूरज की नई रोशनी उदय अवश्य होती है। इसलिए श्रद्धा के साथ त्रिस्तन की सेवा में हमेशा तत्परता से तैयार रहना चाहिए ;

यही पक्के धार्मिक का लक्षण है। अतः कोई भी जड़वाद या विज्ञानवाद तथागत भगवान बुद्ध के सद्धर्म को प्रभावित नहीं कर सकता; क्योंकि भगवान सम्यक सम्बुद्ध विभक्तवादी थे।

पंच-स्कन्धों की सहक्रिया को पुङ्गल (जीव) कहते हैं। भगवान ने इन पंच स्कन्धों को विभक्त करके उपदेश किया है। यह प्रत्यात्म वेत्थ धर्म है, अर्थात् स्वयं अपने अन्दर दृष्टि से जानने योग्य है।

भगवान के समय एक घोर नास्तिक राजा था। उसका नाम 'पायासी' था। एक दिन भगवान के शिष्य श्रेष्ठ भिक्षु कुमार कश्यप उसके पास गये, तो अनेक सहलापों के बाद राजा ने कहा—हे कश्यप ! न यह लोक है, न परलोक ही। भिक्षु ने उत्तर दिया राजन् ! तुम क्या सूर्य और चन्द्र को देख रहे हो ? हाँ भन्ते ! देखता हूँ; भिक्षु ने कहा। सूर्य और चन्द्र इस लोक में हैं या परलोक में ? कश्यप परलोक में। फिर तुम कैसे कहते हो परलोक नहीं है।

इस प्रकार और भी अनेक युक्तियों द्वारा भिक्षु ने उस नास्तिक राजा का मुँह बन्द कराकर निरुत्तर कर दिया था उन सबके विस्तार के लिए देखें—“(पायासी राजन्य सुत्त दीघ-निकाय)।”

पुनर्जन्म के लिए ३ प्रकार के शरीरों की आवश्यकता होती है—
१. स्थूल शरीर, २. मनोमय शरीर, ३. अरूप शरीर। स्थूल शरीर रूपी चार महाभूतों से बना कबलीकार आहार से बनता है। मनोमय शरीर रूपी मनोमय सर्व आहार, सर्व अंग, प्रत्यंग वाला, इन्द्रियों से परिपूर्ण शरीर है। अरूप—(अभौतिक) शरीर अरूप (देवलोक) में संज्ञामय होना अरूप शरीर है।

पोठ्ठपाद ! मैं स्थूल शरीर परिग्रह से छूटने के लिए धर्म उपदेश करता हूँ। इस तरह मार्गारूढ हुआ के चित्तमल उत्पन्न करने वाला संक्लेशिक धर्म छूट जायगा। पोठ्ठपाद ! मैं मनोमय शरीर परिग्रह के परित्याग के लिए भी धर्म उपदेशता हूँ, जिससे मार्गारूढ होने वालों का संक्लेशिक धर्म छूट जायगा। इसी प्रकार मैं अरूप शरीर परिग्रह परित्याग के लिए भी धर्मोपदेश करता हूँ, जिससे मार्गारूढ वालों का संक्लेशिक धर्म छूट जायगा।

(पोठ्ठपाद सुत्त दीघ निकाय)

कर्म-विपाक को न मानने पर मज्झिम निकाय के चूल कम्म विभंग सुत्त (३-४-५) तथा महाकम्म विभंग सुत्त (३-४-६) भी झूठ हो जायेंगी ।

इस सम्बन्ध में परमपूज्य विदर्शनाचार्य, त्रिषिटक वागीश्वर, महा संघनायक, अखिल भारतीय भिक्षु संघ तथा इन पंक्तियों के लेखक की प्रव्रज्या एवं उपसम्पदा गुरु भदन्त 'आनन्द मित्र महा-स्थविर पाद' द्वारा आज से २१ वर्ष पूर्व जुलाई १९७० को सारनाथ की "धर्मदूत" नामक मासिक पत्रिका में लिखे गये एक लेख के कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत करना चाहता हूँ—

“समुद्र में लहर उठती एवं गिरती है और पुनः उठती है । अब प्रश्न यह है कि जो लहर गिरी है, क्या वही लहर पुनः उठती है या उससे भिन्न एक दूसरी लहर उठती है ? जो लहर गिरी, वही लहर उठी, यह कहना गलत होगा और उस लहर को सम्पूर्ण रूप से त्यागकर भिन्न एक दूसरी लहर उठी ; यह कहना भी गलत होगा । इतना तो सत्य है कि जो लहर गिरी, उसका विनाश हुआ । परन्तु विनाश के साथ उसने एक वेग या शक्ति को जन्म दिया, जिस शक्ति के सहारे एक और लहर उठी । इसलिए जो लहर उठी, वह पहले वाली लहर नहीं है परन्तु यह सम्पूर्ण रूप में उससे भिन्न भी नहीं है । अपितु पूर्व की लहर के सहारे एक दूसरी लहर मात्र है ।

जो इस उपमा को ठीक-ठीक समझ सकेंगे, उनके लिए अनित्य सत्ता के पुनर्जन्म के समझने में कठिनाई नहीं होगी । जब अनित्य सत्ता की मृत्यु होती है, तब जीवनी शक्ति के साथ-साथ चित्त सन्तति भी निरुद्ध होती है । अपनी समाप्ति के समय वह जिस शक्ति या संस्कार को छोड़ जाती है, उसी के द्वारा नवीन सत्ता की उत्पत्ति होती है । वह पहले वाली सत्ता भी नहीं है और सम्पूर्ण रूप से भिन्न दूसरी सत्ता भी नहीं है । 'मिलिन्द प्रश्न' नामक ग्रन्थ में इसे विविध युक्तियों तथा उपायों द्वारा समझाया गया है । जिज्ञासु व्यक्ति उसे देख सकते हैं ।

सुना है कोई-कोई पाण्डित्य के अभिमानी, अज्ञानी व्यक्ति अपने

को बौद्ध कहकर अहंकार करते हैं, परन्तु पुनर्जन्म को स्वीकार नहीं करते हैं। सत्य यह है कि बिना पुनर्जन्म को स्वीकार किये, कोई भी बौद्ध नहीं हो सकता है। पुनर्जन्म अस्वीकार करने से बुद्ध, धर्म और संघ को अस्वीकार करना है।

सिद्धार्थ गौतम बुद्धत्व प्राप्ति की रात्रि के प्रथम याम में प्रथम विद्या (जाति स्मर ज्ञान) द्वितीय याम में द्वितीय विद्या (च्युति उत्पत्ति ज्ञान) एवं तृतीय याम में तृतीय विद्या (आस्त्रव क्षय ज्ञान) लाभ करने के पश्चात् बुद्ध हुए। इस कारण बुद्ध 'विद्याचरण सम्पन्न' हैं।

पुनर्जन्म के अस्वीकार करने से उनकी तीन विद्याओं को भी अस्वीकार करना पड़ेगा। बुद्ध द्वारा उपदेशित प्रथम उपदेश 'धर्म चक्र प्रवर्तन सूत्र' में कहा गया है—'अयं अंतिमा जाति नत्थिदानि पुनब्भवो (यह मेरा अन्तिम जन्म है, मेरा अब और जन्म नहीं होगा)।

गुण धर्म की पूर्णता साधन के माध्यम से सात असंख्य कल्प मानसिक रूप से एवं नौ असंख्य कल्प वाक द्वारा प्रार्थना करने के पश्चात् जब मनुष्यत्व और लिंग सम्पत्ति आदि आठ सम्पत्तियों से समन्वित हुए, तभी दीपंकर बुद्ध से वर प्राप्त करके गौतम 'बोधिसत्त्व' हुए। पुनर्जन्म के अभाव में यह सभी बातें मिथ्या सिद्ध होती हैं।

प्रज्ञा, श्रद्धा और वीर्य प्रमुख भेदों के कारण बोधिसत्त्व तीन प्रकार के होते हैं। प्रज्ञाप्रधान बोधिसत्त्व को चार असंख्य कल्प और एक लाख कल्प। श्रद्धा प्रधान बोधिसत्त्व को आठ असंख्य कल्प और एक लाख कल्प तथा वीर्य प्रधान बोधिसत्त्व को सोलह असंख्य कल्प और एक लाख कल्प पारमिता या गुण धर्म की साधना करनी पड़ती है। अतः पुनर्जन्म में अनास्था रखने से यह सभी झूठ प्रमाणित होता है। इस प्रकार बुद्धों को अस्वीकार करना होता है।

अग्र श्रावक को एक असंख्य कल्प और एक लाख कल्प तथा महाश्रावक को एक लाख कल्प पारमिता पूर्ण करनी पड़ती हैं। यह

सब भी पुनर्जन्म न मानने से मिथ्या प्रमाणित होती है। श्रावक संघ में स्रोतापन्न को अधिक-से-अधिक सात बार, सकृतागमी को एक बार कामलोक में उत्पन्न होना पड़ता है। अनागमी को कामलोक में नहीं आना पड़ता है। वह ब्रह्मलोक में उत्पन्न होता है, यह शास्त्रोक्ति भी मिथ्या प्रमाणित होती है। इस प्रकार संघ को भी अस्वीकार करना पड़ता है।

पुनर्जन्म को अस्वीकार करने से शास्ता के नवांग शासन में से जातक अंग का बहिष्कार करके अष्टांग विधान करना पड़ेगा। दीर्घ, मज्जिम, संयुक्त, अंगुत्तर और खुदक निकायों के शत-शत सूत्रों में एवं अभिधम्म के विभिन्न अंशों में पुनर्जन्म, जाति स्मर ज्ञान और च्युति उत्पत्ति के विषय में जो कुछ कहा गया है, उन सब सूत्रों एवं अभिधर्म के उन अंशों का भी बहिष्कार करना पड़ेगा।

बुद्ध का मूल और प्रधान धर्म 'प्रतीत्य समुत्पाद' और चार आर्य सत्यों में द्वितीय तृतीय और चतुर्थ आर्य सत्यों का भी बहिष्कार करना पड़ेगा। प्रतीत्य समुत्पाद सूत्र में अतीत और भविष्य के जन्म के विषय में कहा गया है। बुद्ध ने अतिकठिन साधन बल के जन्म, जरा, व्याधि और मृत्यु आदि से मुक्ति पाने के लिए जिस आर्य अष्टांगिक मार्ग का आविष्कार किया है वह सम्पूर्ण रूप से नष्ट हो जायगा। शील, समाधि और प्रज्ञा निरर्थक हो जायगी। दान, प्रदान या कोई भी पुण्य कर्म, सम्पादन एकदम व्यर्थ हो जायगा। भिक्षु बनने का प्रयोजन बेकार हो जायगा; क्योंकि पुनर्जन्म न होने से मृत्यु के बाद पापी, पुण्यवान सभी स्वाभाविक रूप से समस्त दुःखों से मुक्ति पाकर निर्वाण को प्राप्त होंगे।

इस प्रकार धर्म को भी अस्वीकार करना पड़ता है। इससे हम चार्वाक के 'लोकायतवाद' की ओर अग्रसरित होते हैं। चार्वाक के अनुसार यावत् जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा धृतं पिबेत्, भस्मी भूतस्य देहस्य पुनरागमनं कृतः ? अर्थात्-जितने दिन जीवित रहो ऋण लेकर भी घी आदि पीकर आनन्द का जीवनयापन करो। शरीर के नष्ट हो जाने और भस्म हो जाने के बाद पुनर्जन्म कहाँ से होगा !

बौद्धशास्त्र में नियत और अनियत के आधार पर दो प्रकार की मिथ्या-दृष्टि का उल्लेख किया गया है। उनमें से नियत मिथ्या-दृष्टि महा दोषपूर्ण और अत्यन्त दुःखदायक है। इसके तीन भाग—अहेतुक, अक्रिया एवं नास्तिक हैं। प्राणियों की उत्पत्ति में कुशला-कुशल कर्म रूपी कोई हेतु नहीं है ; ऐसा विश्वास करना अहेतुक दृष्टि है। जगत में पाप-पुण्य कोई चीज नहीं, ऐसा विश्वास करना अक्रिया दृष्टि है और कुशला-कुशल कर्म का फल नहीं, यह विश्वास नास्तिक दृष्टि कहलाती है। नास्तिक दृष्टि १० प्रकार की है—

१. दुःखी को दान देने से कोई लाभ नहीं।
२. निमन्त्रण देकर दान देने से कोई फल नहीं।
३. गुरुजन, शीलवान और सत्पुरुषों को दान देना निरर्थक है।
४. अच्छे-बुरे कर्मों का कोई फल नहीं।
५. माता-पिता की सेवा करने से कोई लाभ नहीं।
६. मृत्यु के बाद पुनर्जन्म नहीं होता।
७. यह लोक नहीं (परलोकवासियों के लिए) है।
८. स्वर्ग-नरक एवं अन्य विश्व आदि परलोक नहीं हैं।
९. ऐसा कोई श्रमण, ब्राह्मण नहीं, जो अपने ज्ञानबल से परलोक देखकर उसका प्रकाश कर सके।

शास्त्र में कहा गया है कि मातृ हत्या, पितृ हत्या, अर्हत हत्या, द्वेष चित्त के कारण बुद्ध देह से रक्त बहाना, संघ भेद और मिथ्या दृष्टि। ये छः महापाप अकुशल गुरु कर्म और महापाप कर्म हैं। इनमें किसी के पास एक भी है, तो उसे नरक जाना पड़ता है। इनमें से नियत मिथ्या दृष्टि का त्याग मृत्यु के पूर्व भी किया जा सकता है। इसी कारण से इसे आन्तरिक कर्म के अन्दर ग्रहण नहीं किया गया है। परन्तु इसे छः महापापों में सबसे महान् पाप कहा गया है। बुद्ध ने कहा है—‘नाहं भिक्खवे अञ्जं’ एकं धम्माम्पि समनुपस्सति यं एवं महा सावज्जं यथिदं भिक्खवे मिच्छादिठ्ठि मिच्छा दिठ्ठि परमानी भिक्खवे वज्जानीति। (भिक्षुओं ! मिथ्या दृष्टि के समान

दोषपूर्ण दूसरा धर्म नहीं देखता हूँ। अनिष्टकारी सभी धर्मों में मिथ्या दृष्टि सबसे बुरी है।

सम्यक् दृष्टि पाकर सभी सुखी हों—पुनर्जन्म नहीं है, तो लामा-पन्थी तांत्रिक बौद्ध चार वर्ष की आयु में ही बालक को पुनर्जन्म के आधार पर दिवंगत लामा का अभिषेक क्यों करते हैं। ये लोग मरते समय गर्म लोहे से एक दाग हाथ में लगा देते हैं, तो जहाँ मृतक का जन्म हुआ हो, उस बच्चे को हाथ में भी उसी स्थान पर दागी हुई निशानी स्पष्ट देखी जा सकती है। इस आधार पर भी पुनर्जन्म है, यह स्पष्ट है।

मनुष्यों को अपने दुराचार सुधारने के लिए एक अवसर के रूप में पुनर्जन्म का सिद्धान्त बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। उन्हें अपने सभी दुराचार त्यागकर भविष्य में सुख प्राप्ति के लिए चरित्र सुधारने का अवसर प्राप्त होता है। इस दृष्टि से भी पुनर्जन्म का सिद्धान्त स्वागत योग्य है।

मनुष्यों की सभी इच्छायें एक ही जन्म में पूरी नहीं हो सकतीं। इच्छाओं की पूर्ति के लिए बार-बार जन्म लेना अनिवार्य है, जब तक उसे निर्वाण प्राप्त नहीं होता। अधिक विस्तार के लिए मेरे द्वारा लिखे गये “बौद्ध शून्य योग” नामक ग्रन्थ अवलोकनीय है। उस ग्रन्थ में मैंने अनेक युक्तियों द्वारा पुनर्जन्म होना सत्य है; सिद्ध किया है।

डॉ० लक्ष्मण प्रसाद मेहरोत्रा का कहना है कि—मैंने खुद ऐसे केस देखे हैं और उनको जांचा है। इसके अलावा मेरी मान्यता है कि एक आदमी की चार सन्तानें एक ही माहौल में बड़ी होती हैं, तो उनमें से एक इंजीनियर, एक वैज्ञानिक, एक कलाकर, एक आवारा कैसे बन जाते हैं। जरूर इसमें पुनर्जन्म के संस्कारों का ही असर होता होगा ! लेकिन इसको हम केवल तथ्यों के आधार पर ही सिद्ध कर सकते हैं ; क्योंकि मरे हुए आदमी के पास हम जा नहीं सकते। इसलिए अप्रत्यक्ष प्रमाणों से ही पुनर्जन्म की बात साबित कर सकते हैं और पुनर्जन्म को मानने का सबसे बड़ा फायदा होगा कि इन्सान गलत काम नहीं करेगा। (नवभारत टाइम्स बम्बई—२३-१२-१९६०)

प्रश्न (१३) हमने सभी पुराने हिन्दू देवी-देवताओं को त्याग दिया है ।

उत्तर—कुछ नास्तिकों का कहना है कि हमने सभी पुराने देवी-देवताओं को त्याग दिया है ; किन्तु सुनने में आया है कि विदर्भ क्षेत्र में कुछ बौद्ध उपासक ऐसे हैं कि जिनके शरीर में बुद्ध, सारिपुत्र और अम्बेडकर आते हैं । इस आवेश में अनेक विचित्र बातें (जुँट-पटाँग) सुनाकर लोगों को गुमराह कर रहे हैं । कहीं-कहीं तो अम्बेडकर शरीर में आने पर अंग्रेजी में बातें करने लगते हैं । कहीं-कहीं तो नाग देवता शरीर में आते हैं । ऐसे एक व्यक्ति को मैं जानता हूँ ! उस पर नागदेवता आते हैं और कहते हैं कि नागों ने ही बौद्ध धर्म का प्रचार किया था । वह व्यक्ति विदर्भ का ही है और बम्बई की एक बैंक में क्लर्क है ।

सच कहा जाय तो आज भी नव-बौद्धों में ७५% लोग हिन्दू देवी-देवताओं के प्रभाव से मुक्त नहीं हो सके हैं, कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । जैसे महाराष्ट्र में तुलजा भावनी, सन्तोषी माता, येल्लम्मा, टेम्बी आई, लक्ष्मी आई, एड्डे आई, मरी आई, मार खाई, नवसरी देवी, कालुबाई, नायकोबा ज्योतिबानाथ महाराज और भी देवियाँ तथा साईबाबा, खण्डोबा, मसोबा विठ्ठाबा, काल भैरवा तथा अनेकों मुसलमान पीरों की भक्ति करते हुए देखे जाते हैं । २५% शिक्षित लोग जो अर्ध-नास्तिक हैं, वे इससे अच्छे अवश्य हैं ।

एक छोटा-सा उदाहरण प्रस्तुत है—एक बौद्ध उपासक ने मुझे तीन पत्र भेजे हैं । भेजने वाले का पता है— एल. आर. पगारे, अहिरे मास्टर चाल नं. १२४१, मनमाड, नासिक (महाराष्ट्र) । पत्र की शुद्धता है—

‘नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मा सम्बुद्धस्स’ नमो भीमाय, नमो माता रमा आई, नमो कबीर महाराज, नमो महात्मा फूले, नमो भन्ते जी । यह पत्र २५-६-१९८६ का है । अगर किसी को शंका हो तो पत्र मेरे पास सुरक्षित है, आकर देख सकते हैं । इसका मतलब

यह हुआ कि पुराने देवी-देवताओं के स्थान पर नये देवताओं को चुना गया है और भविष्य में भी इन लोगों में अनेक देवता उत्पन्न होते ही रहेंगे।

वैसे तो भीमाबाई, रामजी सकपाल, रमाबाई, यशवन्तराव अम्बेडकर को अब से ही देवता बनाने की शुरुआत हो चुकी है। इन सब नये देवी-देवताओं के चित्र एक पालकी में रखकर बम्बई से सतारा तक ३०० किलोमीटर दूरी की एक धम्म यात्रा या भीमाईची यात्रा भी हो चुकी है। इसके संयोजक बम्बई के माने हुए बौद्ध नेता कहलाने वाले आर० एन० चौहान थे। यह पालकी यात्रा १९८६ के मई महिने में हुई थी। उसके पूर्व भी १९८८ के अप्रैल में भीम यात्रा उन्होंने ही निकाली थी।

इसी प्रकार समय बीतते-बीतते अनेकों देव उत्पन्न होते ही रहेंगे। अन्त में आज के तन्त्रयानियों की तरह सैकड़ों देव और देवियाँ भी पैदा हो जाना निश्चित है। ३५ वर्ष के अन्दर इतने सारे देवता उत्पन्न हो सकते हैं, तो २०० वर्ष बाद क्या होगा ! आसानी से अन्दाजा लगाया जा सकता है ; क्योंकि अब से ही भीमाबाई, रमाबाई, सबिताबाई, मीराबाई आदि कितनी देवियों की पूजा शुरू हो चुकी है। इसके बाद देवों की रचना होगी। न जाने भविष्य में ऐसे कितने नये नये देवता उत्पन्न होंगे। इसके बारे में अभी ठीक अनुमान नहीं किया जा सकता।

इससे यह स्पष्ट है कि ये लोग हिन्दु धर्म के अन्धकूप से बाहर निकलने में तत्काल असमर्थ हैं। अनुमान है सैकड़ों वर्षों तक ऐसा होता रहेगा ; क्योंकि बौद्ध धर्म के आचार पक्ष, नैतिक पथ तथा बौद्धिक स्तर तक की ऊँचाई में पहुँचने में अपवाद स्वरूप छोड़कर बाकी लोग ३५ वर्ष बाद भी अयोग्य रहे हैं। पूर्ण धार्मिक बनने के लिए कम-से-कम पाँच पीढ़ियाँ अर्थात् २०० वर्ष लग जाना निश्चित है।

अयोध्या के राम मन्दिर की कार सेवा करने गये बौद्धों के बारे में 'नव-शक्ति' नामक मराठी पत्र में इस प्रकार दिया है—बम्बई के

उपनगर जोगेश्वरी पूर्व में प्रताप नगर के ३ बौद्ध कार सेवा के लिए अयोध्या गये हैं। १. दिलीप श्रीधरचारी (३५ वर्ष), २. विनीत तात्या जाधव (२७) तथा ३. शेखर श्रीधर महाडिक (२८) नवशक्ति मराठी दैनिक, बम्बई (६-११-१९६०)। नव-बौद्ध बम्बई के ऐसे होते हैं।

आश्चर्य इस बात का है कि यही लोग हमारे पालि त्रिपिटक में वर्णित देवताओं का इनकार कर रहे हैं। अगर पालि त्रिपिटक में वर्णित सब देवता झूठ हैं, तो 'धम्म चक्कप्पवत्तन' के दिन भगवान् बुद्ध का प्रथम उपदेश २२ स्वर्ग लोकों के देवताओं तक सुनने का उल्लेख 'धम्म चक्कप्पवत्तन सुत्त' (विनय पीटक के महावग्ग) में उल्लेख है। क्या यह असत्य है? कोई भी पक्का बौद्ध इसे असत्य मानने के लिए तय्यार नहीं होगा।

धम्म चक्कप्पवत्तन सुत्त में जिन देवलोकों तक भगवान् का उपदेश पहुँचने का विवरण है, वह पूरा स्थविरवादी बौद्ध परम सत्य मानते हैं। अर्थात् देवता और पुनर्जन्म नहीं मानेंगे, तो वे सच्चे बौद्ध धर्मी नहीं हो सकते; क्योंकि बिना देवता के एक भी गाथा नहीं पढ़ सकते, ज्यादातर सभी गाथा एवं सूत्रों में पहिले ही देवताओं का उल्लेख होगा। अर्थात् बौद्ध धर्म के तीनों यानों (हीनयान, महायान, तन्त्रयान) को मानने वालों के लिए देवता और पुनर्जन्म मानना अत्यन्त आवश्यक है। अगर कोई नास्तिक अपनी जिद्द के कारण परलोक, पुनर्जन्म और देवताओं को नहीं मानता है, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि देवता, परलोक और पुनर्जन्म होता ही नहीं।

वैसे तो परलोक, पुनर्जन्म और देवताओं को प्रत्यक्ष प्रमाणों द्वारा सिद्ध नहीं किया जा सकता है। इसलिए भगवान् तथागत बुद्ध ने इन प्रश्नों को अव्याहृत (अकथनीय) कहकर इसकी उपेक्षा की है। अर्थात् इन प्रश्नों का ठीक उत्तर नहीं है कि—

(१) क्या मैं अतीत काल में था? (२) क्या मैं अतीत काल में नहीं था? (३) मैं अतीत काल में कैसा था? (४) मैं अतीत काल में क्या था? (५) मैं अतीत काल में क्या होकर क्या हुआ था?

(६) क्या मैं भविष्य काल में होऊँगा ? (७) मैं भविष्य काल में क्या होऊँगा ? (८) क्या मैं भविष्य काल में नहीं होऊँगा ? (९) मैं भविष्य काल में कैसा होऊँगा ? (१०) मैं भविष्य काल में क्या होकर क्या होऊँगा ?

(अग्निवच्छगोत सुत्त मज्झिम निकाय तथा पोठपाद सुत्त दीघ निकाय)

उपर्युक्त प्रश्न सोचना, पूछना और विचारना निरर्थक हैं। क्योंकि इन तमाम प्रश्नों का ठीक उत्तर आज तक किसी के पास नहीं है। इसलिए परलोक, पुनर्जन्म एवं देवता आदि पर वाद-विवाद, तर्क-वितर्क करना, विकृत मस्तिष्क वाले पागलों के लिए छोड़ देने को कहा है ; क्योंकि भगवान का कहना है कि इन प्रश्नों का उत्तर हां या ना में ठीक-ठीक नहीं दिया जा सकता और इन प्रश्नों से वैराग्य नहीं होता, निरोध नहीं होता, शान्ति नहीं मिलती। धर्म के लिए उपयोगी नहीं हैं। शील या समाधि का भी प्रयोजन नहीं है। इसलिए ही भगवान द्वारा इन प्रश्नों को मना किया है। ये प्रश्न पूछना, सोचना और इसका उत्तर देना भी व्यर्थ है।

प्रश्न (१४) बुद्ध मूर्ति तथा हिन्दू मूर्ति में क्या अन्तर है ?

उत्तर—हिन्दू भी मूर्ति पूजा करते हैं और बौद्ध भी। फिर इनमें फर्क क्या है ? ऐसा सवाल नास्तिकों का उचित ही है, किन्तु उसके लिए हमारे पास बहुत से प्रमाण हैं, जो उत्तर के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं—(१) हिन्दुओं की मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा होती है। जैसे—प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान नाम के पाँच प्राणों का आह्वान किया जाता है। उसके बाद उस मूर्ति को एक जीवित प्राणी का रूप देते हैं। किन्तु बौद्धों की मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा नहीं होती है, वह केवल एक जड़-मूर्ति ही समझते हैं।

(२) हिन्दू मूर्ति से भक्तों के शरीर में देवता का प्रवेश होता है। बौद्धों की मूर्ति में ऐसी कोई बात नहीं होती है।

(३) बौद्ध विहारों में कोई पण्डा, पुजारी आदि दलाल नहीं होते हैं। हिन्दुओं के मन्दिरों के बहुत दूर से ही पण्डा, पुजारी भक्तों को को घेर लेते हैं। दर्शन कराने हेतु ! दान दक्षिणा माँगने हेतु !

(४) बुद्ध विहार में कोई भी प्रवेश कर सकता है, चाहे वह किसी भी जाति या धर्म का स्त्री-पुरुष क्यों न हो।

(५) उल्टे हिन्दू मन्दिर में केवल ऊँची जाति के लोग ही प्रवेश कर सकते हैं, अन्य नहीं। यह भी एक भारी अन्तर है।

(६) मैंने बुद्धगया एवं सारनाथ के प्रधान बुद्ध विहारों में अनेक बुर्खाधारी मुस्लिम महिलाओं को भी आते जाते देखा है, उन्हें कोई नहीं रोकता। यह भी एक भारी अन्तर है; बौद्ध और हिन्दुओं में।

(७) हिन्दू मन्दिर के अन्दर कोई मुसलमान या ईसाई आदि प्रवेश करे, तो वहाँ की मूर्ति अशुद्ध हो जाती है, किन्तु बौद्धों की मूर्ति कभी अन्य धर्मियों के प्रवेश से अशुद्ध नहीं होती। अर्थात् बौद्धों का भगवान कभी अशुद्ध नहीं होता, वहाँ कोई भी जा सकता है।

(८) हिन्दुओं में केवल जड़-प्रतीक ही धर्म माना गया है, जैसे कुम्भ मेला, त्रास देने वाला मेला, उपवास, कठिन व्रत, जन्तु वाली (मुर्गा, बकरा, पहाड़ा आदि से नरबलि तक का वध) हठयोग, कठिन तपस्या आदि धर्म का आचार समझा जाता है।

(९) बौद्ध आचरण की पवित्रता को धर्म मानते हैं—“आचारः प्रथमो धर्माः” सदाचार का विकास और दुराचार के दमन को धर्म मानते हैं। सदाचार की प्रथम शर्त पाँच हैं (हिंसा, चोरी, व्यभिचार, कपट और मदिरापान का त्याग) आदि।

(१०) हिन्दू अपनी देवमूर्ति (बंगाल में काली, बिहार में सरस्वती, महाराष्ट्र में गणपति) पूजने के बाद पानी में बहा देते हैं। किन्तु बौद्ध अपनी मूर्ति को कभी पानी में नहीं बहाते। यह भी एक भारी अन्तर है।

इस प्रकार खोजने पर और भी बहुत-से अन्तर हिन्दू मूर्ति और बुद्ध मूर्तियों में दिखाई देंगे।

प्राचीन थेरवादी बौद्ध धर्म में गुफा, चैत्यों और स्तूपों की पूजा होती थी। कहीं भी मूर्ति पूजा नहीं थी। मूर्ति का आविष्कार प्रथम बार सम्राट शक कनिष्क द्वारा आज से लगभग २००० वर्ष पूर्व

महायानियों के लिए किया था। उसके बाद मूर्तियों के लिए मैदानी इलाकों में मन्दिर बनने लगे। तबसे अन्य धर्मियों ने भी जैसे—जैन, ब्राह्मण, शैव, वैष्णव आदि ने भी बौद्धों की देखी-देखी अपने-अपने इष्ट देवों की मूर्तियाँ बनाने लगे तथा आलीशान मन्दिरों का निर्माण करवाने लगे।

स्थविरवादी बुद्ध धर्म आचार प्रधान निरपेक्ष अर्हत्वादी धर्म है। इसका अर्थ यह नहीं है कि—हम महायानियों की मूर्ति पूजा के विरोधी हैं। हम विरोधी नहीं, उसके पोषक हैं; क्योंकि विश्व की बुद्ध मूर्तियों की कोई गिनती या संख्या नहीं; अगणित हैं। संसार का कोई म्लेच्छवादी लाखों की संख्या में सौ वर्षों तक इन मूर्तियों को नष्ट करता फिरे, तो भी समाप्त नहीं हो सकती हैं। फिर एक कोने के कुछ लोगों के विरोध का क्या असर पड़ने वाला है? हमारा मत यह है कि नास्तिक मनोदशा से पीड़ित लोगों को शीघ्र ही इस दुर्दशा से मुक्त होना हो चाहिए तभी वे सही अर्थ में धार्मिक कहलायेंगे।

मध्य एशिया में इस्लामिक जोहादियों ने करोड़ों-अरबों बुद्ध प्रतिमाओं को नष्ट किया है, फिर भी लाखों मूर्तियाँ आज भी इन्हीं इस्लामी देश अफगानिस्तान तथा दक्षिण एशिया के इण्डोनेशिया, बोर्नियो, मलेशिया आदि (भूतपूर्व बौद्ध देश जो अब मुस्लिम धर्मी हैं), मौजूद हैं।

साधारण अज्ञानी और अल्पज्ञानियों के चित्त को स्थिर करने के लिए सर्वप्रथम बुद्ध मूर्ति का आविष्कार हुआ था। परन्तु बाद में उसमें कुछ अतिरेक मनोभाव या विकार अवश्य उत्पन्न हो गया था। फिर भी बुद्ध मूर्ति की हिन्दू देवमूर्तियों से कभी तुलना नहीं की जा सकती। आज विश्व में सर्वाधिक मूल्यवान तथा अधिक बिकने वाली मूर्ति सिर्फ बुद्धमूर्ति ही है। इस सम्बन्ध में अधिक विस्तार के लिए मेरे द्वारा लिखे गये "बुद्धवाद प्रदीप" नामक ग्रन्थ के "भारत में मूर्ति पूजा" नामक प्रकरण को देखें।

मन्दिर या मूर्ति अथवा जड़-पुस्तक धर्म के अंग होते हुए भी धर्म

नहीं हो सकते ; कारण धर्म जड़-वस्तु नहीं, चेतन क्रिया है । आचार का नाम धर्म है । अनुभव धर्म के नियमानुसार आचरण करना धर्म कहलाता है । वह पारम्पर्यवाही है, अर्थात् परम्परा से पीढ़ी, पीढ़ी से प्राप्त होने की वस्तु है । ये नये धर्मान्तरों नाम मात्र के बौद्धों का अधिक भाग इस सत्य को समझने में असमर्थ रहा है ; क्योंकि हमारी परम्परा हिन्दुवादी रही है । हमें बौद्ध संस्कार सिखाने वाला कोई नहीं और न सीखने की लगन ही है । इसलिए हमें बौद्ध धर्म को पूरी तरह जानने में देरी लग सकती है ।

एकदम निरक्षर या अज्ञानी अत्यन्त गरीबों के लिए धर्म का कोई महत्व नहीं होता है । भूखे का धर्म रोटी खोजना है । भूखे से धर्म की बातें करना उसको गाली देने के समान है । धर्म आचरणयुक्त चेतन-क्रिया का नाम है । बौद्ध इसे अच्छी तरह जानता है । इसलिए हिन्दू मूर्ति और बुद्ध मूर्ति में तुलना नहीं की जा सकती ।

प्रश्न (१५) महा परिनिर्वाण किसे प्राप्त होता है ?

उत्तर—निर्वाण शून्य तत्त्व या निर्गुण है । निर्वाण भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों से परे है । निर्वाण आँखों से नहीं देखा जा सकता और न शरीर से छुआ जा सकता है । निर्वाण सब-कुछ होते हुए भी कुछ भी नहीं है । निर्वाण तृष्णा के सर्वदा अभाव का नाम है और लोकोत्तर संज्ञा वाला है । जिसका लोकोत्तर ज्ञान धर्म से ही साक्षात्कार किया जाना चाहिए । निर्वाण शान्ति लक्षण है । इसे अमृत, असंस्कृत एवं परम सुख कहा गया है । अच्युति इसका रस है । अनिमित्तता या निष्प्रपञ्चता इसका प्रत्युपस्थान है । इसका कोई निमित्त या संस्थान नहीं है । अतः यह सर्वप्रपञ्चों से शून्य है । न जन्मने वाला है और न मरने वाला है ।

सर्वदा प्रहाण, वैराग्य, विशुद्धि, दुःखक्षय, निरोध व दुःख का अत्यन्त अनुत्पाद, अनुपादान, अप्रादुर्भाव, निर्वाण के लक्षण हैं । भगवान् तथागत सम्यक सम्बुद्ध ने कहा है कि यह निर्वाण ही सत्य है । पार है, सुदुर्दर्श है, अमर है, अजर है, ध्रुव है, निष्प्रपञ्च है, **शिव है**, क्षेम है, विशुद्ध है, निर्वाण ही दीप है । निर्वाण ही त्राण

है। यह न भाव है, न अभाव ही। निर्वाण की महत्ता अनन्त है। सही बात यह है कि निर्वाण की एक ही परिभाषा है और वह यही है कि "निर्वाण की कोई परिभाषा नहीं हो सकती।"

कोई भी पंचशीलधारी गृहस्थ या अष्ट शीलधारी या दश शीलधारी श्रमण इसे प्राप्त नहीं कर सकता। यह अर्हत्तों का पद है। राग, द्वेष, मोह का नाश है। अनित्य, दुःख, अनात्मा पर निरन्तर चिन्तन का परिणाम है। यह २२७ बौद्ध नियमों का पालन करने वाले महान अर्हत को हो प्राप्त हो सकता है।

बहुत-से लोग मरने को निर्वाण समझते हैं। ये लोग पूरी गलती पर हैं। निर्वाण है ; किन्तु निर्वाण प्राप्त करने वाला व्यक्ति नहीं है। मार्ग है, पथिक नहीं है। निर्वाण तर्क सुलभ नहीं है। समस्त तर्कजाल समाप्त होने के बाद ही निर्वाण के निकट जाने की योग्यता मिलती है।

कितने ही साधारण लोग अज्ञानवश मरने को निर्वाण की संज्ञा देते हैं ; जो महामूर्खता ही नहीं, हास्यास्पद भी है। निर्वाण पुनरावृत्ति रहित अदृश्य लोक में लीन होना है। अपने अन्दर के समस्त विकारों का उन्मूलन ही निर्वाण है। जिसे राग, सुख की इच्छा, द्वेष (सुख के बाधक तत्वों पर परोक्ष में क्रोध करना)।

'मोह' असत्य पर सत्य की प्रतीति मोह है झूठ को सच मानना मोह है, इसे शमथयान कहते हैं। जब तक इस शमथ की प्राप्ति नहीं होगी। वह विपश्यना (अनित्य, दुःख, अनात्म पर निरन्तर चिन्तन) में प्रवेश नहीं कर सकता ; जब तक विपश्यना (भीतरी आँख से शरीर के विकारों को देखना) सम्भव नहीं है तब तक निर्वाण के निकट जाने में वे असमर्थ हैं।

'बान' तृष्णा का पर्यायवाची शब्द है। तृष्णा को अत्यन्त निवृत्ति या क्षयज्ञान को निर्वाण कहा गया है। यह एक अत्यन्त सूक्ष्म एवं भीतर से अनुभव करने का विषय है। निर्वाण शब्द का विषय नहीं है। शब्द से इसे व्यक्त नहीं किया जा सकता ; क्योंकि प्रत्यात्म वेत्य है। अर्थात् आन्तरिक मन से जानने योग्य है।

निर्वाण एक महान् अवस्था है। असंख्य जन्मों के पुण्य फल से ही यह प्राप्त हो सकता है। यह स्वयं प्रवर्तन पर निर्भर है। निर्वाण ब्रह्म का विषय नहीं है। यह एक अद्वितीय मानवीय अवस्था है, जहाँ से पुनः लौटना नहीं है। ऐसा एक अदृश्य स्थान में तिरोहित होना है।

उसके पूर्व समस्त माया मोह अर्थात् राग, द्वेष, हिंसा इच्छा, तृष्णा, भय, दुःख, विषाद, हर्ष, लज्जा, शोक और मोह को समाप्त होना है। वह कहीं बाहर से आने वाली वस्तु नहीं, स्वयं भीतर से प्रकाशित होने वाला अनुभव है। अनेक जन्मों की पारमिताओं से ही यह प्राप्त हो सकती है। यह केवल अर्हत्तों को ही मिलता है। अन्य को नहीं। अतः किसी भी पञ्चशीलधारी के मरने पर उसे निर्वाण की संज्ञा नहीं दे सकते।

बौद्ध धर्म के अनुसार मरना निर्वाण नहीं है; क्योंकि बौद्ध धर्म के अनुसार प्रत्येक मृतक पुनः जन्म ग्रहण करता है। किन्तु निर्वाण प्राप्ति के बाद पुनर्जन्म सम्भव नहीं है, यह अन्तिम जन्म होता है। निर्वाण प्राप्त होने तक पुङ्गव (जीव) को जन्म और मरण के चक्कर में आना ही पड़ता है, जब तक उसे निर्वाण प्राप्त नहीं हो जाता।

ऊपर बता चुका हूँ कि निर्वाण उस सत्त्व को प्राप्त होता है, जो शमथयान के बाद विपश्यी हुआ हो। अर्थात् राग, द्वेष और मोह को त्यागकर अनित्य, दुःख और अनात्म पर निरन्तर चिन्तन किया हो। अर्थात् जो कुछ दृश्य, श्रुत, स्मृत, एकत्व, नानात्व समस्त पदार्थ चाहे बाहर हों या भीतर, दूर हों या निकट, छोटा हो या बड़ा सब कुछ अनित्य है। होकर मिटने वाले हैं।

उत्पत्ति और क्षय स्वभाव वाला है। नश्वर है, क्षणिक है, इसलिए समस्त पदार्थ अनित्य हैं जो अनित्य है, वह सत्य कैसे हो सकता है। वह तो दुःख है। दुःख होने से सभी वस्तुएँ अनात्म हैं। इसे दृढ़ समझते हुए शरीर के भीतर ३२ प्रकार के अशुद्ध पदार्थों (वेश रोम, नख, दांत, चमड़ा, मांस, अस्थि, स्नायु, मज्जा, रक्त, मल,

मूत्र) से भरा हुआ एक मांस पिण्ड है। इसे प्रत्येक पशु और प्रश्वस के साथ याद रखनी ही विषयना कहलाता है। अर्थात् अनित्य, दुःख, अनात्म पर निरन्तर चिन्तन विषयना है।

विषयी अर्हत को ही निर्वाण मिलता है या प्राप्त करता है। साधारण पंचशीलधारी को नहीं, चाहे वह कितना ही बड़ा पण्डित या सम्राट ही क्यों न हो, जब तक क्षयज्ञान और अनुत्पाद ज्ञान अर्थात् पिछले कर्मों का अन्त और नये कर्म फलों का अनुत्पाद और साथ में शमथ और विषयना प्राप्त कर लेगा, तब जाकर वह निर्वाण का हकदार होता है।

कोई भी स्रोतापन्न या सकृतागामी अथवा अनागमी फल प्राप्त व्यक्ति भी निर्वाण प्राप्त नहीं कर सकता, जब तक अर्हत्व का फल प्राप्त न हो। फिर पंचशीलधारी गृहस्थों का मरने पर निर्वाण की घोषणा बौद्ध धर्म के बारे में अज्ञान या अल्पज्ञान का परिचायक है। जो भारी दुःख का विषय है।

अगर बोधिसत्त्व हो, तो भी वह अकेले निर्वाण प्राप्त नहीं कर सकता ; क्योंकि बोधिसत्त्व (महायान के अनुसार) के इस दुनिया में आने का उद्देश्य ही सभी प्राणियों को कष्ट से छुटकारा दिलाने के बाद अन्त में निर्वाण प्राप्त करना पसन्द करेगा क्योंकि ; अकेले ही अपने स्वार्थ के लिए निर्वाण प्राप्त करना बोधिसत्त्व स्वभाव के विरुद्ध है। अतः कोई भी बोधिसत्त्व निर्वाण प्राप्त नहीं कर सकता, जब तक वह अर्हत नहीं हो जाता या फिर पृथ्वी के सभी प्राणियों को निर्वाण दिलाने के बाद ही वह निर्वाण प्राप्त करेगा।

अज्ञानी समाज द्वारा किसी राजनेता के मरने का अर्थ निर्वाण बताना ; यह साबित करता है कि अब वे बौद्ध धर्म के क-ख के भी जानकार नहीं हैं ? इसे अंग्रेजी में Liberation या Salvation या Extinction कहते हैं। परन्तु बौद्धों का निर्वाण किसी भी शब्दों की परिभाषा द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता। वह केवल अनुभव का विषय है। अतः कोई भी राजा या राजनेता जब तक प्रव्रजित होकर अर्हत्व को प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक उसे

निर्वाण का अनधिकारी माना गया है। पालि बौद्ध धम्म का यही सिद्धान्त है। इसके विपरीत जो **मुख मरने** को निर्वाण कहता है, उसे बौद्ध धर्म की दृष्टि से कतई मान्यता नहीं मिल सकती है।

सामान्य सत्य का अर्थ अपूर्णता, अस्थायित्व, शून्यता, निस्सारता आदि व्यापक रूप ले सकते हैं। इसी प्रकार तृष्णा शब्द का भी व्यापक अर्थ ले सकते हैं जैसे-भावों, आदर्शों, मतों, दृष्टिकोणों, सिद्धान्तों, धारणाओं, विश्वासों, आकांक्षाओं एवं आसक्तियों को भी शामिल किया गया है। यह कहना कि निर्वाण नकारात्मक है अथवा सकारात्मक, सही नहीं है।

नकारात्मकता और सकारात्मकता के भाव का परस्पर सम्बन्ध अपेक्षित है। ये द्वैधी भाव (द्विविधता) की सीमा में आते हैं। ये मान्यतायें (निर्वाण) पूर्ण सत्य के प्रति लागू नहीं की जा सकती, क्योंकि वह द्विविधता और सापेक्षिकता से परे हैं अतः बौद्धों को यह समझना होगा कि किसी भी नेता के मरने पर उसे निर्वाण की संज्ञा नहीं दी जा सकती। जो इसके विपरीत मानते हैं; वह बौद्ध धर्म का अनभिज्ञ कोई 'पृथग्जन' की संज्ञा का अधिकारी है।

तात्पर्य यह है कि बोधिसत्त्व का निर्वाण तब होगा जब विश्व के सभी प्राणी निर्वाण प्राप्त कर लेंगे, तब तक उन्हें आते ही रहना है, ताकि सभी प्राणियों को निर्वाण के लिए प्रेरित तथा सहायता कर सकें, अतः बोधिसत्त्व को निर्वाण हुआ कहना बौद्धधर्म के प्रति अल्प-ज्ञान तक न रखने वाले अबौद्ध अज्ञानी **समाज मुखता** का परिचायक है। ऐसे लोग बोधिसत्त्व क्या होता है, इसके बारे में भी अज्ञानी होते हैं। बोधिसत्त्व और निर्वाण परस्पर विरुद्ध हैं। अर्थात् **निर्वाणावस्था में बोधिसत्त्व नहीं रहता। जहाँ बोधिसत्त्व है, वहाँ निर्वाण नहीं है।**

प्रश्न (१६) खड़े बुद्ध को ही मानता हूँ, बैठे बुद्ध को नहीं।

उत्तर—बहुत से नास्तिकों के मुख से यह सुनने में आया है कि मैं खड़े बुद्ध को ही मानता हूँ बैठे को नहीं। ऐसी भ्रामक बातों का उदय बौद्ध धर्म के बारे में अज्ञानता के कारण होता है; क्योंकि

बैठे बुद्ध और खड़े बुद्ध ऐसे दो वर्गीकरण भ्रान्तिमूलक हैं। वास्तव में बैठे बुद्ध और खड़े बुद्ध जैसे दो बुद्ध नहीं होते हैं। चलते-फिरते बुद्ध के लिए पहिले बैठना अत्यावश्यक है। जब तक बैठेगा नहीं तब तक चलने की शक्ति ही नहीं मिल सकती। सम्यक सम्बुद्ध भगवान् तथागत परम कारुणिक ने ८ दिन और ८ रात वज्रासन में बैठकर सम्यक सम्बोधि के लिए बिना पलक गिराये अनिमेष नेत्रों से देखते ही रहे थे। उस वृक्ष (बोधि वृक्ष) की सन्तान आज भी वहाँ मौजूद है, जहाँ भगवान् ने सम्यक सम्बोधि प्राप्त की थी।

खड़ी और बैठी दोनों मूर्तियाँ शिल्पियों की कला हैं। इन मूर्ति बनाने वालों में किसी ने भी बुद्ध को नहीं देखा। बुद्ध के ५०० वर्ष बाद प्रथम मूर्ति बनी थी। खड़े, बैठे, सोये या चलती प्रतिमायें कलाकारों की कारीगिरि हैं। चलती मूर्ति या खड़ी मूर्ति आदि भेद भ्रम उत्पन्न करके धर्म में फूट डालने की कोशिश हरगिज नहीं होने दी जायगी। आज करोड़ों की संख्या में बुद्ध की हजारों डिजाईनों में मूर्तियाँ प्राप्त होती हैं, इनमें से कौन-सा डिजाइन सही है और कौन-सा सही नहीं है? इन बातों में उलझकर समय नष्ट करना या झगड़े उत्पन्न करना मूर्खता है। इससे बुद्ध शासन के लिए कोई लाभ नहीं होगा!

यदि बैठेगा नहीं, तो ध्यान नहीं हो सकता। ध्यान नहीं तो समाधि कैसे? जब समाधि नहीं है, तो प्रज्ञा कहाँ से होगी? जब प्रज्ञा ही नहीं है, तो वह क्या उपदेश करेगा लोगों के लिए। चलते-फिरते भिक्षुओं में जब शमथ (राग, द्वेष, मोह का नाश) और विपश्यना (अनित्य, दुःख और अनात्म पर निरन्तर चिन्तन) तथा आठ विमोक्ष (प्रथम ध्यान से लेकर संज्ञावेदायित निरोध तक) और प्रतीत्य समुत्पाद दर्शन (अविद्या से लेकर जरा-मरण तक) और आर्य अष्टांग मार्ग (सम्यक दृष्टि से सम्यक समाधि तक) चार आर्य सत्य (दुःख से लेकर निर्वाण तक) और सैंतीस बोधि पक्षीय धर्म आदि की जानकारी नहीं होगी, तो उस भिक्षु लोक का क्या कल्याण कर सकता है? कुछ नहीं। यह सब ज्ञान बैठकर ही प्राप्त किया जा सकता है, चलते-फिरते नहीं।

बिना बैठकर ध्यान लगाये कोई बौद्ध भिक्षु नहीं हो सकता । फिर यह मूर्ख नास्तिक किस आधार पर बैठे बुद्ध का विरोध कर रहे हैं । क्या यह स्थिति उनके लिए हास्यास्पद नहीं है ? संसार का कोई भी सच्चा बौद्धधर्मी इन मक्कारों का अनुगमन कर सकता है ? कभी नहीं । उल्टे निन्दा अवश्य करेंगे । अतः खड़े बुद्ध और बैठे बुद्ध ऐसी दो बुद्ध की कल्पनाये विलकुल अज्ञान और हास्यास्पद भी हैं । इस भ्रांति को तुरन्त समाप्त कर देना चाहिए ।

हम पूछते हैं कि ऐसे लोग स्थविरवादी हैं ? या महायानी हैं ? अथवा तन्त्रयानी हैं ? डॉ० अम्बेडकर ने इस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं बताया है, इसका क्या कारण है ? जैसे—हिन्दुओं में शैव और वैष्णव । जैनों में श्वेताम्बर और दिगम्बर । ईसाई में कैथोलिक और प्रोटेस्टण्ट । इस्लाम में शिया और सुन्नी । इसी प्रकार बौद्धों में थेरवाद, महायान तथा उसमें से फटे हुए (तन्त्रयान, मन्त्रयान और वज्रयान) मुख्यतः दो पन्थ हीनयान और महायान हैं ।

ये नये बौद्ध हीनयानी हैं या महायानी या तन्त्रयानी या इनमें से भिन्न हैं ? या इन सबका मिश्रण हैं या फिर तीनों में से कौन-से हैं ? इस बात का स्पष्टीकरण इनको करना होगा, क्योंकि तन्त्रयानियों में अनेक ऐसे पन्थ हैं, जो ऊपर से बौद्ध दिखते हैं, किन्तु भीतर कुछ और ही होते हैं । जैसे—दलाईलामा और पन्छेन-लामा, टासीलामा आदि अनेक पन्थ हैं, जिनकी कुलदेवी काली या तारादेवी हैं और ऊपर से सब बौद्ध दिखेंगे । ये दोहरी चाल हमारे थेरवाद में नहीं चलेगी । अगर यह नये बौद्ध मुख्यधारा से हटकर अपना अलग पन्थ ही चलाना चाहते हैं, तो उनकी मर्जी ; किन्तु उन्हें यह स्पष्ट करना होगा कि वह किस प्रकार के बौद्ध हैं । अन्यथा अन्धा बहुमत इस भ्रम में पड़ सकता है कि सही बौद्ध कौन है ?

“बुद्ध्या यया निवर्तते सः बौद्धः” अर्थात् इस संसार में बुद्धि से सब कुछ प्राप्त करने वालों को बौद्ध कहा जाता है । अर्थात् ईश्वर या परमात्मा तथा उसके दलालों की बिना सहायता से इस लोक

और परलोक से स्व-बुद्धि से जीतने वालों को बौद्ध कहते हैं। बौद्धों के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है; क्योंकि वह स्वयं अपने कर्म का मालिक है। उसका मालिक कोई नहीं है। अपने पुण्य कर्मों से वे सब कुछ प्राप्त करने में समर्थ है; क्योंकि बौद्ध धर्म कर्म प्रधान है। जैसा कर्म वैसा फल; कर्म ही फल देता है, इसके अतिरिक्त एक मिथ्या प्रेक्षक ईश्वर या परमात्मा की कल्पना करने की कोई आवश्यकता नहीं है। कर्म ही फल देता है, इसलिए कर्म ही मनुष्यों का स्वामी है, मिथ्या ईश्वर आदि नहीं।

पाप और पुण्य स्वयं मनुष्य करेगा, तो ही पाप का फल दुःख और पुण्य का फल सुख उसे प्राप्त होता है, ये दोनों कर्मों का कर्ता स्वयं मनुष्य है। इसलिए सुख और दुःख का कर्ता अन्य कोई नहीं, स्वयं मनुष्य अपने-आप है।

भारत में आज की मुख्य आवश्यकता बौद्ध धर्म के पवित्र स्वरूप (थेरवाद परम्परा) को सुरक्षित रखने की है। ताकि नास्तिकों को दिशाहीन और ध्येयहीन आक्रमणों से शुद्ध बौद्ध धर्म की रक्षा हो जाय। बिना परम्परा में विश्वास किये इस धर्म और महान् संस्कृति की महत्ता ये नये बौद्ध नहीं पहचान सकते हैं।

संस्कृति किसी भी धर्म का वाह्य रूप होती है। बिना इसके संसार में कोई धर्म जीवित नहीं रह सकता। बौद्ध संस्कृति का प्राचीन शुद्ध-रूप पालि त्रिपिटक है। जिसको मानने वालों को स्थविरवादी या थेरवादी बौद्ध कहते हैं। जिनका बहुमत आज श्रीलंका, बर्मा, थाईलैण्ड, कम्बोडिया, लाओस और बंगाल देश में है। हम भारत में भी इस धर्म की पुनः प्रतिष्ठापना करना चाहते हैं, उसके लिए बौद्ध संस्कृति को नये सिरे से पुनः प्रतिष्ठापित करना होगा। इसलिए खड़े बुद्ध और बैठे बुद्ध जैसे भेद भ्रम उत्पन्न कराने वाले गुमराह तत्वों से सावधान रहने की आवश्यकता है; क्योंकि इन नास्तिकों से आगे जाकर बहुत ही घातक स्थिति उत्पन्न हो सकती है। धर्म को आगे बढ़ाने में भारी बाधा उत्पन्न कर सकती

है। इसलिए ऐसी छोटी-छोटी बातों में उलझकर व्यर्थ समय नष्ट करना, धर्म को ही हानि पहुँचाना है।

सन्देह, भ्रम और अश्रद्धा, धर्म में शंका, अहंकार (अभिमान) एवं लोभ को त्यागना ही इस धर्म का प्रवेश द्वार है। इस महान् धर्म दर्शन की अनुभूति के बाद कोई भी शंका या भ्रम बाकी रहना सम्भव नहीं है, यही इस धर्म की महत्ता है।

कुछ नास्तिकों का कहना है कि नैतिकता ही धर्म है, किन्तु वे भूल जाते हैं कि नैतिकता प्रत्येक देश, काल, व्यक्ति, समाज, धर्म और परम्परा के अनुसार अलग-अलग होती है तथा परिवर्तनशील भी है; क्योंकि किसी की नैतिकता दूसरे के लिए अनैतिकता होती है—

उदाहरण—एक व्यक्ति के लिए गाय का मांस खाना अनैतिकता ही नहीं, महा पाप भी है जैसे—हिन्दू और किसी को सुअर का मांस एकदम हराम है; किन्तु गाय का मांस बुरा नहीं है जैसे—मुसलमान और किसी के लिए यह दोनों मांस बुरे नहीं हैं (जैसे ईसाई)। किसी के लिए बकरे का मांस बुरा नहीं है, जैसे हिन्दू या फिर बहन से सहयोग (मैथुन) किसी को बुरा नहीं है, जैसे—पारसी। किसी को चचेरी बहन से शादी बुरा नहीं है, जैसे—मुसलमान। किसी की भान्जी से शादी बुरा नहीं है, जैसे अनेक हिन्दू समाज।

मैंने अखबार में यहाँ तक पढ़ा है कि तमिलनाडु के नीलगिरि पर्वत की जंगली जाति 'तोडर' अपनी माँ से संयोग बुरा नहीं मानते किसी जगह एक महिला के अनेक पति होते हैं, उसे बुरा नहीं मानते, जैसे—तिब्बत निवासी। यही प्रथा कश्मीर के लद्दाख क्षेत्र में भी प्रचलित है।

निष्कर्ष यह है कि नैतिकता की कोई नाप-तोल नहीं होती, प्रत्येक धर्म के अनुसार अलग-अलग होती है। एक उदाहरण और देखें—

इस्लाम के अनुसार काफिर को कत्ल करना नैतिकता है। किसी की यहूदियों की हत्या करना नैतिकता है, जैसे—जर्मनी के ईसाई।

किसी को म्लेच्छ राक्षसों और दैत्यों (असुरों) की हत्या करना नैतिकता है। जैसे-भारत के ब्राह्मण मत वाले। बौद्धों और जैनो के लिए किसी भी प्राणी का वध करना महा पाप है। तात्पर्य यह है कि नैतिकता धर्म नहीं हो सकती, जैसा ऊपर नास्तिकों का दावा था।

अन्त में भगवान बुद्ध की कई प्रकार की मूर्तियाँ हैं जैसे—(१) आशीर्वाद मुद्रा में। (२) भूमि स्पर्श मुद्रा में। (३) अञ्जलियों की मुद्रा में। (४) ध्यानावस्थित मुद्रा में। (५) खड़े हुए बुद्ध के रूप में। (६) महा परिनिर्वाण की मुद्रा में। इन सभी मुद्राओं में अलग-अलग विशेषता होती है। किसी एक को ही मानना ठीक नहीं है। सभी मुद्रा वाली मूर्तियाँ बौद्धों के लिए समान रूप से पूजनीय और वन्दनीय हैं।

प्रश्न (१७) आप अम्बेडकर विरोधी हैं ?

उत्तर—बिल्कुल नहीं ; मैं सिर्फ आस्तिक और नास्तिकों का विरोधी हूँ। डॉ० अम्बेडकर नास्तिक नहीं थे और न ही आस्तिक फिर उनके विरोध का सवाल ही कहाँ पैदा होता है। बाबासाहेब से मुझे कोई शिकायत नहीं है ; क्योंकि वह मेरे राजा तथा संरक्षक हैं। उनसे विरोध कैसा ?

“पालि त्रिपिटक के अनुयायी भिक्षु होने के नाते बाबासाहेब की आड में उनके स्वीकृत धर्म के विरुद्ध कोई मजाक उड़ाये या फिर उसके विरुद्ध कोई बकवास करें तो वह मुझसे सहन नहीं हो सकता ! कोई हमारे धर्म पर लांछन लगाये। उसकी खिल्ली उड़ाये, तो वह देखते रहने के बजाय एक धर्मवादी भिक्षु के नाते मैं मरना पसन्द करूँगा।”

मैं डॉ० अम्बेडकर के अन्तिम आदेश का पालन करने में विश्वास रखने वाला भिक्षु हूँ ; क्योंकि उन्होंने कहा था कि—**किसी भी प्रकार के कष्ट सहन करते हुए भी भारत में बौद्ध धर्म का प्रचार करें। मैंने सब कुछ त्यागकर इसी काम में पूरा जीवन व्यतीत किया है। आगे भी इसी काम को करते-करते ही मरूँगा। विरोधी कुछ भी कहें मुझे उसकी परवाह नहीं है। मैं धर्म प्रचार में लिप्त हूँ।**

कोई आस्तिक या नास्तिक क्या कहता है, इस बात की मुझे कोई चिन्ता नहीं है।

मैं बौद्ध धर्म का सच्चा अनुयायी हूँ। केवल बातों से नहीं कार्यों से भी। मैं कोई आरक्षण जैसे गन्दे कुर्सीवाद के राजनीतिक खेल में अम्बेडकर के नाम का दुरुपयोग नहीं कर रहा हूँ, जैसे उनके अनुयायी कहलाने वाले कर रहे हैं। उनकी घोषणा थी कि "मैं भारत में सर्वत्र बौद्धमय करूँगा" क्या यह घोषणा पूरी हो चुकी है? नहीं हुई तो इस कार्य की पूर्ति करने की जिम्मेदारी किसकी है? अम्बेडकरवादी उत्तर दें। मैं इसी दिशा में यथा-शक्ति आगे बढ़ रहा हूँ।

धर्म को न जानने के कारण उस पर दुर्लक्ष्य देने वाले नाममात्र के बौद्धों की खबर लेते हुए दिल्ली की एक बौद्ध पत्रिका "संघ प्रकाश" (अब बन्द है।) के १९८१ के अप्रैल-मई अंक में दो लेखकों—१. श्री कृष्णनाथ हैदराबाद तथा २. ब्रजलाल परिचालक, इलाहाबाद, उ० प्र० ने लिखा था। मैं समझता हूँ कि ये दोनों लेख पढ़ने पर मुझसे पूछे गये प्रश्न का (आप अम्बेडकर विरोधी हैं) उत्तर प्राप्त हो जायगा। पहिले लेख का शीर्षक था "नव-बौद्ध पहचान का प्रश्न।"

नव-बौद्ध क्यों? बौद्ध काफी है। बौद्ध-तो-बौद्ध, ऐसा अनेक नव-बौद्धों का मत है। भाषा पहचान कराती है। इसी पहचान से परेशानी है; जो समझ में आती है। बाबासाहेब डॉ० अम्बेडकर के १९५६ में बौद्ध धर्मान्तरण के बाद लाखों दलित नव-बौद्ध हो चुके हैं।

१९५१ की जनगणना के अनुसार देश में बौद्धों का संख्या १,८०,८२३ थी। डॉ० अम्बेडकर ने १४ अक्टूबर १९५६ को नागपुर में दीक्षा ग्रहण की। इसके बाद १९६१ की जनगणना में यह संख्या बढ़कर ३२,५०,२२७ हो गयी है। १९७१ की गणना में यह बढ़कर ३८,१२,३२५ हो गयी है। अनुमान है यह कम बतायी गयी है। हिन्दू गणकों का पूर्वग्रह, लोभ या भय से धर्म न बताना अज्ञान, अगम्य स्थानों में बसने आदि के कारण यह संख्या कम दर्ज हो सकती है। अगर अनुमान यह लगाएँ कि प्रत्येक बौद्ध जो दर्ज है, उसके पीछे

दुर्ज नहीं हैं। तो संख्या १ करोड़ से अधिक है। यह अधिकांश हिन्दुओं की परिगणित जातियों में जन्मे थे। महाराष्ट्र के महार। पश्चिम उत्तर प्रदेश में जाटव, पूर्वी उत्तर प्रदेश के चमार। पंजाब और हिमाचल प्रदेश में भंगी प्रायः धर्म परिवर्तन कर बौद्ध बन रहे हैं। महार तो अधिकांश बौद्ध हो चुके हैं।

शेष परिगणित जातियों में से अभी तक ६-७ जातियाँ और परिगणितों में से लगभग ५% बौद्ध है। इनकी सहज इच्छा यह है कि वे ब्राह्मण धर्म की क्रमिक अस्पृश्यता वाली जाति प्रथा और ऊँच-नीच से बौद्ध होते ही छुटकारा पा लें।

आत्म-सम्मान के लिए इन्होंने अपने पुराने धर्म को छोड़ा। यहाँ भी जब इन्हें नव-बौद्ध कहा जाता है, और नव का मतलब बहुत करके परिगणित जातियों में जन्मे धर्मान्तरित बौद्ध से होता है, तो उन्हें बुरा लगता है; क्योंकि वह पहचान बनी रहती है। नव-बौद्ध इस पहचान को मिटाना चाहते हैं।

राहुल सांकृत्यायन का दिया हुआ शब्द हमने चलाने की कोशिश की "नव दीक्षित बौद्ध।" राहुल जी ने डॉ० अम्बेडकर की दीक्षा पर लिखते हुए कहा था कि—यह कोई नव-बौद्ध अन्दोलन नहीं है; क्योंकि डॉ० अम्बेडकर ने गौतम बुद्ध के धर्म में ही दीक्षा ली है। कोई नया बुद्ध नहीं चलाया है या उसमें ही कोई नया पन्थ नहीं चलाया है। जैसे न्याय के बाद नव्य न्याय आया या क्लासिकी अर्थशास्त्र के बाद नव-क्लासिकी अर्थशास्त्र आया। जैसे—बौद्ध धर्म के लगभग २५०० वर्ष बाद यह कोई नया बुद्ध धर्म नहीं है। सिर्फ दीक्षा नयी है। इसलिए उन्हें नव-दीक्षित बौद्ध कहा है। इस पर भी आपत्ति है, जो नव-बौद्ध पर है। अलगाव तो बना रहता है नव कहें या नव-दीक्षित कहें क्या फर्क पड़ता है?

इतिहास में उदाहरण दिया जाता है कि जब बुद्ध त्रिशरण देते थे, तो नव-दीक्षित बौद्ध नहीं कहलाते थे या फिर जब अशोक के काल में धर्मान्तरण हुआ, तो अशोक सहित करोड़ों नव-बौद्ध या नव-दीक्षित बौद्ध नहीं कहलाये, फिर अब यह विशेषण क्यों? यह अलगाव अपमानजनक लगता है।

प्रश्न मान और अपमान का नहीं है। प्रश्न जो है, उसे यथावत् देखने का है। अच्छा है तो अच्छा देखने का है। बुरा है, तो बुरा देखने का है। ऐसा-वैसा है, तो ऐसा-वैसा देखने का है। यह सम्यक दृष्टि है ? इतिहास में जो हुआ, वह यहाँ नहीं लगता। बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर के पीछे जो धर्मान्तरण हुआ, वह इतिहास में अपूर्व घटना है और वह प्रक्रिया उनके जाने के १५ साल बाद भी चल रही है। नेतृत्व नहीं है, संगठन नहीं है, दीक्षा नहीं है, फिर भी धम्म चक्र चल रहा है। यह नव-दीक्षा नहीं है।

डॉ० अम्बेडकर ने धर्म परिवर्तन करते समय अपने अनुयायियों से २२ प्रतिज्ञा करवायी हैं। ये २२ प्रतिज्ञायें नव-बौद्ध करते हैं। यह २२ प्रतिज्ञायें बौद्धों के परम्परागत पंचशील या अष्टशील या दश-शील से भिन्न हैं। ये अपने-आप में परम्परागत बौद्ध धर्म के नव्य रूप को उभारती हैं। डॉ० अम्बेडकर ने अन्तिम दिनों में जो पुस्तक लिखी है "बुद्ध एण्ड धम्म" (बुद्ध और उनका धर्म) यह भी परम्परागत बौद्धों की दृष्टि से भिन्न-अभिन्न है। उसे "अम्बेडकर एण्ड हिज धम्म" अम्बेडकर और उनका धर्म ही कहा जा सकता है। इस अर्थ में यह नव-बौद्ध धर्म हो जाता है।

डॉ० अम्बेडकर का धर्मान्तरण एक करिश्मा है। यह गौतम बुद्ध के धर्म-चक्र प्रवर्तन से या अशोक के धर्म-प्रचार से या नागार्जुन के महायान से भिन्न कोटि का है। शायद भारतीय इतिहास में पहली बार अस्पृश्य जाति में जन्मे एक सताये हुए आदमी ने ब्राह्मण धर्म छोड़कर आत्म-सम्मान के लिए बौद्ध धर्म ग्रहण किया और उनके पीछे करोड़ों दलित या तो धर्म-परिवर्तन कर चुके हैं या उबर मन-हो-मन खिचे हुए हैं।

एक क्षत्रिय ने नहीं, राजपूत ने नहीं, एक महार ने, दलित ने धर्म परिवर्तन किया है और फिर दीक्षा दी है। ब्राह्मणवाद पर इससे जितनी करारी चोट लग रही है, उतनी किसी अन्दरूनी चीज से नहीं। इस अर्थ में भी यह नव-बौद्ध अन्दोलन है। नव-बौद्ध इसलिए भी कि यह देश के ही परम्परागत बौद्धों से

इनकी समस्याओं और सम्भावनाओं से अलग इन दलितों की पहचान बतलाता है। हिमालय में लद्दाख, लाहुल, स्पिति, किन्नौर, नेपाल, सिक्किम, भूटान, अरुणाचल, असम, त्रिपुरा, मणिपुर और मिजोरम परम्परागत रूप से बौद्ध हैं।

इस अर्थ में बौद्ध धर्म देश से कभी लुप्त नहीं हुआ। ये हिमालयी बौद्ध अपनी पराम्परागत संस्कृति, कला, भाड़े भाषा तन्त्र और रीति-रिवाज, पूजा-पाठ, गाने-बजाने के ऐश्वर्य में जीते हैं। जो दलित नहीं है। फिर भारत में तिब्बत के दुर्भाग्य से दलाईलामा सहित अनेक लामा, साधक, उपासक आ गये हैं।

स्थविरवादी देशों लंका, बर्मा, थाईलैण्ड, कम्बोडिया, लाओस, बंगाल देश आदि के बौद्ध भिक्षु विद्यार्थी और उपासक यहाँ आते जाते रहते हैं। इन परम्परागत बौद्धों की अपनी समस्या है। इनके बारे में अलग से लिख चुका हूँ।

तिब्बत पर चीन का कब्जा होने के बाद ये परम्परागत बौद्ध हिमालय में एक सांस्कृतिक शून्य में रह रहे हैं। तिब्बत में इनके धर्म, संस्कृति, व्यापार, चिकित्सा, कला, भाषा के नानाविध सम्बन्ध थे। यह अब नहीं है। शेष भारत से जुड़े नहीं हैं। इसलिए शून्य में हैं। ये परम्परागत बौद्ध हैं। जैसे ब्राह्मण का बेटा ब्राह्मण होता है। वैसे ही बौद्ध का बेटा बौद्ध ! उनके अपने कर्म काण्ड, रीति-रिवाज, टोटके आदि हैं, जो उसे बनाये रखते हैं, उन्हें त्रिशरण, पंचशील, अष्टांगिक मार्ग आदि बताने वाला कोई नहीं है। एक किस्म की जाति-प्रथा भी उसमें घुस गई है। मैं हिमालय के मध्य की दुर्गम घाटियों में उनकी समस्या और सम्भावनाएँ देखकर आया हूँ। ये समस्याएँ और सम्भावनाएँ नव-बौद्धों की नहीं हैं।

जैसे-जैसे समय बीतेगा, वैसे-वैसे नव-दीक्षित या नव-बौद्ध घिसते जायेंगे सिर्फ बौद्ध रह जायेंगे। समय के साथ-साथ अन्दर से ब्राह्मण संस्कार जीर्ण होता जायगा। संस्कार दुःख है। यह धर्म परिवर्तन के क्षण ही एक झटके में नष्ट नहीं हो जाते। धर्मान्तरण सिर्फ घटना रही। यह एक सतत चालू रहने वाली प्रक्रिया है। अन्तर बाह्य के

कु-संस्कारों से छुटकारा पाकर भी यह विशेषण छूट जायगा। इस-
लिए शायद एक अपरिहार्य बुराई के रूप में संक्रमण काल में नव-
दीक्षित बौद्ध चलेगा।

(श्री कृष्णनाथ, हैदराबाद - संघ प्रकाश मासिक पत्रिका दिल्ली,
अप्रैल-मई १९८१)

शेर की खाल में भेड़ियें !

बौद्ध धर्म क्या है ? इसका क्या मतलब है, भगवान बुद्ध क्यों प्रसिद्ध हुए, क्या कारण है ? जब तक लोग यह नहीं जानेंगे कि बौद्ध धर्म का अर्थ क्या है ? तब तक सही रूप से धर्म का प्रचार नहीं होगा। हर पुस्तक के अन्दर पढ़ने से पहिले उसके शीर्षक को समझ लेना जरूरी होता है। जैसे एक पुस्तक का नाम 'काव्य मन्दाकिनी' है, तो इसका मतलब हुआ "काव्य की गंगा" क्योंकि मन्दाकिनी का मतलब गंगा होता है। अब समझ में आयेगा कि इस पुस्तक के अन्दर क्या होगा ! इसी तरह हर चीज के शीर्षक को पहले समझ लेना चाहिए, फिर आगे बढ़ना उचित है।

देखिये ! भगवान बुद्ध के पहले किसी व्याक्त ने कोई ऐसा शास्ता नहीं बताया, जिससे मनुष्य के जीवन से लेकर मृत्यु तक जो दुःख मिलता है, उससे छुटकारा मिल सके। सबसे पहले भगवान बुद्ध ने अष्टांगिक मार्ग का आविष्कार करके जीवन रूपी दुःख से छुटकारा दिलाने का रास्ता बताया। इसके पहले तो सभी लोग बताते आये और अन्य लोग तो अभी भी यह कहते हैं कि ईश्वर की शरण में चलो, वह सबको मुक्त कर देगा।

भगवान बुद्ध के अनुसार मनुष्य के अपने कल्याण के लिए ईश्वर की मदद की कहीं जरूरत महसूस नहीं होती और इन्सान अपना कल्याण अपने-आप कर सकता है। इस अष्टांगिक मार्ग की खोज के कारण ही आज सब लोग भगवान बुद्ध को प्रधानता देते हैं और उनके प्रसिद्ध होने का मुख्य कारण भी यही है। इसलिए सभी वर्ग के लोग राजा से लेकर नाई, अस्पृश्य, डाकू, वैश्य तक उनकी शरण में आये।

भगवान बुद्ध की दूसरी विशेषता थी कि उन्होंने सबको शरण दी। किसी के साथ औरों जैसा भेदभाव नहीं करना। यह उनकी दूसरी विशेषता का कारण है। इसलिए लोग आज सारे विश्व में उनके अनुयायी बने हुए हैं। बन रहे हैं और अपने को बौद्ध धर्मी मानते हैं।

जो व्यक्ति **आर्य** अष्टांगिक मार्ग को नहीं जानते, उस पर विश्वास नहीं करते, वह लोग बुद्धिस्ट नहीं हैं। न ही उनको बुद्ध का अनुयायी समझा जा सकता है। बाबासाहेब ने भी आर्य अष्टांगिक मार्ग समझ लिया और उस पर विश्वास किया कि जो पुरुष आर्य अष्टांगिक मार्ग की शरण में जायगा, उसका कल्याण जरूर होगा। ऐसे विश्वास के बाद ही वह बुद्ध और संघ की शरण में गये। धर्म की शरण में गये, लेकिन देश और समाज की हालत को देखते हुए उन्होंने आर्य अष्टांगिक मार्ग को अमल में लाने से निर्वाण पथ की ओर अपने को असमर्थ पाया। उन्होंने अपना कल्याण न चाहकर दूसरों का कल्याण चाहा, इसलिए हम बाबासाहेब को नहीं भूल सकते।

जो लोग बाबासाहेब के जितने विद्वान तो नहीं हैं; किन्तु आर्य अष्टांगिक मार्ग का व्रत लेकर त्यागी जीवन व्यतीत कर रहे हैं, वे महान् हैं। वे अहंत भी हो सकते हैं। निर्वाणगामी भी हो सकते हैं। ये उनकी कर्म साधना सामर्थ्य पर निर्भर करती है। परन्तु बाबासाहेब आर्य अष्टांगिक मार्ग को समझने और स्वीकार करने के बाद भी पूर्ण रूप से अमल में न ला सके। वह जीवन भर गृहस्थ अवस्था में ही रहे। इसलिए वह निर्वाण को प्राप्त नहीं हो सकते थे। अतः अष्टांगिक मार्ग पर चलने वाले जो "भिक्षु" कहे जाते हैं, उनके लिए बाबासाहेब पूजनीय नहीं हो सकते।

यदि कोई भिक्षु ऐसा है, तो वह अभी अनभिज्ञ है। अभी उसे महान् विशुद्धि मार्ग की अनुभूति नहीं हुई है। जो उपासक भिक्षुओं से ऐसी उम्मीद करते हैं, वह भी भूल में रहे हैं और इसी भूल को सुधारने के लिए लोग बाबासाहेब को चोवर में भी दिखाने की

कोशिश करते हैं। कुछ चित्र चीवर में लोगों ने दिखाये भी हैं। जबकि सत्य यह है कि बाबासाहेब ने कभी चीवर नहीं लिया, इसका कोई सबूत नहीं है। यदि किसी के पास कोई सबूत है, तो पेश करे। ये एक गलती को सुधारने के लिए दूसरी गलती की जा रही है।

भगवान बुद्ध ने स्वयं कहा है कि लोग काम-भोगों में रत हैं, प्रमादी हैं, यह सूक्ष्म ज्ञान उनकी समझ के परे है। ऐसे सूक्ष्म ज्ञान को विवेकशील ज्ञानी पुरुष ही प्राप्त कर सकते हैं, जो कि महान् त्यागी हैं एवं साधना व शील पर खड़े हैं। ऐसे विज्ञ पुरुषों को ही महान् सूक्ष्म ज्ञान की अनुभूति होती है।

बाबासाहेब विद्वान जरूर थे लेकिन उन्होंने सिर्फ पंचशील का व्रत लिया था। भिक्षु लोग दशशील एवं २२७ उपशीलों का व्रत लेकर चलते हैं। इसलिए कोई भी भिक्षु बाबासाहेब यानि पंचशील के व्रतधारी को नमस्कार नहीं कर सकता। जिस तरह उपासक भिक्षुओं के बराबर आसन पर बैठ नहीं सकता। ठीक उसी तरह बाबासाहेब को भगवान तथागत के बराबर नहीं रखना चाहिए। वैसे तो अज्ञानी उपासक भी भिक्षुओं के बराबर बैठने की हिम्मत करते हैं। भगवान तथागत के बराबर विश्व के किसी भी भगवान को नहीं बिठाया जा सकता। जो बौद्ध धर्मी हैं, वह भगवान तथागत के बराबर कभी किसी को नहीं ला सकते।

हाँ कोई हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, यहूदी, पारसी आदि भगवान बुद्ध को अपने घर में, अपने मन्दिर में मर्जी से जिस जगह चाहे बिठा सकते हैं, उन्हें कोई कैसे रोक लेगा। जो सच्चे बौद्ध हैं, श्रद्धावान हैं, वह भिक्षु को हमेशा सम्मान सहित शुद्ध भोजन करा-येंगे। जो बौद्ध धर्मी नहीं हैं, वह तो बचा-खुचा, झूठा भोजन भी देकर दाताओं की सूची में नाम दर्ज करा सकते हैं।

आज अम्बेडकरवादी डॉ० अम्बेडकर को बुद्ध शास्ता के बराबर लाना चाहते हैं। कल अशोक, निचिरेन या फिर कोई धर्मपालवादी भी माँग करने लगेंगे। फिर तो तथागत के भाइयों की लाइन लग जायगी।

क्या कभी आपने अपने दिमाग से सोचा है कि यदि बाबासाहेब अपने को भगवान तथागत के बराबर बैठने योग्य समझते, तो उनकी शरण में क्यों जाते। फिर तो एक नये धर्म की नींव ही रख जाते। उनको भगवान बुद्ध की शरण में जाने की क्या जरूरत थी। आज आप को भी "बुद्ध शरण गच्छामी" के स्थान पर "अम्बेडकर शरण गच्छामी" या भीम शरण गच्छामी ही कहना पड़ता। ऐसे विचार वालों को ऐसा कहना भी चाहिए।

(ब्रजलास परिचालक, इलहाबाद उ. प्र.—संघ प्रकाश मासिक पत्रिका, दिल्ली, अप्रैल-मई-१९८१)

डॉ० अम्बेडकर केवल अस्पृश्यों के ही नेता नहीं थे। वह तो भारत के सभी लोगों के नेता थे। भले ही कुछ कट्टर धर्मान्धों को छोड़कर बाकी सभ्य समाज के वह प्रभावशाली नेता थे। अम्बेडकर विरोधी कट्टर पंथियों की संख्या इस देश में नागण्य है। अगर दलित समाज बाबासाहेब को केवल दलितों का ही नेता मानेगे, तो वह अम्बेडकर के महत्व को कम करने का प्रयास होगा।

भारत अध्यात्मवादी धर्म प्रधान देश है। उसकी रक्षा के लिए ही पूंजीपति समर्थित संसदीय लोकतन्त्र की स्थापना हुई है। अन्यथा कोई कारण नहीं था कि जिस देश की जनता ८०% गरीब है, ४०% तो एकदम गरीब हैं। ऐसे देश में पूंजीपति समर्थित संविधान की क्या आवश्यकता थी? अर्थात् एक आदमी ४० कारखानों का मालिक और एक आदमी को रहने के लिए झोपड़ी तक नहीं; ऐसे विरोधाभास वाला संविधान क्यों बनाया? यहाँ तो लेबर समर्थित संविधान की आवश्यकता थी; किन्तु सत्य यह है कि मजदूर संविधान के अन्तर्गत भारत के सहस्रों वर्षों से चले आ रहे अध्यात्मिक मूल्य की सुरक्षा सम्भव नहीं हो सकती थी। जो भारत के ९०% लोगों की नैतिक और दैनिक जीवन मूल्य की सम्पत्ति है। इसलिए ही गरीब देश में पूंजीपति संविधान लागू किया गया था। आज का संविधान ४१ वर्ष के अन्दर ७५ बार संशोधित हो चुका है। अर्थात् उसकी पवित्रता समाप्त हो चुकी है। इसका ठीक निर्वचन इस प्रकार है—

सर्वप्रभुता सम्पन्न, धर्म निरपेक्ष, पूँजीपति समर्थित, आधुनिक संसदीय लोककन्त्र है, आगे और कितने संशोधन होने बाकी हैं कौन जाने ! बाबासाहेब ने एक बार कहा था मैंने देवता के लिए संविधान बनाया था, किन्तु उसमें राक्षस लोग जबरदस्ती बैठ गये हैं ; कहकर ही मन्त्रिमण्डल से त्यागपत्र दिया था । इस सम्बन्ध में अधिक जानकारी नेता लोगों के पास होगी । इसी के आधार पर मैंने बाबासाहेब को सभी नेताओं के ऊपर बताया है ।

एक बार वत्स गोत्र परिव्राजक ने भगवान से कहा—हे गौतम ! क्यों अस्तित्व है ? यह पूछने पर भगवान चुप रहे । हे गौतम ! क्या नास्तित्व है ? यह भी पूछने पर भगवान चुप रहे । तब वत्स गोत्र परिव्राजक आसन से उठकर चला गया । उसके चले जाने के बाद आनन्द भगवान से बोले, भन्ते ! वत्स गोत्र परिव्राजक द्वारा पूछे जाने पर आपने उत्तर क्यों नहीं दिया ? आनन्द ! यदि मैं वत्स गोत्र को अस्तित्व है, कह देता, तो क्या यह लोगों को सभी धर्म अनात्म हैं, इसके ज्ञान के ज्ञान देने में अनुकूल होता ? नहीं भन्ते ! आनन्द ! यदि मैं वत्स गोत्र को 'नास्तित्व है' कह देता तो उस मूढ़ का मोह और भी बढ़ जाता—पहिले आत्मा अवश्य था, जो इस समय नहीं है ।

(आनन्द सुत्त-संयुक्त निकाय ४२-१०)

भगवान ने शाश्वतवाद और उच्छेदवाद का खण्डन करके मध्यम मार्ग खोज निकाला था । हमें उसी मार्ग का अवलम्बन करना है । इसलिए अस्तित्ववाद और नास्तित्ववाद को त्याग देना चाहिए ; क्योंकि ये दोनों मिथ्या दृष्टि नरकगामी हैं ।

प्रश्न (१८) कुछ भ्रान्तियों का निराकरण ?

उत्तर—इन प्रश्नों में मुख्यतः नास्तिकों द्वारा मुझसे सात प्रश्न पूछे गये थे, उन सबका उत्तर मैंने दे दिया है जैसे—

(१) कुछ लोगों का मत है कि बुद्ध धर्म निराशावाद है ; क्योंकि वह दुःख से शुरू होता है और ससार को प्रत्येक वस्तु को अनित्य, क्षणिक, दुःख और अनात्मा के रूप में देखता है, इसलिए बुद्ध धर्म निराशावाद है ।

उत्तर—निश्चय ही यह धर्म दुःख को मंजूर करता है, किन्तु इस महादुःख से छूटने का मार्ग भी यह धर्म बतलाता है। इसलिए यह धर्म एक महान आशावाद भी है, निराशावाद नहीं; क्योंकि परमात्मा, परमेश्वर तथा उसके दलाल (पुत्र, दूत, अवतार) और उसके पुरोहितों की सहायता के बगैर स्वयं प्रज्ञा एवं बुद्धि बल से इहलोक और परलोक से भी मुक्ति दिलाने वाला निरपेक्ष और स्वावलम्बी धर्म जो अमृतदायक भी है, निराशावाद कैसे हो सकता है? सोचिये! अतः बौद्ध धर्म निराशावाद नहीं है।

(२) क्या बौद्ध धर्म नास्तिकवाद (उच्छेदवाद) है?

उत्तर—कभी नहीं! नास्तिकवाद या उच्छेदवाद का ध्येय केवल भौतिक सुख भोग एवं मनोरंजन के अलावा कुछ भी नहीं है और वह बिना उद्देश्य का एक पशु तुल्य जीवन है। बौद्ध धर्म पाप-पुण्य, कर्म-फल, परलोक-पुनर्जन्म, स्वर्ग-नरक और देवताओं पर पूर्ण विश्वास करने वाला अध्यात्मवादी धर्म और दर्शन है। अतः भौतिकवादी देहाभिमानि इन्द्रियों का गुलाम नास्तिकवाद नहीं हो सकता। इसलिए बौद्ध धर्म को नास्तिक कहना मस्करी, मूर्खता और बकवास है।

(३) क्या बौद्ध धर्म आस्तिक (शाश्वत) वाद है?

उत्तर—कभी नहीं! आस्तिकवाद या शाश्वतवाद अथवा परमेश्वरवाद व परमात्मवाद एक मिथ्या कल्पनाएँ हैं। ससार में शाश्वत अजर-अमर, ईश्वर या परमात्मा अथवा ब्रह्म आदि नामक कोई सत्ता या तत्त्व नहीं हैं; क्योंकि दृश्यमान व अदृश्य मान समस्त पदार्थ क्षणिक हैं। प्रवाहमय हैं एवं उत्पत्ति और नाश के बीच में हैं। अतः उसमें अजर, अमर, नित्य, एक रस एवं ध्रुव सत्य आदि के लिए कोई गुन्जाइश नहीं है। इसलिए आस्तिकवाद महा मूर्खता का परिचायक है।

(४) क्या आधुनिक विज्ञान बौद्ध सिद्धान्तों से आगे है?

उत्तर—कभी नहीं। आज के विज्ञान (साइन्स) द्वारा अत्यधिक विकास अवश्य हुआ है। मानवोपयोगी अनेक वस्तुओं का अविष्कार

किया है और करता जा रहा है ; किन्तु वह अब तक अच्छा है । अन्यथा वह अपनी शक्ति का दुरुपयोग करके प्राणियों को जल्दी समाप्त करने वाले अणु बम, मिसाइल या विषबम आदि अनेक संहार के लिए उपयोगी अस्त्र पैदा नहीं करते । वैसे तो समस्त आधुनिक विज्ञान भगवान बुद्ध के क्षणिकवाद, विज्ञानवाद या शून्यवाद के ऋणी हैं । विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक जिससे एटम शक्ति को पहचाना "आईस्टोन" तक इस सत्य को कबूल कर चुका था ।

आधुनिक मनुष्य साइन्स के जरिए चन्द्र, मंगल या शुक्र अथवा अन्य कोई ग्रहों पर अपना आधिपत्य प्राप्त करें किन्तु वहाँ भी शोक, जरा, मरण, रोग, उसका पीछा करेंगे । अर्थात् जब तक मृत्यु से बचने की कोई दवा (उपाय) खोज निकालने तक आधुनिक विज्ञान अपूर्ण है । जब तक वह पूर्ण नहीं है तब तक उसे आदर्श मानना ठीक नहीं है । विज्ञान धार्मिक या अध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता ।

(५) क्या बुद्ध विष्णु के अवतार थे ?

उत्तर—कभी नहीं, क्योंकि विष्णु या दूध के समुद्र में आदिशेष नाग पर शयन किया हुआ नारायण नामक कोई ऐतिहासिक पुरुष हुआ ही नहीं । यह एक कपोल कल्पना मात्र है । आश्चर्य है कैसे अवतार ? किसके अवतार ? ऐसा कोई नहीं जो अवतार ले सके । यह अवतारवाद विदेशी यूनानी (३३६-३५० ई० पू०) शक कुशाण (५० से १७६ ई०) तथा इजिप्त के यहूदी लोग (३०० ई०) में भारत लाये थे तथा उसकी नकल भारतीय पुराणों के लेखकों ने (३०० से ५०० ई०) तक अपने पुराणों में उतारी है ।

भगवान बुद्ध के १००० वर्ष बाद ही भारत में अवतारवाद जोरों पर प्रचलित हुआ था । अतः इस अवतारवाद से बौद्ध धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं है । ये बौद्ध प्रभाव को हड़पने के लिए ब्राह्मणों की कुटिलतापूर्ण चालबाजी मात्र है कि बुद्ध को अवतार मानकर अपने में मिलाने का यह एक षडयन्त्र था ।

(६) शंकराचार्य ने बौद्धों का मूलच्छेद किया था ?

उत्तर—हाँ यह बात पूरी सत्य है, किन्तु इसी समय का शंकराचार्य (७८८-८२० ई०) जैनियों का कुछ भी बिगाड़ न सका। जैन भी बौद्धों की तरह अवैदिक एवं अनीश्वरवादी धर्म है; ऐसा क्यों? शंकर ने अपने शिष्य राजाओं के बल पर राजनीतिक सहारा लेकर भारत में बौद्धों का उन्मूलन किया था यह सत्य है न कि दार्शनिक ज्ञान या विद्या के बल पर जैसे आम लोगों की धारणा है।

और शंकराचार्य के दादागुरु गौड़पाद (७२५ ई०) अपने आगम के लिए बौद्धों के ऋणी हैं। इसलिए यह प्रकट बौद्ध कहलाये तथा शंकर प्रच्छन्न बने रहे; क्योंकि शंकर का मायावाद या अद्वैतवाद बौद्धों के विज्ञानवाद की नकल है। इतना सब होने के बाद भी आज एशिया में हिन्दुओं से पाँच गुना अधिक बौद्धों की संख्या है और एशिया के अनेक देश बौद्ध धर्मी हैं। वहाँ बौद्ध धर्म राष्ट्र धर्म है, इन सबको कोई शंकराचार्य नष्ट क्यों नहीं कर सका? हिन्दुओं के अनुसार कश्मीर से कन्याकुमारी तक बौद्धों को शास्त्रार्थ में पराजित करने वाले शंकराचार्य नालन्दा विश्व विद्यालय में क्यों नहीं गये। यदि वह काशी में गये थे, तो वहाँ से नालन्दा अधिक दूर तो नहीं था। फिर शंकराचार्य नालन्दा बौद्ध विश्व विद्यालय में क्यों नहीं गये शास्त्रार्थ करने या वाद विवाद करने? शंकर के बाद भी ३५० वर्षों तक नालन्दा विश्व विद्यालय सारे एशिया को ज्ञान की ज्योति देता रहा था। स्पष्ट है वहाँ के विद्वान के सामने ठहरने की हिम्मत उस शंकराचार्य में नहीं थी। इसलिए वहाँ नहीं गये।

अतः स्पष्ट है कि शंकराचार्य द्वारा बौद्धों को शास्त्रार्थ में हराने की सारी कहानियाँ मनगढ़न्त दन्तकथा और ब्राह्मणों के नितर्लज्जता पूर्ण प्रलाप और षड्यंत्र मात्र हैं। उसमें सत्य का अंश लेशमात्र भी नहीं है। हाँ राजशक्ति से बौद्धों का सामूहिक हत्या करायी थी। यह बात सत्य है अर्थात् शंकराचार्य ने अपने शिष्य राजाओं को भड़काकर बौद्धों को सामूहिक हत्या करायी थी। विस्तार के लिए मेरे द्वारा लिखे गये “बुद्ध विश्व विजय” नामक ग्रन्थ का अवलोकन करें।

(७) बौद्ध धर्म की विशेषता क्या-क्या हैं ?

उत्तर—वैसे तो इस धर्म की अन्य धर्मों के साथ तुलना करने पर बहुत सी विशेषताएँ हैं, किन्तु मुख्य रूप से विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं—

१. यह धर्म वैज्ञानिक धर्म है—यह धर्म सभी प्रकार के वैज्ञानिक परीक्षणों से परीक्षा किये जाने पर खरा उतरता है ।
२. यह धर्म ऐतिहासिक धर्म है—बौद्ध धर्म ऐतिहासिक धर्म है । मनगढ़न्त दन्त कथा या आसमानी गप्प नहीं है ।
३. प्रज्ञा प्रधानता है, इस धर्म के आदर्श पुरुष 'अर्हत' को ज्ञानी होना जरूरी है । अन्य धर्मों की तरह अन्ध-भक्ति से काम नहीं चलेगा ।
४. तर्क पूर्ण होना है—इस धर्म में बुद्धि प्रधान बहस के लिए पूरा स्थान है ।
५. वीर्य प्रधान होना है—इस धर्म में बौद्धों के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है । सभी कुछ करने में समर्थ है ; क्योंकि बौद्ध स्वयं अपना मालिक है, उसका मालिक कोई नहीं है ।
६. समतापूर्ण है—इस धर्म में किसी प्रकार की जातीय-विषमता भेद नहीं है । सभी मनुष्य जन्म से ही समान हैं । इस धर्म में जाति, रंग भेद या लिंग भेद के लिए कोई स्थान नहीं है ।
७. निरपेक्षतापूर्ण है—ईश्वर, परमात्मा, वेद तथा मिथ्या ईश्वर के पुत्र, दूत, अवतार या अन्य किसी दैवीय दलालों या परमात्मा के एजेण्टों के लिए कोई स्थान नहीं है ।
८. बौद्ध स्वयं अपनी चित्त-शुद्धि, पवित्र आचरण और कर्तव्य परायणता द्वारा इस लोक और परलोक को जीतने की सामर्थ्य रखता है । इसलिए "बुद्धया यया निवर्तते सः बौद्धः" कहा गया है ।

यही सब इस महान् बौद्ध धर्म की विशेषताएँ हैं, जो कि संसार के अन्य किसी भी धर्म में नहीं पायी जाती हैं । अतः बुद्धिमानों तथा सत्य के खोजियों को निष्पक्षता से गम्भीरता पूर्वक इस पर विचार करना चाहिए ।

प्रश्न (१६) अम्बेडकरवाद के विभिन्न रूप ?

उत्तर—बाबासाहेब अम्बेडकर ने दलित एवं अस्पृश्य कहलाने वाले समाज के उद्धार के लिए जीवन भर बहुत कष्ट उठाकर सशक्त माध्यम से बौद्ध धर्म और रिपब्लिकन पार्टी को स्थापित किया था ; किन्तु खेद की बात है कि दोनों मोर्चों पर उनके अनुयायी बुरी तरह विफल हो चुके हैं। उदाहरण धर्मान्तरण के ३६ वर्ष बाद भी २% भी पक्के बौद्धधर्मी नहीं बन सके और राजनीति का भी यह हाल है ; एकता न होने के कारण अनेक टुकड़ों में विभक्त हैं। इसलिए दोनों मोर्चे पर विफल हुए हैं।

उदाहरण १९५६ के संयुक्त महाराष्ट्र आन्दोलन के बाद १९५७ के चुनाव के समय पी. के. अत्रे के नेतृत्व में गठित 'संयुक्त महाराष्ट्र समिति' में कांग्रेस के बाद विधान सभा में सबसे बड़ी पार्टी रिपब्लिकन ही थी। आज उसको एक सीट के लिए दूसरी पार्टी का मुँह ताकना पड़ रहा है, इससे बड़ा पतन और क्या हो सकता है। १९६० में कांग्रेस से समझौता करने के बावजूद भी १० में से एक भी सीट प्राप्त नहीं कर सकी।

विगत १९-१२-८६ को करीब १३ पार्टियों ने मिलकर संयुक्त रिपब्लिकन पार्टी बनाने का नाटक दो महिने तक चलाया उसमें कुछ सफलता भी मिली थी ; किन्तु बाद में अब अनेक खेमों में विभक्त हो चुकी है। आगे क्या होता है, कौन जाने ; क्योंकि राजनीति निरन्तर परिवर्तनशील और अस्थिर होती है।

स्वतन्त्रता के बाद भारत का राजनीतिक क्षितिज दो खेमों में बँट गया था—एक सवर्ण जातिवाद जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य जातियाँ शामिल हैं। दूसरा दलित जातिवाद जिसमें शूद्र, अतिशूद्र, दलित जातियाँ आती हैं। दलित जातिवाद के ३५% लोगों को डॉ० अम्बेडकर के बाद कांग्रेस ने खरीद लिया था। बाकी ३५% को १९६० के चुनाव में उत्तर भारत में कांशीराम और महाराष्ट्र में कांग्रेस ने भी खरीद लिया है। बाकी ३०% इधर-उधर बिखरे हुए हैं। इनमें जनता दल, भारतीय जनता पार्टी, समाजवादी

जनता पार्टी, शिव सेना और कुछ हाजी मस्तान आदि गुमराह-तत्वों में मिल गये हैं ।

डॉ० बी. आर. अम्बेडकर को मरणोपरान्त १४ अप्रैल १९६० को ३४ वर्ष बाद भारत सरकार ने "भारत रत्न" की पदवी से विभूषित किया है । यह अलंकरण स्वीकार करके उनके अनुयायियों ने बाबासाहेब के "बोधिसत्व" होने के दावे को समाप्त कर दिया है ; क्योंकि "बोधिसत्व" को किसी अलंकरण की आवश्यकता नहीं होती है । वह सभी राजनीतिज्ञों और सम्राटों से भी ऊपर की पदवी होती है ।

बोधिसत्व किसी भी देश के तुच्छ अलंकरण और डिग्रियाँ स्वीकार करने वाले नहीं होते हैं ; क्योंकि यह सब उनके लिए निरर्थक हैं । ३० पारमिता पार होने के साधन या गुण धर्म, दश पारमिता, दश उप पारमिता और दश परमार्थ पारमिता की पूर्ति "बोधिसत्व" की पदवी होती है । आगे सिर्फ एक पदवी बाकी रह जाती है वह है "अर्हत" इसके अलावा संसार की अन्य पदवी बोधिसत्व से तुच्छ होती है ।

भारत रत्न तो बहुतों को दिया जा चुका है । आगे भी बहुतों को दिया जायेगा अर्थात् २२वाँ भारत रत्न अम्बेडकर है, २३वाँ भारत रत्न दक्षिण अफ्रीका के नेता नेल्सन मण्डेला है । २४वाँ सरदार पटेल और २५वाँ राजीव गांधी हैं । भारत रत्न सहित सभी पदवियाँ बोधिसत्व के पैरों तले रखने लायक भी नहीं हैं । फिर अम्बेडकर के अनुयायियों ने बोधिसत्व के लिए यह पदवी कैसे स्वीकार किया ? यह अत्याश्चर्य की बात है । इसका एक ही कारण हो सकता है कि अम्बेडकर अनुयायियों की बौद्ध धर्म के प्रति गहरी अज्ञानता । अर्थात् अब तक अम्बेडकर पन्थी लोग बौद्ध धर्म को समझ नहीं पाये हैं ।

कितनी ही बार ऐसी पदवियाँ भारत सरकार ने दलाईलामा को देने की कोशिश की थी ; किन्तु लामा ने यह कहकर उसे अस्वीकृत कर दिया था कि 'बोधिसत्व' का अवतार दलाईलामा को कोई भौतिक डिग्रियों की आवश्यकता नहीं है । इस घटना से दो बातें

निर्विवाद सिद्ध हुई हैं—(१) डॉ. अम्बेडकर बोधिसत्त्व नहीं थे या उन्हें बोधिसत्त्व कहना निरर्थक था। (२) अगर बोधिसत्त्व थे तो उन्हें कोई सांसारिक डिग्रियों की आवश्यकता नहीं होती है।

फिर 'भारत रत्न' अलंकरण को कैसे स्वीकार किया ?। इससे अम्बेडकरवाद के पीछे जो बौद्ध नीति चल रही थी, उसका खोखलापन उजागर हो चुका है। सबसे बड़े खेद की बात है कि दलितवाद के पैरों तले अज्ञानवश भगवान बुद्ध के धम्म और भिक्षुओं को कुचला जा रहा है। यह देखकर सच्चे बौद्ध धर्मियों का दिल दहल रहा है। क्या किया जाय। आगे भी अनेक पीढ़ियों तक यह स्थिति बनी रहने की पूरी सम्भावना है। जब तक यह समाज पूरी तरह धम्मिक नहीं बन जाता।

शत-प्रतिशत अम्बेडकरवादियों का कहना है कि बाबासाहेब के धर्म परिवर्तन करने का मूल उद्देश्य जातिवाद जहर की समाप्ति था। समता और स्वाभिमान के लिए धर्म परिवर्तन किया। समता और सम्मान मिलता तो वह धर्म नहीं छोड़ते; यानि बाबासाहेब ने अगर ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य कुल में जन्म लिया होता, तो वह धर्म परिवर्तन नहीं करते। उन्होंने अति शूद्र समाज का होने के कारण अस्पृश्यता मिटाने के लिए ही धर्म परिवर्तन किया था। अगर यह बात सही है तो सिद्ध है कि धर्म परिवर्तन के मूल में बुद्धिस्ट फिलासफी (बौद्ध दर्शन) नहीं जातिवाद है। क्योंकि एक बार वह सिख धर्म स्वीकार करने की भी तैयारी कर चुके थे (कहने की आवश्यकता नहीं सिख धर्म ईश्वरवादी है, लेकिन उन्हें सिख धर्म में भी अनेक प्रकार के जातिवाद और जाति-विषमता दिखाई दी थीं। इसलिए भी बाबासाहेब ने सिख धर्म स्वीकार नहीं किया।

स्पष्ट है कि अगर बाबासाहेब को पूर्ण सम्मान और समता मिलती तो वह ईश्वरवादी धर्म में भी जाने को तैयार थे। अतः वे बौद्ध धर्म और दर्शन से अधिक हिन्दू विरोधी पूर्वग्रह और जातीय विषमता को महत्व देते थे। उन्होंने जातिवाद समाप्त करने के लिए बौद्ध धर्म स्वीकार किया था।

इसलिए उनके अनुयायी लोग भी बौद्ध धर्म के दर्शन या तत्त्व-ज्ञान सिद्धान्त को कम महत्व देते हैं और ८०% लोग सिर्फ एक बोधिसत्ववाद का ही प्रलाप अलापते हैं और उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं देता है। इसलिए वे थेरवाद, महायान और वज्रयान को एक ही समझते हैं।

मुझे (लेखक) अगर ब्राह्मण, क्षत्रिय या देवताओं का राजा इन्द्र बना दिया जाये, तो भी ईश्वरवादी धर्म में जाने की सोच नहीं सकता था। मुझे भगवान् तथागत बुद्ध के निरपेक्ष दर्शन ने इतना प्रभावित किया कि भारत के सभी दर्शन उसके सामने तुच्छ एवं निस्सार दिखाई दिये हैं। तब ही मैंने इसे स्वीकार किया है, न कि अन्य किसी व्यक्ति के प्रभाव में आकर।

सत्य की खोज तथा उसका विश्लेषण एवं उसे अन्यो के लिए भी उपयोग हेतु प्रकाशन और प्रसारित करना एक दार्शनिक का जन्म सिद्ध अधिकार है। मैं विगत ३५ वर्षों से भारतीय दर्शन का विद्यार्थी रहा हूँ और एक धार्मिक भिक्षु के नाते जैसा भूमिका में कहा है—आस्तिक और नास्तिकों से बौद्ध धर्म को बचाने के लिए प्रयत्न करना मेरा परम कर्तव्य है। इस कर्तव्य की पूर्ति करते हुए मेरी जान भी चले जाय, तो मैं स्वयं को अहो भाग्य समझूंगा।

अब यह देखें कि अम्बेडकरवाद के कितने रूप हैं? उसकी एक छोटी-सी सूची प्रस्तुत है—

अम्बेडकरवादी राजनैतिक पार्टियाँ	नेतागण
१. भारतीय रिपब्लिकन पक्ष	(बी. सी. काम्बले)
२. रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इण्डिया	(आर. एस. गवई)
३. आल इण्डिया रिपब्लिकन पार्टी	(के. आर. खोत्रागडे)
४. भारतीय रिपब्लिकन पक्ष	(गीताबाई गायकवाड़)
५. आल इण्डिया रिपब्लिकन पार्टी	(प्रो. एस. बालकृष्णन)
६. बण्डखोर रिपब्लिकन ऐक्यवादी चलवल	
७. रिपब्लिक पार्टी ऑफ इण्डिया	(काकासाहेब खम्बालकर) (प्रकाश अम्बेडकर)

८. महाराष्ट्र रिपब्लिकन पार्टी (डी. पी. काम्बले)
 ९. राष्ट्रीय रिपब्लिकन पार्टी (एडवोकेट ताजने)
 १०. भारतीय दलित पैन्थर (अब आर. पी. ऐ.) (रामदास आठवले)
 ११. दलित पैन्थर (नामदेव ठसाल)
 १२. दलित मुक्ति सेना (प्रो. जोगेन्द्र कवाडे)
 १३. बहुजन समाज पार्टी (मा. कांशीराम)
 १४. शोषित पीडित समाज (मोतीराम शास्त्री, उ. प्र.)
 १५. ऐक्यवादी क्रान्ति दल (डा. नारायण गायकवाड)
 १६. प्रेक्टीकल सोशियलिज्म (भाई संगारे)
 १७. बुद्धिस्ट होमलैण्ड पार्टी (बी. आर. लोखण्डे, नागपुर)
 १८. डी. एस. फोर (मा. कांशीराम)
 १९. अखिल भारतीय माँस मूमेण्ट (मूरत सिंह, उ. प्र.)
 २०. माँस मूमेण्ट (राजा ठाले, बम्बई)
 २१. दलित सेना (रामविलास पासवान)
 अम्बेडकरवादी धार्मिक, शैक्षणिक एवं साहित्यिक संस्थायें
 २२. भारतीय बौद्ध महासंघ (स्व. आर डी. भण्डारे)
 २३. बुद्ध शासन सभा (बी. सी. काम्बले)
 २४. भारतीय बौद्ध महासभा (मीराताई अम्बेडकर)
 २५. भारतीय बौद्ध महासभा (अशोक अम्बेडकर)
 २६. भारतीय बौद्ध परिषद (आर. आर. भोले)
 २७. पीपुल ऐजुकेशन सोसाइटी
 २८. त्रैलोक्य बौद्ध महासंघ (संघरक्षित पूणे)
 २९. बौद्ध पंचायत (घनश्याम तलबड़कर)
 ३०. अखिल भारतीय नव-बौद्ध मंच (राहुल बोधि-दादा रूपवते)
 ३१. महाराष्ट्र बौद्ध साहित्य परिषद (अप्पा रणपीसे)
 ३२. बुद्धिष्ट इन्टरनेशनल सेंटर आफ इण्डिया (प्रो. एन. जी. मेश्राम)

कुछ मराठी संस्थायें

३३. बुद्धिस्ट यूथ फेडरेशन
 ३४. भारतीय बुद्धिस्ट काउन्सिल

३५. दलित साहित्य संसद
 ३६. अस्मितादर्श
 ३७. जनवादी साहित्य चलवल
 ३८. अम्बेडकर प्रेरणेचे साहित्य
 ३९. बौद्ध प्रेरणेचे अम्बेडकर साहित्य

पत्र-पत्रिकायें

४०. भीम पत्रिका, पाक्षिक (एल. आर. वालो, पंजाब)
 ४१. निर्णायक भीम, मासिक (राजकमल, कानपुर)
 ४२. सिंहनाद, साप्ताहिक (सुन्दरलाल सागर, मैनपुरी उ. प्र.)
 ४३. हिन्दू सैनानी, दैनिक (दुर्गाप्रसाद देशमुख, आगरा उ. प्र.)
 ४४. बोधिसत्व प्रकाशन (कँवल भारती, रामपुर उ. प्र.)
 ४५. बुद्धभीम सन्देश (धौलपुर, राजस्थान)
 ४६. प्रबुद्ध अम्बेडकर (राम स्वरूप, अजमेर, राज.)
 ४७. बहुजन उत्थान (आर. के. पाटलोपुत्र, बम्बई)
 ४८. आम्नपाली (मराठी) (नलावडे, बम्बई)
 ४९. बहुजन कल्याण प्रकाशन (चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु, लखनऊ)
 ५०. बुद्धिस्ट पब्लिकेशन (प्रो. सुरेन्द्र अज्ञात, पंजाब)
 ५१. प्रज्ञा विजय, मासिक (भिक्षु प्रज्ञारत्न, बुलन्दशहर उ. प्र.)
 ५२. युग प्रबोध (मराठी) (शान्ताराम वाघमारे, बम्बई)
 ५३. भीम सन्देश ,, (परभणी, महाराष्ट्र)
 ५४. आन्दोलन ,, (जालना, महाराष्ट्र)
 ५५. बुद्धदेश, मासिक (रक्षपालसिंह बौद्ध, मैनपुरी उ. प्र.)
 ५६. दलित वाईस
 ५७. बहुजन संगठन
 ५८. हिमायती
 ५९. दलित चेतना
 ६०. सुब-ए
 ६१. ड्राईवल वाईस
 ६२. अम्बेडकर साहित्य परिषद, नारायणमूर्ति, हैदराबाद

संक्षेप में "महाराष्ट्र बौद्ध साहित्य परिषद" की सूची में अम्बेडकरवादियों की पत्र-पत्रिकाओं का उल्लेख है, जिनकी संख्या २८१ है।

अम्बेडकरवादी कुछ नेताओं के नाम

१. पेरियर ललईसिंह	कानपुर	उ. प्र.
२. जगन्नाथ आदित्य	"	"
३. माताप्रसाद सागर	"	"
४. सोहनलाल शास्त्री	लखनऊ	"
५. शंकरानन्द शास्त्री	गाजियाबाद	"
६. भँवरलाल बौद्ध	देहरादून	"
७. खेमचन्द सौगत	आगरा	"
८. मास्टर मानसिंह	"	"
९. बनवारी लाल विप्रा	"	"
१०. माणिक चन्द सागर	"	"
११. गोपीचन्द पिपल	"	"
१२. रामजीलाल सुमन	"	"
१३. संघप्रिय गौतम	बुलन्दशहर	"
१४. जी. डी. मदन	इलाहाबाद	"
१५. डा. अंगनेलाल	लखनऊ	"
१६. रेवतीराम	"	"
१७. बी. पी. मौर्य	अलीगढ़	"
१८. धम्म रतन, किच्चा	नैनीताल	"
१९. पार्श्वनाथ मौर्य	जौनपुर	"
२०. डा. धम्म रतन	झाँसी	"
२१. महेन्द्रपाल बौद्ध	बरेली	"
२२. डी. आर. जाटव	गंगानगर	राजस्थान
२३. डा. अमरसिंह	जयपुर	"
२४. लल्लासिंह	"	"
२५. श्रीमती ईश्वरी बाई	हैदराबाद	"
२६. कुमारसेन बौद्ध	दिल्ली	"

२७. अमरनाथ शील	दिल्ल.	
२८. विनीत विक्रम बौद्ध	रीवा	मध्यप्रदेश
२९. सी. एस. बनजारी	भोपाल	"
३०. पी. जी. ज्योतिकर	अहमदाबाद	गुजरात
३१. एम. डी. मदन	"	"
३२. जनबन्धु कौशास्त्री	"	"
३३. एडवोकेट बकुल	"	"
३४. डॉ. पी. एस. इंगलो	हैदराबाद	आन्ध्र प्रदेश
३५. हरिभाऊ दामले	"	"
३६. उपासक राष्ट्रपाल	"	"
३७. बसव लिंगप्पा	बैंगलूर	कर्नाटक
३८. सी. एम. अरुमुगम	"	"
३९. वी. कुप्पु स्वामी	मद्रास	तमिलनाडु
४०. वै. बाल सुन्दरम्	"	"
४१. एम. मूर्ति	"	"
४२. एम. सुन्दरराजन	"	"
४३. डॉ. चैप्पन	"	"
४४. शक्ति दासन	"	"
४५. अम्बेडकर दासन	"	"
४६. अम्बेडकर प्रियन	"	"
४७. टी. के. तमिल अरसन	"	"
४८. शिव लिंगम	"	"
४९. एलिन मलै	"	"
५०. एम. डी. पंचभाई	नागपुर	महाराष्ट्र
५१. वी. आर. गोडविले	"	"
५२. मानके गुरुजी	"	"
५३. दीनबन्धु शेगांवकर	अकोला	"
५४. गुरु गोपाल चक्र नारायण	"	महाराष्ट्र
५५. मोहन गजघाटे	नागपुर	"

५६. अशोक गोडघाटे	नागपुर	५७
५७. वासुदेव गणार	"	५८
५८. सदानन्द कुलझाले	"	५९
५९. भीवराव गायकवाड़	"	६०
६०. गंगाधर पानतावणे	"	६१
६१. तुलसी पगारे	"	६२
६२. बाजीराव काम्बले	पुणे	६३
६३. एल. टी. सावन्त	" महाराष्ट्र	६४
६४. श्रीमती रूपा कुलकर्णी	"	६५
६५. श्रीमती नीलम गोहे	"	६६
६६. गंगाधर गाडे	ओरंगाबाद	६७
६७. कुसुमवाई वागुल	"	६८
६८. शिंदे एडवोकेट	"	६९
६९. रतन पण्डागले	"	७०
७०. एस. टी. प्रधान	"	७१
७१. बी. एस. गायकवाड़	"	७२
७२. मधुकर इंगले	बीड	७३
७३. श्रीमती विजया मधुकर इंगले	"	७४
७४. बाबूराम म्हस्के	"	७५
७५. सम्भाजी जोगदण्ड	"	७६
७६. प्रतापराव धन्वे	नान्देड	७७
७७. डा. जी. पी. गायकवाड़	"	७८
७८. येवले मामा	कोल्हापूर	७९
७९. पाण्डुरंग यादव	सतारा	८०
८०. डा. श्रमण कुमार बनसोडे	"	८१
८१. बनसोडे एडवोकेट	कराड	८२
८२. प्रा. वडोले गुरुजी	परभणी	८३
८३. निलकर	पूर्णा, परभणी	८४
८४. विनायक भोसले, कुलम, उस्मानाबाद	"	८५

	उस्मानाबाद	महाराष्ट्र
८५. जे. टी. काम्बले	"	"
८६. रंगनाथ काम्बले	"	"
८७. साहेबराव कदम	"	"
८८. एम. एम. खलसे	"	"
८९. बी. एन. गायकवाड़	"	"
९०. यशपाल सरोडे	"	"
९१. वेंकटराव रणधीर	धुलै	"
९२. वसन्तराव मून	बम्बई	"
९३. एम. एस. मोरे	"	"
९४. पी. टी. बोराले	"	"
९५. आर. जी. खरात	"	"
९६. आर. एन. चौहान	"	"
९७. श्रीधर जाधव	"	"
९८. प्रो. अरुण काम्बले	"	"
९९. बी. एम. धावरे	"	"
१००. प्रो. चन्दन सिवे	"	"
१०१. अर्जुन हांगले	"	"
१०२. अविनाश महालेकर	"	"
१०३. चन्द्रकान्त हण्डोरे	"	"
१०४. निर्मल आपटे	"	"
१०५. सुमन्त गायकवाड़	"	"
१०६. प्रकाश खाण्डेकर	"	"
१०७. एकनाथ दादू काम्बले	सांगली	"
१०८. जगन्नाथ विष्णु उर्फ बाबा भारती	इस्लामपुर सांगली (महा.)	
१०९. जनार्दन चान्दुरकर	बम्बई	महाराष्ट्र
११०. विजय काम्बले	"	"
१११. रावसाहेब रावखडे	"	"
११२. एन. एम. काम्बले	"	"
११३. कचरुमल जैन	बालाघाट	मध्यप्रदेश

११४. गुलाब सेहरा	आगरा	उत्तरप्रदेश
११५. आजाद कुमार कर्दम	"	"
११६. दयानन्द म्हस्के	बम्बई	महाराष्ट्र
११७. शंकरराव खरात	"	"
११८. एस. एस. रेगे	"	"
११९. दया पवार	"	"
१२०. डॉ. जनार्दन वाघमारे	"	"
१२१. लक्ष्मण माने	"	"
१२२. बी. एम. अंभईकर	"	"
१२३. टी. एस. शृंगारे	"	"
१२४. राहुलायन गौतम	उत्तरप्रदेश	
१२५. राजकिशोर	"	
१२६. मुनिराम	"	
१२७. डॉ. शिवकान्त	"	
१२८. देवी सिंह अशोक	"	
१२९. रामलाल लंकेश	"	
१३०. सुदामा प्रसाद अहरवार	"	
१३१. एस. आर. गौतम	"	
१३२. डॉ. ब्रजकिशोर	"	
१३३. मैकूलाल	"	
१३४. धर्म प्रकाश गौतम	"	
१३५. प्रेमचन्द आर्य	"	
१३६. जगत नारायण नाग	"	
१३७. सत्य प्रकाश गौतम	"	
१३८. रत्नाकर उपासक	"	
१३९. रत्नाकर बन्धु त्रिशरण	"	
१४०. इन्द्रदेव राम	"	
१४१. एस. आर. दारापुरी	"	
१४२. बिन्द्रा प्रसाद	"	

१४३. प्रो. आर. एन. चौधरी उत्तरप्रदेश
 १४४. डॉ. कुसुम मेघवाल उदयपुर राजस्थान
 १४५. डॉ. सोहनलाल सुमनाक्षर " "
 १४६. गुलाब चन्द वारासा जोधपुर "
 १४७. रमेश चन्द परमार गुजरात
 १४८. जेठालाल जाधव अहमदाबाद
 १४९. श्रीमती दमयन्ति देशभ्रतार नागपुर
 १५०. तेजिन्दर सिंह जल्ली, वामसेफ पंजाब

बौद्ध धर्म के साथ खुलेआम धोखाधड़ी—२६ सितम्बर, १९६० को कोठी मीना बाजार मैदान, आगरा में लाखों जाटवों को बौद्ध धर्म की दीक्षा दिलाने वाले श्री गुलाब सेहरा (पूर्व मंत्री) ने मई, ६१ में विधान सभा सीट के लिए शपथ-पत्र देते हुए आगरा पश्चिम (सुरक्षित), कांग्रेस आई से अपने को हरिजन बौद्ध (जाटव बौद्ध) कहकर ही टिकट प्राप्त कर सका है और उसका दूसरा साथी श्री वीरेन्द्र सोन (पूर्व विधायक) जिसने उसी विशाल दीक्षा समारोह में बौद्ध दीक्षा ग्रहण की थी ; टण्डला (सुरक्षित), फिरोजाबाद विधानसभा सीट के लालच में अपने शपथ-पत्र में कहा है कि "मैंने कभी बौद्ध धर्म ग्रहण नहीं किया है।" चुनाव में इन दोनों की जमानत भी जब्त हो गई।

धर्म की आड़ लेकर राजनीति का गन्दा खेल खेलने वाले इस प्रकार के धूर्तों और धोखेबाजों से कभी हमारे धर्म की सहायता की आशा की जा सकती है ? कभी नहीं। अतः इस प्रकार और भी असंख्य पाखण्डों नव-बौद्ध हमारे धर्म को बिगाड़ने में लगे हुए हैं। मेरी सलाह है कि ऐसे लोगों से सावधान रहने की जरूरत है। यक्का बौद्ध कभी-भी ऐसे मक्कारों और विश्वासघातियों की बातों में नहीं आ सकता ; इन्हें अवसर मिलते ही सबक सिखाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

इस प्रकार खोजने पर बहुत से ऐसे नाम मिल सकते हैं, जो इस सूची में शामिल नहीं हैं। महाराष्ट्र के प्रत्येक जिले में ऐसे

नेताओं के नाम अधिक संख्या में हो सकते हैं। सभी का यहाँ वर्णन करना सम्भव नहीं है। नमूने के तौर पर यह एक छोटी-सी सूची मात्र है। इनमें से बहुत से नेता, नेताओं के नाम पर अभिनेता हैं। परस्पर विरोधी कम्युनिस्ट एवं शिव सेना में भी ऐसे बहुत से नेता कहलाने वाले अपने स्वार्थ के लिए घुसे हुए हैं। यह संख्या हजारों से भी अधिक हो सकती है। मैंने सिर्फ दिग्दर्शन के तौर पर कुछ नाम जो मुख्य-मुख्य हैं, यहाँ उद्धरित करने की कोशिश की है। सम्भव हुआ तो अगले संस्करण में पूरी सूची देने की कोशिश करूँगा।

—लेखक

प्रश्न (२०) बाबासाहेब के तीन गुरु थे।

उत्तर—कुछ अज्ञानी लोगों का कहना है कि बाबासाहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के तीन गुरु थे। बुद्ध, कबीर और फूले। ऐसा कहना ठीक नहीं है। यह सही है कि जब बाबासाहेब हिन्दू थे, उस समय कबीर और फूले को गुरु माना होगा; किन्तु जब वह बौद्ध हो गये तो पूर्व हिन्दुओं के धर्म को भी त्याग दिया था। तब उन हिन्दू गुरुओं की आवश्यकता भी उसी समय समाप्त हो चुकी थी।

कबीर ने ईश्वर के निराकार होने और आत्मा को अजर-अमर और सत्य माना। यह दोनों सिद्धान्त बौद्धों को पूर्णतः अमान्य हैं। स्पष्ट है कोई भी कबीरपंथी बौद्धधर्मी नहीं कहलायगा। इसी प्रकार फूले भी ब्राह्मणवाद और पौराणिक दंत कथाओं को छोड़कर बाकी हिन्दू संस्कार तथा उसके निराकार परमात्मा में भी विश्वास रखते थे। अतः यह भी बौद्धों के लिए कोई काम की चीज नहीं है।

कबीर और फूले का सुधार कार्य हिन्दुओं के धर्म और समाज व्यवस्था पर था; बौद्ध धर्म और उसके समाज पर नहीं। कबीर और फूले के समय में भारत के मैदानी इलाकों में बौद्ध धर्म का नामो-निशान मिट गया था। कबीर और फूले के सुधार का बौद्धों से कोई सम्बन्ध नहीं है। इसलिए इन दोनों को बौद्धधर्मी अपना गुरु या मार्गदर्शक नहीं मान सकते।

सच्चा बौद्ध केवल तीन शरण बुद्ध, धम्म, संघ के अलावा किसी

की शरण में नहीं जा सकता। त्रिशरण के अतिरिक्त अन्य किसी की शरण में जाता है, तो उसको मिथ्या दृष्टि कहते हैं। बौद्ध विश्वास के अनुसार मिथ्या दृष्टि नरक पहुँचाने में सहायक होती है।

भगवान ने कहा है कि “पूजां च पूजनीयानं एतं मंगल मुत्तमं” अर्थात् जिसके पास पूरा सत्य हो यानि जिसने सत्य का साक्षात्कार किया हो। ऐसे सत्पुरुषों की पूजा करने से वह मंगल कार्य होता है, कहा है; किन्तु इस दृष्टि से देखने पर भी ठीक नहीं बैठता। कारण यह है कि संसार में ईश्वर, परमात्मा, परब्रह्म आदि को यह लोग सत्य मानेंगे, किन्तु बौद्धों की दृष्टि में यह सब मिथ्या और झूठ है; क्योंकि ईश्वर, परमात्मा, परमेश्वर आदि कुछ भी सत्य नहीं है। सत्य केवल संसार में चार ही हैं, जिसे सम्यक् सम्बुद्ध ने इस संसार को पहिली बार बताया है। जैसे—१. संसार दुःखमय है। २. दुःख का कारण तृष्णा है। ३. दुःख का निरोध हो सकता है। ४. दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा या उपाय। चार सत्य और आठ मार्ग ज्ञान हैं, जो इन तत्त्वों को जानेगा, वही सत्य का दर्शन किया हुआ व्यक्ति कहलायगा। ऐसे सत्यवादियों की पूजा करने के लिए ही भगवान ने मंगल सूत्र में आज्ञा दी है। मिथ्या दृष्टियों को मानने वालों के लिए नहीं।

अतः कबीर और फूले के हिन्दुवादी होने से उनका अनुसरण कोई भी पक्का बौद्ध नहीं कर सकता। इसलिए बाबासाहेब के पूर्व गुरु कबीर और फूले हमारे बौद्धों के लिए कोई काम के नहीं हैं। स्पष्ट है इन हिन्दू गुरुओं का अनुकरण करने का सवाल ही पैदा नहीं होता। इसके विपरीत जो अधर्मी भगवान बुद्ध के साथ इन दोनों का या अन्य किसी का चित्र रखते हैं, तो वे भगवान बुद्ध और उनके पवित्र धर्म के साथ घोर अन्याय करते हैं। इसे किसी भी प्रकार से उचित नहीं माना जा सकता।

जब ऐसे लोगों को बौद्ध धर्म की असलियत का पता चलेगा, तब वही लोग इसे अपने-आप ही छोड़ देंगे। उसके लिए एक दीर्घ-काल तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। अन्यथा इस समय उनसे (इन

अज्ञानियों से) बहस करना व्यर्थ है। इससे झगड़ा बढ़ने की सम्भावना अधिक है और इससे कोई लाभ भी नहीं होगा। इसलिए तत्काल इससे अलग ही रहना ठीक है। धर्म की जानकारी होते ही यह लोग स्वयं अपनी मूर्खता को पहचान लेंगे ! तब वे स्वयं इसे त्याग देंगे, हमें कहना ही नहीं पड़ेगा। उन दिनों तक हमें प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। इसके लिए कई पीढ़ी बीतनी होगी।

हम बौद्ध रोजाना पाठ करते हैं कि “नत्थिमे सरणं अञ्जं बुद्धो धम्मो संघो में सरणं वरं” इसका अर्थ क्या है ? सोचने की जरूरत है। इसका अर्थ यही है कि मुझे बुद्ध, धम्म और संघ के अतिरिक्त कोई शरण स्थान नहीं है। मैं त्रिरत्न के अतिरिक्त किसी की शरण में नहीं जाऊँगा। फिर क्या आवश्यकता है अबौद्धों की शरण जाने की ?

इन अबौद्धों को शरण में जाने का अर्थ तथागत भगवान बुद्ध के सच्चे धर्म को नहीं समझ सकना है। ऐसे लोग शुद्ध बौद्ध धर्म को बिगाड़ते हैं तथा संसार के परम्परागत बौद्धों के दिल को भारी दुःख पहुँचाते हैं। कोई भी सच्चा धार्मिक इसे सहन नहीं कर सकता। अतः इस बचकानेपन की हरकत को तत्काल बंद किया जाना चाहिए।

प्रश्न (२१) महिला मण्डल और पंचशील का झण्डा !

उत्तर—बहुत से नव-बौद्धों में धम्म के बारे में अज्ञानता के कारण एक और नया शब्द “महिला मण्डल” प्रचलित है। पालि त्रिपिटक में यह शब्द नहीं है। इसलिए ‘महिला मण्डल’ कहना बौद्ध महिलाओं के सम्बन्ध में ठीक नहीं है ; क्योंकि महिला—स्त्री, मण्डल—समूह। यह किसी भी जाति या धर्म की महिलाओं के लिए लागू होता है। जैसे—ईसाई, मुस्लिम, हिन्दू, यहूदी, पारसी, सिख जैन आदि सभी प्रकार की महिलाओं के बारे में महिला मण्डल शब्द का प्रयोग कर सकते हैं। लेकिन हम यह कैसे पहचानेंगे कि यह बौद्ध महिला मण्डल ही है ? इसलिए महिला मण्डल से पूर्व बौद्ध शब्द मिलाकर “बौद्ध महिला मण्डल” कहा जाय, तो भ्रान्ति

खतम हो जायगी या फिर "उपासिका संघ" कहें, तो अति उत्तम होगा। अन्यथा यह पहचानना मुश्किल होगा कि यह महिला मण्डल बौद्धों का है या किसी अन्य धर्मियों का। इस भ्रान्ति को समाप्त करने के लिए "उपासिका संघ" या "बौद्ध महिला मण्डल" कहना अत्यन्त आवश्यक है।

इसी प्रकार एक और भ्रान्त धारणा नव-बौद्धों में प्रचलित है कि "पंचशील का झण्डा।" पंचशील का कोई झण्डा नहीं होता। बौद्धों का एक ही झण्डा है "धम्म ध्वज" या "पंचरंगी ध्वज" उसमें पंचशील धारी, अष्टशील धारी, दशशील धारी तथा उपसम्बदाशील धारी शामिल हैं। इन सबको मिलाकर एक ही झण्डा है, जिसे धम्म ध्वज या पंचरंगी ध्वज कहा जाता है। इसे अज्ञानवश पंचशील का झण्डा कहकर सम्बोधित किया जाता है, जो पूर्णतः गलत है; क्योंकि अगर यह झण्डा पंचशील वालों का है, तो फिर अष्टशील (अनागारिक) दशशील (श्रामणेर) उपसम्पदाशील (भिक्षु) इन लोगों को भी अलग-अलग झण्डे की आवश्यकता पड़ेगी, किन्तु ऐसा नहीं है। एक ही झण्डा है।

अगर इस झण्डे को पंचशील का झण्डा कहकर उपासक और उपासिका लोग ले लेते हैं, तो अनागारिक, श्रामणेर एवं भिक्षुओं को बिना झण्डे वाला कहना पड़ेगा; क्योंकि यह झण्डा तो पंचशील वालों ने ले लिया, फिर अन्यो के लिए झण्डा कहाँ है। अतः पंचशील का झण्डा न कहकर "धम्म ध्वज" या पंचरंगी ध्वज कहना चाहिए। इस सारी गड़बड़ की जड़ अबौद्धों द्वारा बौद्ध धर्म ग्रहण करना है तथा सही मार्गदर्शक उनके बीच में न होना है और धम्म के प्रति लगन न होना भी एक मुख्य कारण है।

पिछले संस्कार पूरी तरह नष्ट हुए बिना नया संस्कार व्यवहार में लाना भारी मुश्किल है; जैसे—एक मोटर गाड़ी का रंग Paint चढ़ाने से पहिले पिछले रंग को घिसकर पूरी तरह साफ करता जरूरी होता है। अन्यथा नये और पुराने दोनों रंग उखड़कर गिर जायेंगे। इसी तरह पुराने मैले कण्डे को साफ करने के लिए ब्लीचिंग

पाउडर (कास्टिक सोडा) डालना जरूरी है, अन्यथा हजारों वर्षों का मैला भी साफ नहीं होगा। पुराना रंग पूरा साफ होने के बाद ही नया रंग ठीक से पकड़ कर सकता है। अन्यथा नहीं ?

इस प्रकार नव-बौद्धों के अन्दर से पिछला रंग निकलने में देरी लगना निश्चित है, तो धम्म के प्रचार में भी उतनी ही देर लग सकती है। अतः कई पीढ़ी के बाद ही भारत में बुद्ध धर्म के शुद्ध रूप की आशा कर सकते हैं, तत्काल नहीं ; क्योंकि धर्मान्तर के ३५ वर्ष के बाद भी ८०% हिन्दू या नास्तिक ही हैं और १८% अर्द्ध-बौद्ध हैं। बाकी २% ही अभी तक पक्के बौद्ध बन सके हैं। इसी से पता चल जायगा कि आगे धम्म का प्रचार इस समाज द्वारा कैसा होगा ? मेरे कथन से अगर कोई सहमत न हो, तो वह खोज द्वारा पता लगा सकते हैं।

धर्म परिवर्तन के लिए पाँच ही कारण हो सकते हैं। लोभ, भय, काम, चिढ़ और विवेक। डॉ. भीमराव अम्बेडकर न तो ईसाई एवं मुसलमानों के लालच में फँसे और न भय के कारण ही धर्म बदला। वर्षों तक विभिन्न धर्मों के व्यवहार पक्ष का गहराई से अध्ययन करने के बाद उन्होंने विवेक से चुने हुए विश्व के एकमात्र सर्वोत्कृष्ट बौद्ध धर्म को पूर्ण श्रद्धा के साथ स्वीकार किया था। तो फिर उस स्वीकृत धर्म के विषय में अज्ञानता के कारण यह नास्तिक उसका मजाक उड़ाने या अवहेलना करने की हिम्मत दिखाते हैं, यह एक सच्चे बौद्धधर्मी के लिए सहन करना मुश्किल ही नहीं असम्भव भी है। इसलिए ही यहाँ यह लिखना पड़ रहा है। यह हमारी मजबूरी है ; क्योंकि धम्म की रक्षा मेरे लिए सर्वोपरि सिद्धान्त है। धम्म-विरोध कोई भी करे, तो उसका उत्तर देना मेरा फर्ज है।

प्रश्न (२२) धम्म चक्र प्रवर्तन

उत्तर—डॉ. अम्बेडकर द्वारा नागपुर में १४-१०-१९५६ को दी गई दीक्षा को “धम्म चक्र प्रवर्तन” कहना अज्ञानता का परिचायक है। धम्म चक्र का प्रवर्तन भगवान् सम्यक् सम्बुद्ध द्वारा २५०० वर्ष पूर्व हो चुका था। इसलिए नये धम्म चक्र प्रवर्तन के लिए कोई भी

गुरुजाइण नहीं है। हाँ अनुवर्तन, आवर्तन, परिवर्तन आदि शब्दों का प्रयोग हो, तो ठीक है; क्योंकि बाबासाहेब ने नये धर्म का उपदेश या प्रवर्तन नहीं किया था। केवल पुराने बौद्ध धर्म को ही उसी प्रकार उसी रूप में श्रद्धा से स्वीकार किया था। फिर प्रवर्तन का सवाल ही पैदा नहीं होता। प्रवर्तन का अर्थ 'गुरुआत' होता है। बौद्ध धर्म की गुरुआत २५०० वर्ष पूर्व हुई थी।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने भारत के मैदानी इलाकों में धम्म चक्र का पुनः प्रवर्तन अवश्य किया था। उसको प्रवर्तन (गुरुआत) के अर्थ में नहीं लिया जा सकता; क्योंकि बुद्ध धर्म का प्रवर्तन किसी अम्बेडकर ने नहीं किया था। वह तो पृथ्वी में पहिली बार भगवान परम कारुणिक तथागत सम्यक् सम्बुद्ध द्वारा इसिपतन मृगदाव (सारनाथ) में किया था जो मानवता के लिए अत्यन्त उपयोगी और आदर्शपूर्ण साबित हुआ है और आज भी विश्व-विजयी राजधर्म के रूप में एशिया के अनेक देशों में बहुमत के साथ जीवित है; जैसे—श्रीलंका, बर्मा, थाईलैण्ड, कम्बोडिया, लाओस, वियतनाम, कोरिया, ताईवान, चीन, जापान, मंगोल, भूटान, तिब्बत आदि देश हजारों वर्षों से आज तक सम्पूर्ण रूप से बौद्धधर्मी हैं। यह किसी अम्बेडकर के द्वारा चलाया हुआ बौद्ध धर्म नहीं था।

इसके अलावा बंगाल देश, नेपाल, भारत, मलाया, इण्डोनेशिया, सिंगापुर, हांगकांग और वाली द्वीप में भी बौद्धों की अच्छी संख्या है। भारत को पर्वतीय परम्परा—लद्दाख, हिमाचल प्रदेश के लाहुल स्पिति, किन्नौर में; सिक्किम, अरुणाचल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मणिपुर, मिजोरम तथा पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग, कलिम्फोंग आदि क्षेत्रों में भी प्राचीन बौद्ध धर्म प्रचुर मात्रा में आज भी जीवित है।

अतः नव-दीक्षित बौद्धों की धर्म दीक्षा को "धर्म चक्र प्रवर्तन" की संज्ञा देना बौद्ध धर्म के प्रति अज्ञानता का परिचायक है। इस प्रकार के मूढ़ विश्वास को शीघ्रातिशीघ्र समाप्त किया जाना चाहिए धर्म चक्र प्रवर्तन एक ही बार होता है, बार-बार नहीं। बौद्ध धर्म

का प्रवर्तन २५०० वर्ष पूर्व हुआ था । इसलिए नये 'धर्म चक्र प्रवर्तन' की कोई आवश्यकता ही नहीं है ।

हाँ ! जैसे ऊपर कहा है—अनुवर्तन, परिवर्तन, आवर्तन कहें, तो ठीक होगा । प्रवर्तन कभी नहीं कहना चाहिए । अगर ऐसा कहा गया तो यह भगवान बुद्ध का अपमान होगा । कोई भी सच्चा बौद्ध दो बार धर्म चक्र प्रवर्तन की कल्पना भी नहीं कर सकता ।

महायानियों और तन्त्रयानियों का दावा है कि बुद्ध ने तीन बार धर्म चक्र प्रवर्तन किया था । पहिली बार सारनाथ में (थेरवादियों के लिए), दूसरी बार महायान (महायानियों के लिए), तीसरी बार तन्त्रयान (मन्त्रयान, तज्जयान आदि) । पहला पंचवर्गीय भिक्षुओं को, दूसरा राजग्रह में महाकश्यप को, तीसरा श्रीगैल में मंजूश्री को ।

वास्तविक सत्य यह है प्रथम धम्म चक्र प्रवर्तन ही ऐतिहासिक है, बाकी दोनों कपोल-कल्पनामात्र हैं । झूठ हैं, सत्य नहीं हैं । अगर अम्बेडकरवादी भी धम्म चक्र प्रवर्तन का दावा करता है तो यह चौथा धम्म चक्र प्रवर्तन होगा किन्तु थेरवादियों के लिए यह कभी भी मान्य नहीं होगा; क्योंकि वे सिर्फ एक ही बार 'धर्म चक्र प्रवर्तन' में विश्वास करते हैं ।

एक नास्तिक ने मुझसे एक बार कहा था कि "मैं अम्बेडकर प्रणीत बौद्ध धर्म को सुनना चाहता हूँ, जानना चाहता हूँ, मैंने उसे उत्तर दिया कि मैं नहीं जानता कि वह कौन-सा बौद्ध धर्म है, जो अम्बेडकर ने प्रणीत (तैयार) किया था । जहाँ तक मुझे जानकारी है कि बाबासाहेब ने कोई नया धर्म या धम्म को तैयार नहीं किया था । प्राचीन भारत के विशुद्ध बौद्ध धर्म को ही उसी रूप में प्रस्तुत किया है, जैसा २५०० वर्षों से "चतुरासीति सहस्र धम्म स्कन्ध" के रूप में पालि में सुरक्षित है ।

अतः नये धर्म का राग अलापना व्यर्थ है । यह मूर्खता, मस्करी एवं वकवास है । यह बाबासाहेब के धम्म के प्रति श्रद्धा, विश्वास एवं अनुभव को नकारना है । धर्म में सन्देह या संशय के लिए कोई स्थान नहीं है । निस्संशय, अटल और दृढ़ विश्वास से ही धर्मों की उन्नति होती है, सन्देह या तर्क से नहीं ।

समाप्त

ग्रन्थ के आर्थिक सहयोगदाता

१. पूज्य भन्ते शासनरश्मि महास्थविर, विहाराधीश, थाई बुद्ध विहार सारनाथ, वाराणसी-७ ५००/-
२. पूज्य भन्ते एन. आनन्द थेरो, महेन्द्र विहार उल्लास नगर, जिला-ठाणे-४ (महाराष्ट्र) १००/-
३. पूज्य भन्ते शीलरत्न थेरो, महामाया बुद्ध विहार, सिद्धार्थ नगर लखीमपुर खीरी-१ (उ. प्र.) १००/-
४. आयस्मा भिक्षु एस. टी. आनन्द, महाबोधि मन्दिर, बुद्ध गया, जिला-गया, बिहार-३३ १०१/-
५. आयस्मा भिक्षु सद्धातिस्स, राजगिर बुद्ध विहार सहकार नगर-५, शेल कालोनी रोड, चेम्बुर, मुम्बई-७१ १२४/-
६. आयस्मा भिक्षु गौतम कीर्ति, प्रव्रज्या बुद्ध विहार, पंच-शील वार्ड, सूर्य नगर, विक्रोली पश्चिम, मुम्बई-८३ १००/-
७. श्रामणेर शान्तिदेव नेगी, ग्राम पूर्वनो, तालुक-कल्पा, जिला-किन्नौर (हि. प्र.) १५०/-
८. दिवंगत उपासिका कुमारी पुष्पा श्रीरंग खरात की स्मृति में एस. आर. खरात, १२७-४२०१ नेहरू नगर, कुर्ला पूर्व मुम्बई-२४ ५००/-
९. उपासक आर. आर. खरात (पूर्व श्रामणेर कौण्डिन्य) अशोक नगर, ए. सी. सी. रोड, मुलुण्ड पश्चिम, मुम्बई-८० २५०/-
१०. उपासक एच. सी. बाल सराफ (पूर्व श्रामणेर सारिपुत्त) २८०-२२१६ मोतीलाल नगर-१, गोरे गाँव पश्चिम, मुम्बई-१०४ २००/-
११. उपासिका चन्द्र भागा केशव गरुड़, सिलम कालोनी, पन्त नगर, घाटकोपर पूर्व, मुम्बई-७५ २००/-
१२. उपासिका उषा पाण्डुरंग सरदार, लुम्बिनी कुटी, साई १०६

- कल्याण को. आ. हा. सोसाइटी, शिवाजी कालोनी,
तिस्सगाँव, कल्याण पूर्व, ठाणे-६ (महाराष्ट्र) २०१/-
१३. उपासक वी. जी. रणडिवे (पूर्व श्रामणेर भट्टीय) अध्यक्ष-
कामगार सभा मानसिक आरोग्य संस्था, महाराष्ट्र
शासन, ठाणे (महाराष्ट्र) १२०/-
१४. उपासक अरुण संभाजी पवार, महात्मा गांधी स्मृति
बसाहत सी. वार्ड, जेरभाई वाडिया रोड, बोईवाड़ा,
परेल, मुम्बई-१२ १११/-
१५. उपासक आर. डी. रोकडे (पूर्व श्रामणेर वप्प), गाँव-
कर्जुले हरिया, तालुक-पारनेर, जिला-अहमद नगर(महा) १००/-
१६. उपासक अशोक बाबूराव कसबे (पूर्व श्रामणेर अश्वजित)
पोस्ट पोखरी, तालुक-पारनेर, जिला अहमद नगर
(महाराष्ट्र) १००/-
१७. उपासक मनोहर गायकवाड़, आम्रपाली इन्टरप्राईजेज,
४७२/१/१, ग्रुप न. १, लाल ढोंगर, विश्व गौतम नगर,
चेम्बुर मुम्बई-७१ १००/-
१८. दिवंगत उपासिका मजलस बाई मनोहर गायकवाड़,
विश्व गौतम नगर, शीव ट्राम्बे रोड, लाल ढोंगर, चेम्बुर
मुम्बई-७१ १००/-
१९. उपासिका कुमारी अरुणा मनोहर गायकवाड़, विश्व
गौतम नगर, शीव ट्राम्बे रोड, लाल ढोंगर, चेम्बुर,
मुम्बई-७१ १००/-
२०. उपासिका रंभाबाई भानुदास काम्बले, मु. पो. पट्टी
बढ़गाँव, ता.अम्बेजोगाई, जिला-बीड (महाराष्ट्र) १००/-
२१. उपासक रमेश काले, महाराष्ट्र चाल कमेटी, एल. बी.
एस. मार्ग, खाड़ी मस्जिद के पास, कुर्ला पश्चिम, मुम्बई १००/-
२२. उपासक भीमराव एल. शिंदे, अध्यक्ष-बहुजन हिताय
सेवा मण्डल, अशोक नगर, वासी नाका, चेम्बुर
मुम्बई-७४ १००/-

२३. दिवंगत गोपाल खेलुजी गागुर्डे की स्मृति में मुकुन्द गोपाल राव गागुर्डे, जी. २४ रुम न. ८, माटुंगा लेवर कैम्प, मुम्बई-१६ १०१/-
२४. उपासक गंगाराय भान मगर, जी १/३ माटुंगा लेवर कैम्प मुम्बई-१६ १००/-
२५. दिवंगत सदाशिव कृष्णाजी म्हस्के की स्मृति में, के. एल. म्हस्के (पूर्व श्रामणेर देवानन्द) मु. पो. अमरापुर, ता. शेवगांव. जि. अहमद नगर (महाराष्ट्र) १००/-
२६. उपासक शिवाजी एन. देठे, सी ५/१६/०२, ए. सी. बी. डी. कालोनी, नया बम्बई (महाराष्ट्र) १००/-
२७. उपासक राजेश जाधव, सी./५/१३/११, ए. सी. बी. डी कालोनी, नया बम्बई, १००/-
२८. उपासक दादा साहेब महार राव काकडे (निवृत्त सहायक पुलिस उपनिरीक्षक) मु. पो. आदर्की बुद्रुक, ता. पलटन, जिला सतारा (महाराष्ट्र) १००/-
२९. उपासक कोण्डीराम भागूजी शिंदे, मु. पो. एरण्डोली, ता. श्री गोंदा, अहमद नगर (महाराष्ट्र) १००/-
३०. उपासक बी. एफ. केदारे, टाइप-२, बिल्डिंग न.३ रुम न. ५६, आर. सी. एफ. कालोनी, चेम्बुर, मुम्बई-७ १००/-
३१. उपासक श्रीधर गोपाल जाधव (निवृत्त सहायक पुलिस उपनिरीक्षक) अर्चना प्लेट न. २३, जे. एल. ताम्बे नगर, मुलण्ड पश्चिम, मुम्बई-८० १००/-
३२. उपासक राम कृपाल गौतम, १८/४६२ त्रिलोक पुरी, दिल्ली-६१ १००/-
३३. सेठ श्री प्यारे लाल दौलत राम सोन, ५४/१८ देवनगर, आगरा-१ १००/-
३४. उपासक भंवर सिंह, ३५/४७ नगला भवानी सिंह, आगरा-१ १००/-

३५. सेठ सुन्दर लाल हरित, पुत्र श्री सीता राम हरित, ५१-
७२ बाराखम्बा, आगरा

१००/-

३६. कैलाश नाथ बौद्ध, पुत्र छट्टनलाल दुबे, बी-४०, अयोध्या
कुंज, खेरिया रोड, बाराखम्बा, आगरा

१००/-

नोट—आर्थिक सहयोगदाताओं को सूचित किया जाता है कि
ऊपर के पते और नामों के आधार पर गलत भिक्षु या उपासकों
द्वारा किसी भी प्रकार का बहाना बनाकर धन ऐंठने की कोशिश
करें तो हमसे परामर्श अवश्य कर लें, अन्यथा हमारा प्रकाशन
उत्तरदायी नहीं होगा। पिछले १० वर्षों के अनुभव से अनेक घटनाएँ
सामने आने के बाद ही इस प्रकार की टिप्पणी जोड़ने के लिए बाध्य
होना पड़ा है। (प्रकाशक—सारिपुत्त प्रकाशन, बम्बई)

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	१६	मुख	मूर्ख
७	२०	व्यायेन	न्यायेन
१४	२४	सन्यसी	सन्यासी
३१	१७	क्षत्र	क्षेत्र
५५	२७	कृतः	कुतः
७५	१६	बुद्ध	धर्म
८४	६	जिससे	जिसने
९५	२८	निलकर	निर्लेकर

विश्वासघाती चीवरधारी !

बड़े खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि गृहस्थ लोग तो फँसाते हैं, तो बात कुछ समझ में आती है ; किन्तु चीवरधारी होकर चार सौ बीसी का धन्धा बहुत शर्म की बात है । अम्बेडकर का नाम अलापने वाले यह चीवरधारी धूर्त लोग आखिर बुद्ध शासन को कहाँ पहुँचायेंगे ? यह सोचकर बहुत दुःख होता है । विश्वासघाती यह चीवरधारी लोग हमारे प्रकाशन की पुस्तकें ले जाकर बेचकर खा गये, किन्तु यह निर्लज्ज लोग प्रेस को देने के लिए पैसा चुकाने का नाम नहीं ले रहे हैं और इसी कारण हमारे प्रकाशन का कार्य आगे रुका हुआ है ।

एक कहावत है कि “हंडियाँ टूट गई, किन्तु कुत्ते का तो पता चल गया कि किस कुत्ते ने हंडियाँ फोड़ी हैं” इस कहावत के अनुसार बेईमान चीवरधारियों का पता तो पाठकों को लग ही जायगा । इस उद्देश्य से यह टिप्पणी यहाँ जोड़ने के लिए बाध्य हुआ हूँ । सारि-पुत्त प्रकाशन के पाठक उत्तर और पूर्वी भारत के ८ प्रान्तों के अलावा नेपाल में भी बौद्ध लोग हमारा साहित्य पढ़ते हैं । इसलिए धोखेबाजों के नाम दे रहा हूँ—

१. भिक्षु धम्म विवेचन उर्फ धर्मानन्द, c/o विशुद्धानन्द महास्थविर बुद्ध विहार, के एण्ड जे ब्लाक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-६२ ने २८-३-१९८६ को सारनाथ से ५३३ रुपये मूल्य की पुस्तक बेचने को ले गये थे । अभी तक एक-भी पैसा नहीं दिया है ।

२. भिक्षु विशुद्धानन्द महास्थविर, बुद्ध विहार, जे & के ब्लाक लक्ष्मी नगर, दिल्ली-६२ पर कमीशन काटकर १३० रुपये बाकी हैं यह भी २८-३-१९८६ के हैं ।

३. भिक्षु महाकश्यप, वैशाली संघाराम, मुकाम पोस्ट-मन्नाकेली तालुक-हुमनाबाद, जिला-बीदर (कर्नाटक) १८-४-१९६० को सार-

नाथ से ४४५ रुपये मूल्य की पुस्तकें ले गये थे ; किन्तु अब तक एक-भी पैसा नहीं चुकाया है ।

४. भिक्षु उपगुप्त, बुद्ध विहार पूर्ण जक्शन, जिला परभणी (महाराष्ट्र) १८-७-१९६० को बम्बई से ८६० रुपये मूल्य की पुस्तकें बेचने ले गये थे ; एक महिने में पैसा देने का वादा करके । लेकिन एक वर्ष बीत जाने के बाद भी पैसा देने का नाम नहीं ले रहे हैं ।

५. गीतम सिंह मास्टर, छेदी लाल बालिका विद्यालय, ३/२५ रुई की मण्डी आगरा ने यहीं से १२-१०-६० को ५०० रु. मूल्य की पुस्तकें प्राप्त की थीं, अब तक एक-भा. पैसा नहीं दिया है । और भी १०० रुपयों के नीचे की संख्या के बहुत-से लोग हैं ; सूची व्यर्थ में लम्बी होने के कारण छोड़ देता हूँ ।

(प्रकाशक— सारिपुत्त प्रकाशन)

लेखक के अन्य ग्रन्थ

१. बुद्ध विश्व विजय—द्वितीय संस्करण ; यह एक ऐतिहासिक शोध प्रबन्ध है, बुद्ध काल से आज तक वैदिकों के सारे आरोपों का उत्तर इस पुस्तक में दिया गया है। विश्व में बौद्ध धर्म कैसे फैला, बाद में क्या हुआ, अब वहाँ क्या स्थिति है। आदि विषयों का प्रमाणिक संग्रह एवं ऐतिहासिक विश्लेषण है। इसके अलावा भारत के बौद्ध तीर्थों का विवरण भी इस पुस्तक में संग्रहीत है। बौद्धों को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए। विश्व में २०० करोड़ बौद्धों की सूची इसमें मिल जायगी। पृष्ठ संख्या २६०, मूल्य ३५ रुपये।

२. वैदिक मत का मुख मर्दन—‘तीसरा संस्करण प्रेस में’ ब्रह्मवादियों द्वारा “बौद्ध मत का भण्डाफोड़” नामक गन्दो पुस्तक लिखी गयी थी ; उसका मुंहतोड़ उत्तर इस पुस्तक में दिया गया है। पृष्ठ १६५, मूल्य ५५ रुपये।

३. बौद्ध शून्य योग—शून्यवाद की आधुनिक व्याख्या है। १२०२ में नालन्दा के पतन के बाद इस विषय में यह प्रथम प्रयास है। यह संस्कृत मूल और हिन्दी अनुवाद सहित प्रस्तुत है। पृष्ठ ११६, मूल्य १० रुपये ‘द्वितीय संस्करण’।

४. बोधि दर्शन सूत्र—यह बौद्ध धर्म का निचोड़ है। पालि-त्रिपिटक से छोटे-बड़े ८० लेखों का प्रमाणिक संग्रह है। प्रथम संस्करण पृष्ठ १६०, मूल्य १८ रुपये।

५. बुद्धिवाद प्रदीप—वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सभी का खण्डन करके बुद्ध धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध की गई है। इसमें छोटे-बड़े ४१ लेख हैं। प्रथम संस्करण पृष्ठ संख्या १०८, मूल्य ८ रुपये।

६. तथागत भक्ति स्रोत—भगवान तथागत बुद्ध के योगक्षेम स्वरूप को अति उत्तम भक्ति के साथ इस पुस्तक में चित्रित किया गया है और “भगवान बुद्ध के १३० नाम” प्रथम बार बौद्ध जगत में इसमें देखने को मिलेंगे। द्वितीय संस्करण पृष्ठ ४४, मूल्य ५ रुपये।

प्राप्ति स्थान—भिक्षु निर्गुणानन्द थेरो

सारिपुत्त प्रकाशन, अशोक नगर,

वासीनाका, चेम्बुर, बम्बई-४०००७४

सारिपुत्त प्रकाशन के संस्थापक, लेखक तथा प्रकाशक
भिक्षु निर्गुणानन्द धरो, बम्बई, भारत अहिंस्यो भाषी है



लेखक—भिक्षु निर्गुणानन्द धरो

प्रकाशित पुस्तकें—

- (१) बुद्ध विश्व विजय
- (२) वैदिक मत का मुख-मर्दन
- (३) बौद्ध शून्य योग
- (४) बुद्धिवाद प्रदीप
- (५) बोधि दर्शन सूत्र
- (६) तथागत भक्ति स्त्रोत
- (७) नास्तिक मुख-मुद्रण

हमारे पाठकों को सारिपुत्त प्रकाशन, बम्बई की ओर से हार्दिक
शुभेच्छा !

मुद्रक : प्रकाश मुद्रणालय,
नौबस्ता, आगरा २

महा माया भगवता अरुणा सत्या सन्तुष्टम्

नास्तिक मुख-मुद्रण

पालि त्रिपिटक और भिक्षुओं का महाक उद्घानि वाये
नास्तिकों का धर्म-मार्ग उत्तर



लेखक— भिक्षु निर्गुणानन्द थेरो